Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काका हाथरसी

काका के प्रहसन

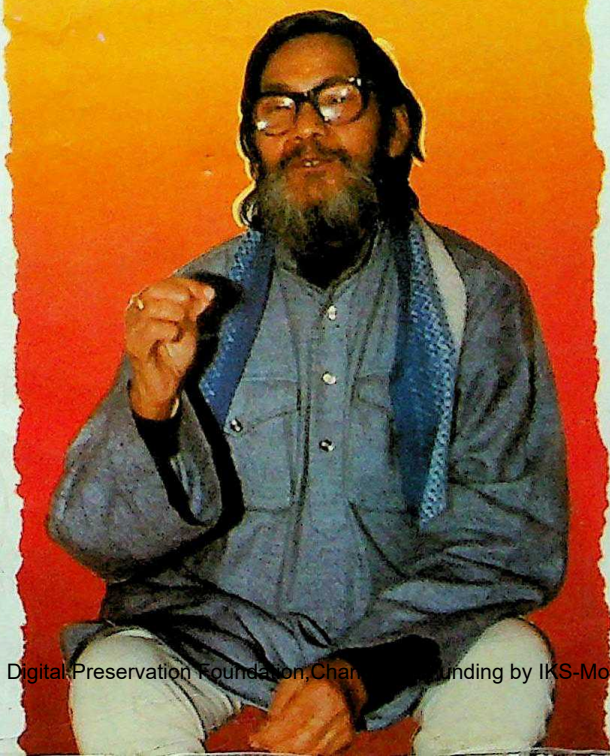

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chan... Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डायमंड पाकेट बुक्स में

हास्य व्यंग्य की नवीनतम कृतियां

हास्य कविता सीरीज

1990 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	12.00
1989 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	12.00
1988 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	10.00
1986 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	6.00
1985 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	6.00
1984 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	6.00
हुल्लड़ के ठहाके	5.00
हुल्लड़ मुरादाबादी की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	5.00
चकबस्त की फुलझड़ियां	5.00
पटाखे ही पटाखे	6.00

अशोक चक्रधर

अशोक चक्रधर के चुटपटकुले	12.00
अशोक चक्रधर का तमाशा	12.00
भांते भांते अशोक चक्रधर	5.00

काका हाथरसी

काका की महफिल	12.00
हंसी के गब्बारे	10.00
काका की फुलझड़ियां	12.00
काका की जीवनी	6.00
काका हाथरसी की लोक शोक	12.00
पोटी-पोटी हसाइयां	12.00
काका की विभिन्न रचनायें	6.00
काका के कारनामे	12.00
काका का दरबार	12.00
हसते अनार	5.00
बाप बीमो बेटमान की	5.00
यार सपाटा	10.00

उर्दू हिन्दी शायरी सीरिज

दीवाने गालिब	15.00
पवाज उडान की गजलें	12.00
लबुन कलीजा के भजन और गजलें	12.00
गुलाम अली की गजलें	10.00
कलीज चिश्ता की गजलें	6.00
मेहदी हसन की गजलें	12.00
उर्दू की आधुनिक गजलें	12.00
हिंदी की सर्वश्रेष्ठ गजलें	6.00
उर्दू के उस्ताद शायरों की गजलें	10.00
उर्दू के बेहतरीन शेर (शराब और शबाब)	10.00
उर्दू की बेहतरीन नज्में	12.00
उर्दू की बेहतरीन रुबाइयां	5.00
हिंदी रुबाइयां और मुक्तक	5.00
तुमसे मेरी कसम	6.00
सन्नाटे में गूंज	6.00
आजादी के तराने	10.00

जोक्स सीरीज

लेडीज राय की मुकम्मल	12.00
पार्टी जोक्स	10.00
रोमांचिकारी के लतीफे	12.00
टीचर जोक्स	10.00
हुल्लड़ के जोक्स	5.00
पति पत्नी के जोक्स	10.00
साहसी जोक्स	10.00
मिलती जोक्स	10.00
मिसाइल जोक्स	10.00
चुटकुले ही चुटकुले	10.00
[illegible]	12.00

स्वेट मार्डन की पुस्तकें

आगे बढ़ो	12.00
सफलता के सोपान	12.00
चिंता छोड़ो सुख से जियो	12.00
हंसते-हंसते जीना सिखो	12.00
आप क्या नहीं कर सकते	12.00
सफलता का रहस्य	12.00

कुछ और उपयोगी पुस्तकें

जातक कथाएं-I	10.00
जातक कथाएं-II	10.00
संक्षिप्त दिशा साधना और सिद्धि	10.00
डायमंड हिन्दी व्याकरण कोश	15.00
30 दिन में अंग्रेजी शिक्षा	12.00
हिन्दी इंग्लिश बोलचाल	12.00
हिन्दी इंग्लिश टीचर	12.00
डायमंड ग्लोबल एटलस	12.00
सार्थक और सखी भुट्टपने की ओर	10.00
परंपु भागवती	6.00
अंगुल बाली	12.00
फास्ट एड	6.00
पंचतंत्र	12.00
विक्रमादित्य	12.00
विक्रमादित्य	12.00
कौवा और बटवार से कैसे बचें	10.00
शराब, सिगरेट, बीड़ी कैसे छोड़ें	6.00
प्रभाकर	12.00
पहेलियां ही पहेलियां	12.00
विज्ञानमन बालिनी	12.00
चाय और कॉफी की लतकारें	10.00
सुमन संचय	10.00
आजादी के गाने	10.00
स्वामी समर्थ रामदासजीवन	25.00

डायमंड पाकेट बुक्स प्रा.लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

Digitized by eGangotri Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

D-1822

काका के प्रहसन

काका की कविताएं सैकड़ों
श्रोताओं को हंसा चुकी हैं;
हजारों-लाखों पाठकों को
बहला चुकी हैं।
न केवल उनकी कविताएं मंचतोड़ हैं,
बल्कि उनके प्रहसन भी बेजोड़ हैं,
जो कि रंगमंच पर खेले जा चुके हैं,
और कुछ तो आकाशवाणी पर
भी आ चुके हैं।
यहाँ उनके दस प्रहसन
दिये जा रहे हैं
जो कि आपके सामने आ रहे हैं।
पढ़िए 'काका के प्रहसन' !
दूर हो जाएंगे सब दुर्व्यसन!

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डायमंड पाकेट बुक्स में हास्यरस की अनुपम पुस्तकें

काका हाथरसी
काका काकी के लव लैटर
काका तरंग
काका के प्रहसन
काका की महफिल
काका की फुलझड़ियां
काका की चौपाल
काका-काकी की नोंक-झोंक
काका की विशिष्ट रचनाएं
काका का दरबार
हंसी के गुब्बारे
हंसत बसंत
मीठी-मीठी हंसाइयां
जय बोलो बेईमान की
यार सप्तक

अशोक चक्रधर
तमाशा
अशोक चक्रधर के चुटपुटकुले
भोले-भाले

जोक्स सीरीज
तेनालीराम की सूझबूझ
शेखचिल्ली के लतीफे
अकबर बीरबर विनोद
पार्टी जोक्स
टॉप जोक्स
पति पत्नी के जोक्स
माडर्न जोक्स
फिल्मी जोक्स

चुटकुले ही चुटकुले
प्रेमी प्रेमिकाओं के जोक्स
चटपटे जोक्स
पार्टी जोक्स
बच्चों के जोक्स
बड़े आदमियों के जोक्स
अकबर बीरबल के जोक्स
चुने हुए जोक्स
हास परिहास

हास्य कविता

(डा॰ गिरिराजशरण अग्रवाल)
1990 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं
1989 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं
1988 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं
1987 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं
1986 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं
1985 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं
1984 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काका हाथरसी

चोचले के बच्चे

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

© काका हाथरसी

प्रकाशक :

डायमण्ड पाकेट बुक्स (प्रा०) लि०,
(मोती महल के पीछे)
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

वितरक :

पंजाबी पुस्तक भण्डार
दरीबा कलां, दिल्ली-110006

प्रकाशन वर्ष : 1991
मूल्य : बारह रुपये

मुद्रक : हिंदुस्तान ऑफसैट प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-110032

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काका-कथन

हास्यरस की कविताएं लिखने से पूर्व जब सामाजिक नाटकों में हम हास्य अभिनय किया करते थे, तब से ही प्रहसन लिखने की धुन सवार हो गई थी। आरम्भ में श्री अग्रसेन जयन्ती महोत्सव पर स्टेज करने के लिए छोटे-छोटे एकांकी लिखे, जो स्वतन्त्र रूप से उसी समय प्रकाशित भी हो गए। इसके पश्चात् आकाशवाणी के लिए कुछ रूपक एवं प्रहसन लिखे गए और फिर होली के अवसर पर हास्य-सम्मेलन में खेलने के लिए प्रतिवर्ष एक-दो नये प्रहसन लिखने का क्रम जारी रहा।

एक दिन योंही अपनी ड्रामा फाइल देखने बैठ गए तो सोचने लगे क्यों न इनमें से कुछ ऐसे प्रहसन प्रकाशित करा दिए जाएं जो सफलतापूर्वक अभिनीत हो चुके हैं और तालियों की गड़गड़ाहट के बीच श्रोताओं से वाहवाही प्राप्त कर चुके हैं। इसी विचार-धारा के अनुसार कुछ प्रहसन चुन लिए गए जो इस पुस्तक के रूप में आपके सामने प्रस्तुत हैं।

कुछ प्रहसनों को छोड़कर शेष सभी प्रहसनों में खड़ी बोली के साथ-साथ कुछ पात्रों द्वारा ब्रजभाषा में भी बातचीत कराई गई है। इससे पाठकों या अभिनेताओं को किसी प्रकार की अड़चन होने का भय नहीं है, क्योंकि प्रादेशिक भाषाओं में जैसे हिन्दी भाषा सबसे सरल और सुबोध है, उसी प्रकार क्षेत्रीय भाषाओं में ब्रजभाषा का जवाब नहीं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति, जो हिन्दी समझ सकता है, ब्रज-भाषा को भी आसानी से हृदयंगम कर सकेगा। इसमें जो सरलता, माधुर्य और भोलापन है वह अन्य भाषाओं में कहा? ब्रजभाषा की महत्ता पर एक छंद है :

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुलसी के कान्न में पर्‌यौ है तिहारौ यश,
सूर, रसखान, रस-खान सौ सजायौ है।
भर-भर मिठास खास मिसरी सौ, माखन सौ,
घोर घनसार सो सुवास झरकायौ है।
गोपी-गोप, ग्वाल-बाल, व्यास, शुकदेव, आदि,
बांधि-बांधि टोलि तोहि सीस पै चढ़ायौ है।
धन्य ब्रज भाषा तोसी दोसरी न भाषा,
तैंने बानी के बिधाता कों बोलिबौ सिखायौ है।

ब्रजभाषा का भी कोई एक रूप निश्चित नहीं। दूर की बात जाने दीजिए, मथुरा से दस-बारह मील इधर-उधर जाने पर ही आपको ब्रजभाषा में किंचित् परिवर्तन दिखाई देने लगेंगे। इसी आधार पर यह भी कहा जा सकता है कि प्रस्तुत प्रहसनों में जहां-जहां ब्रजभाषा का प्रयोग किया गया है उसे हम हाथरसी ब्रजभाषा कहेंगे। इसका भी एक कारण है, सर्वप्रथम ये सभी प्रहसन विशेष रूप से हाथरस तथा उसके आसपास खेलने के लिए ही लिखे गए और लेखक भी मूल रूप से हाथरसी है अतः ऐसा होना स्वाभाविक ही था।

इतना सब होते हुए भी अपनी यह ज़िद या आग्रह नहीं कि ब्रज-भाषा वाले पात्रों की बोलचाल सभी क्षेत्रों में ज्यों की त्यों रक्खी जाए। जहां कहीं इसमें तनिक भी कठिनाई हो अथवा ब्रजभाषा का ठीक से उच्चारण करनेवाले पात्र न मिल सकें वहां अपनी क्षेत्रीय या ग्रामीण भाषा में उन सवादों का अनुवाद करके काम चलाया जा सकता है। इसमें यदि कोई अड़चन उपस्थित हो तो लेखक से पत्र-व्यवहार करके उसे भी दूर किया जा सकता है।

संगीत कार्यालय
हाथरस (उ० प्र०)
(गंगा सप्तमी, २०२० विक्रम)

—काका हाथरसी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रम

भंग की तरंग	...	९
चुनाव का टट्टू	...	१८
हमीर का हलवा	...	३१
मनसुखा-लीला	...	४६
लल्ला कौ ब्याह	...	५७
फ्री स्टाइल गवाही	...	७४
माखन-चोरी	...	८७
लाला डकारचन्द	...	९२
मनसुखा की ब्रज-यात्रा	...	११५
भूला कौ झटका	...	१२६

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

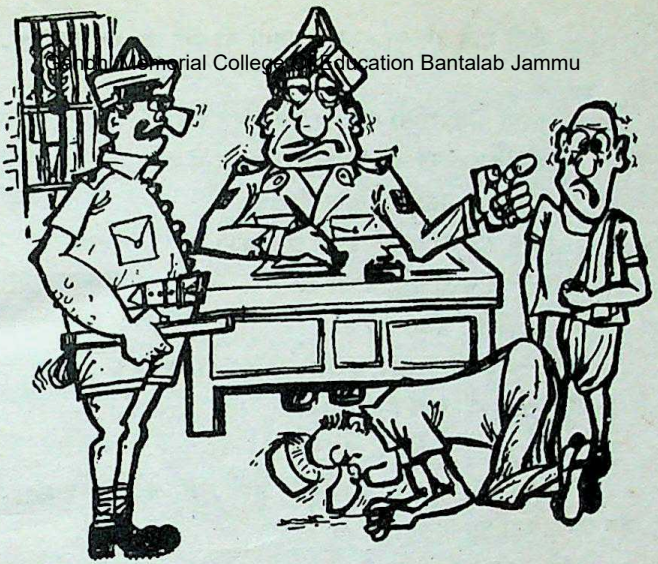

भंग की तरंग

पात्र :

छन्नू पंडा—एक अक्खड़ भगड़ी

सत्तो गुरू—छन्नू पंडा का साथी भगड़ी

गौरी—छन्नू पंडा की पत्नी।

डाक्टर शर्मा—एलोपैथिक डाक्टर

दीवानजी, कोतवाल तथा सिपाही

पहला दृश्य

[छन्नू पंडा का घर]

(छन्नू पंडा तथा सत्तो गुरू भंग छानकर भोग लगा रहे हैं)

बमबम अघड़घत्ता, फूंक दिया कलकत्ता,
लग जाय गुरू का हत्ता, बाकी बचे न पत्ता।
हरि ओ३म् शंकर, कांटा लगे न कंकर,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

ऐसी आवे हरिगुन गावे, भिनगा की पीठ पर बघर्रा नजर
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
आवे।

साधों पीवें, सन्तों पीवें—पीवें कुंवर कन्हैया,
जो विजया की करे निन्दा, उसको खायं ततैया।
लेना हो, दाऊदयाल ब्रज के राजा,
भांग पीवे तो छन्नू पंडा के घर आजा।

पंडा—लो सत्तो गुरू, डालो घट में।

सत्तो—पिओ पंडाजी !

पंडा—अरे लो उस्ताद, बगीची को देर हो रही है।

सत्तो—अच्छी बात है तो लाओ।

(दोनों भंग पीते हैं)

पंडा—(डकार लेकर) ओ३म् ! सत्तो गुरू, कल शाम की भंग ने तो बड़ा रंग दिखाया।

सत्तो—कैसा ?

पंडा—नशे-पत्ते में क्या देखते हैं कि चीन को फतह करके हम हवाई जहाज़ में बैठकर आ रहे हैं। जब हमारा घर आया तो हमने चलाने वाले से कहा, यहीं उतार दे हमको। उसने सुना नहीं; हमने (सत्तो के गाल पर चांटा मारकर) तड़ाक से एक चांटा जड़ दिया उसके गाल पर और जहाज़ से कूद पड़े।

सत्तो—अरे तो मुझे क्यों मारते हो गुरू !

पंडा—बात समझाई है तुम्हें।

सत्तो—जहाज़ से कूद पड़े, तब भी न मरे ?

पंडा—मरने की कुछ मत पूछो सत्तोसैन ! एक ज्योतिषी से बातें हुईं। उसने लिखकर दे दिया है कि पंडाजी ! चाहे दुनिया मर जाय, पर तुम जोहैसो एटम बम से भी नहीं मर सकते हो।

सत्तो—और मेरी सुनो ! मुझे यह दिखाई दिया कि हवाई जहाज़ तो रेल की पटरी पर चल रहे हैं और रेल आकाश में उड़

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

रही है।

Gandhi Memorial College Of Education and Planning, Jammu

पंडा—ऐसा भी हो सकता है गुरू। भांग को सब सराहते हैं। इसकी निंदा करें, सो अव्वल दर्जा के मूर्ख। देखो, तुमको एक कविता सुनाता हूं :

मूरख जाकी बुराई करें, कहें म्हों मटकाय नसा यह खोटा,
कोऊ बकै, मत एक सुनौ, तुम नित्य मचावहु घोटम-घोटा।
चाहे बदाम छदाम के हों अरु मिर्च की किर्च मसाले कौ टोटा,
एक छटंकी की पुरिया पटकि, रखि आग के ऊपर तामे कौ लोटा।
रोकै जो कोऊ औ' टोकै जो कोऊ, तौ फोरिदै, खोपड़ी मारिकै सोटा,
अंखियन रंग गुलाबी चढ़्यौ, जब अंग सनाय गयौ भंग कौ लोटा।
जो घरवारी परोसै तो फेंकिदै, रूखे-से, सूखे-से, रोटी औ' रोटा,
माल चकाचक खेंचि घकाघक, खीर औ' रबड़ी के मार सपोटा।
आसन-बासन बेचिकें घर के, मौज करौ फिर बांधि लंगोटा,
स्वर्गहू फीकौ लागतु 'काका', जब भंग-तरंग में लेत है झोटा।

सत्तो—अहाहा गुरू! मेरे मुंह में तो पानी भर आया। रबड़ी और खीर, हाय री तकदीर!

पंडा—क्यों, फूट गई क्या?

सत्तो—फूट जाय तुम्हारी और तुम्हारे बाप की।

पंडा—क्यों बे सत्तो! बाप तक पहुंचेगा? हमारा ही माल खाय और हमको ही आंखें दिखाय?

सत्तो—आंहां ननू! बड़े मालदार हो गये हो, सब मालूम है।

पंडा—क्या मालूम है?

सत्तो—यह मालूम है कि घरवाली से चवन्नी मांगकर तो भांग घोटी और शेखी के मारे फड़का रहे हो बोटी!

पंडा—अबे जा नंगा, दुनिया के लफंगा। मेरे पास पैसे की क्या कमी है, चाहूं तो अभी दिल्ली को खरीद लूं।

सत्तो—अबे, मैं बेचूंगा ही नहीं तो तू खरीद कैसे लेगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंडा—तेरा बाप बेचेगा, तू तो चीज क्या है !

सत्तो—देख ले पट्ठे ! फिर बाप तक पहुंचा ! मारते-मारते उड़ा दूंगा वफा।

पंडा—कर दूंगा सफा।

(दोनों में मारपीट; पंडाजी की पत्नी गौरी का प्रवेश)

गौरी—हें-हें, लड़ाई में कुछ नहीं है नफा। हाय दैया, बीस दफै कह दी है कि नशेबाज़ी को छोड़ दो, सिल-लोढ़ी को फोड़ दो। पर वे किसीकी मानें क्या ! हाय दैया, मेरी तो रेड़ कर दी, मरी भांग ने। सवेरे के समय उस लड़के को पिला दी, सो औंधा पड़ा है बेचारा। पैसा खर्च हो, बुद्धि भ्रष्ट हो; सब जानें, तो भी नहीं मानें।

पंडा—देख री गौरी, तू मर्दों के बीच मत बोला कर। जा, भीतर जा; चली आई उपदेश करने !

गौरी—हाय दैया, सब ज़ेवर बेच-बेचकर नशेबाज़ी में उड़ा दिये और कुछ कहूं तो उपदेश बतावें। (रोकर) हे भगवान ! मुझे तुम जल्दी उठा लो तो ऐसे भंगड़ी से मेरा पीछा छूटे।

सत्तो—अरी पंड्यानी ! तुम तो फिजूल की बातें करो। भंग का रंग लग जाने पर क्या छूटै है !

गौरी—नाहें छूटै तौ तकदीर फूटै। ये सब तुम्हारे ही किये करम हैं। तुमने ही इनको चाट लगाई है; तुमने ही मेरा घर बिगाड़ा है और फिर ऊपर से बातें गढ़ रहे हैं। अपनी अंटी में आग लगाओ तब मालूम हो। हाय दैया, चले आवें मिटे मुफतखोर, दुनिया के चोर ! भागो यहां से, नहीं लगाती हूं डंडा।

सत्तो—(डरता हुआ) अरे बचाना पंडा ! फूट गया हंडा।

गौरी—बच्चे की भी कुछ फिकर है सबेरे से ?

पंडा—डाक्टर साहब पर खबर भेज दी है, आते ही होंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(दरवाज़े पर खटखट की आवाज़)

पंडा—अरे कौन हैं भाई, बोलिए !

डाक्टर—अजी, दरवाज़ा तो खोलिए ।

पंडा—डाक्टर मालूम पड़ता है, खोल दे किवाड़ ।

(गौरी का किवाड़ खोलना; डाक्टर का प्रवेश)

डाक्टर—कहिए, क्या शिकायत हो गई बच्चे को ?

पंडा—(लापरवाही से) अजी कुछ नहीं, लुगाई तो ज़रा-सी देर में घबरा जाती हैं । सवेरे एक चुल्लू ठंडाई पिला दी उसे, सो नशे-पत्ते में पड़ा है, हो जायगा ठीक ।

गौरी—भीख मांगोगे भीख ! नशा कर-करके सत्यानाश कर दिया घर का । लड़का बेहोश पड़ा है और कह रहे हैं, नशे-पत्ते में पड़ा है । हाय दैया, इनकी भांग है या ज़हर !

डाक्टर—(बच्चे को देख-भालकर) देखिये जी, बच्चे की हालत खराब है, मुह से झाग दे रहा है । जल्दी बाज़ार जाइये, दवा और इन्जेक्शन ले आइये । (पर्ची लिखता है।)

पंडा—कितने की आयेंगी सब चीजें ?

डाक्टर—करीब पांच रुपये की । जल्दी करिये ।

पंडा—पांच रुपैया, अरी मेरी मैया ! इतने में दस दिन का भांग-मसाला आ जाता । (गौरी से) लाओ जी रुपये दो ।

गौरी—रक्खी है मुझपर थैलिया । ले जाओ अपने पास से ।

पंडा—तेरी सों गौरी, मेरी खस्ता कचौरी ! अपने पास इस समय कुछ नहीं है । पैसे होते तो ऐसी फटकार सुनता; गर्मी की भट्टी में आलू-सा भुनता ! रुपये होते तो आज हरिद्वार में गंगा किनारे तराबट में घुट रही होती ।

डाक्टर—ओहो, आप बड़े मजे के आदमी हैं ! बच्चे की हालत बिगड़ती जा रही है; और आपको भंग घोटने का मूड आ रहा है; सोरी !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंडा—(स्वतः) बदल गये त्यौरी ? (प्रकट) अरी ओ गौरी! ला पैसे दे।

गौरी—लो, मेरा एक कड़ूला ले जाओ, इसे बेचकर दवा ले आना और इसीमें से डाक्टर की फीस दे देना। हाय दैया, कैसी तकदीर फूटी है ! ऐसे ब्याहता से तो विधवा भली।

पंडा—अरी, विधवा होने का चाव है तो मुझे मारकर क्यों होती है, वैसे ही हो जा भागवान !

गौरी—मेरे तो करम फूट गये, जो ऐसे घर में आई।

पंडा—तो अब कर ले दूसरी सगाई।

डाक्टर—अरे जाओ भाई; छोड़ो व्यर्थ की लड़ाई।

सत्तो—डाक्टर साहब ! एक बात तो हमको बता दो।

डाक्टर—क्या ?

सत्तो—हमारी टांगों के जोड़ों में, घुटनों के मोड़ों में दर्द होता रहता है, यह क्या कारन है ?

डाक्टर—(मुंह बनाकर) ओफ्फो, यह तो बड़ी खतरनाक बात है; यह सब भंग की करामात है। अगर आप भंग पीना नहीं छोड़ेंगे तो गठिया हो जायगी, गठिया !

सत्तो—क्या कहा गठिया, अरे लाना रे लठिया !

(डाक्टर का भागना)

पंडा—अजी डाक्टर साहब ! फीस तो ले जाइये।

डाक्टर—नहीं भाई, जान बची फीस भर पाई।

सत्तो—अजी धता भेजो डाक्टर को ! लड़के को ज़रा-सा घी पिला दो और उल्टा लटका दो।

गौरी—तुझे न लटका दे उल्टा, मरे !

पंडा—चुप रह सत्तो, जा दवा ले आ।

गौरी—नहीं, मैं नहीं मंगाऊंगी इससे दवाई।

सत्तो—अरी तो तू ही ले आ मेरी ताई !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गौरी—मैं जा रही हूं दवा लेने। लड़के का ध्यान रखना।

(जाना)

पंडा—सत्तोसैन, इस समय खाली है घर!

सत्तो—यस सर!

पंडा—अंग्रेजी की टांग मत तोड़ो गुरू, जाओ कुछ चक्क माल निकालकर लाओ। खुश्की आ रही है इस समय। फिर वह आ जायगी तो सूखे परांठों से सिर मारना पड़ेगा।

सत्तो—(आश्चर्य से) अरे पंडाजी! आज पुलिस के दीवान जी हमारी तरफ कैसे आ रहे हैं?

(पुलिस-दीवान का सिपाही के साथ प्रवेश; सत्तो घर में छुप जाता है)

दीवान—छन्नू पंडा आपका ही नाम है?

पंडाजी—हां-हां, हमारा ही नाम है; क्यों, क्या बात है?

दीवान—डाक्टर शर्मा ने थाने में रिपोर्ट की है कि आपने एक छोटे बच्चे को भंग पिलाकर बेहोश कर दिया है और डाक्टर देखने आया तो उसको लाठी मारकर भगा दिया और फीस भी नहीं दी। चलिए, आपको कोतवाल साहब बुला रहे हैं।

पंडा—(गिड़गिड़ाकर) दीवान जी, तुम्हारे हाथ जोड़ता हूं; मैंने लाठी नहीं मारी।

दीवान—ये सब बातें वहीं बताना। मुझे इससे कोई वास्ता नहीं।

पंडा—लाठी तो सत्तो ने दिखाई, मैंने कुछ नहीं कहा।

दीवान—सत्तो कौन है?

पंडा—भीतर घर में छुप गया है। निकल बे सत्तो के बच्चे! अब पीना पड़ेगा जेल का पानी, याद आ जायगी नानी।

सत्तो—अरे, मैं तो बीमार हूं, [illegible]

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पंडा—और पी ले बेटा भंग। अब बीमार बन रहा है।

दीवान—(सिपाही से) सरदारसिंह! बांध लो दोनों को और ले चलो थाने। सब होश आ जायेंगे ठिकाने।

(प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

[कोतवाली]

दीवान—लीजिये हुजूर, यही हैं वे दोनों भंगड़ी, जिनकी रिपोर्ट डाक्टर शर्मा ने की है।

कोतवाल—बंद कर दो दोनों को हवालात में। बदमाश! खुद नशा करते हैं और बच्चों को भी ज़हर पिलाते हैं। डाक्टर देखने आता है तो उसपर हमला करते हैं। सरदारसिंह, उतार दो इनका नशा।

पंडा—(गिड़गिड़ाकर) अजी सरकार!

कोतवाल—चुप रह, खबरदार!

सत्तो—मेरी बात तो सुन लो हुजूर!

कोतवाल—चुप बेशऊर!

पंडा—सरकार, मैं भगवान को साक्षी करके आज प्रतिज्ञा करता हूं कि अब कभी भंग को नहीं छूऊंगा।

कोतवाल—ईमान से कहते हो?

पंडा—धरम-ईमान से सरकार!

कोतवाल—और तुम?

सत्तो—मैं तो अब भांग की तरफ देखूंगा भी नहीं; हमेशा रहूंगा दूर, मुझे छोड़ दो हुजूर।

कोतवाल—दीवानजी, इन दोनों को डाक्टर शर्मा के पास ले जाओ। ये उनसे माफी मांगेंगे और उनकी पूरी फीस अदा करेंगे।

पंडा—हां हुजूर, हम तैयार हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोतवाल—अच्छा, कान पकड़कर तीन बार कहो कि अब हम कभी नशा नहीं करेंगे।

दोनों—(कान पकड़कर) अब हम कभी नशा नहीं करेंगे।
अब हम कभी नशा नहीं करेंगे।
अब हम कभी नशा नहीं करेंगे।

पटाक्षेप

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

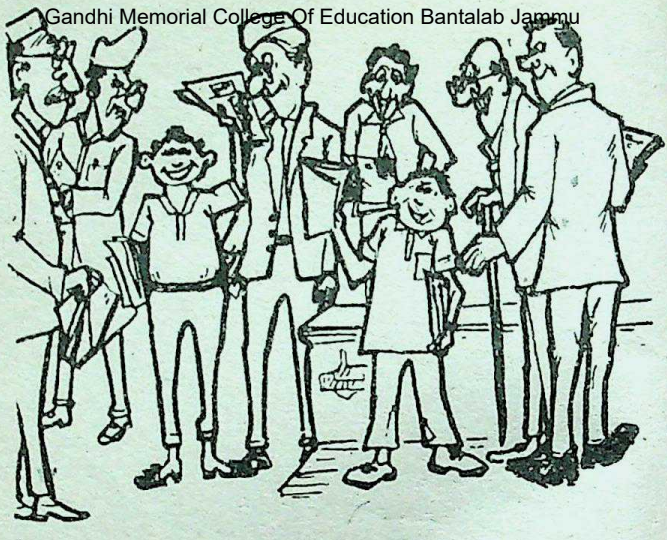

चुनाव का टट्टू

पात्र :

बाबू करमचन्द—एम० एल० ए० सीट के उम्मीदवार

गुप्ताजी—बाबू करमचन्द के मित्र और समर्थक

कन्नो—अक्खड़ी स्वभाव का स्वार्थी समर्थक

मुल्लो व चुन्ना—अखबार बेचने वाले लड़के

डाक्टर बंसल—एलोपैथिक डाक्टर

डाक्टर चटर्जी—होमियोपैथिक डाक्टर

(अखबार बेचने वाले दो लड़के मुल्लो और चुन्ना का प्रवेश)

मुल्लो—लीजिये, ताजा अखबार, आज का ताज़ातरीन पेपर, 'अपर इंडिया'; लालागघाचन्द १० हजार वोटों से जीत गए, खच्चरमल की जमानत जब्त हो गई, हाथीमल का हार्ट फेल हो गया। आज का नया पेपर 'अपर इंडिया'।

चुन्ना—आ गया 'तूफानमेल' आज का नया पर्चा। देखिये चुनाव की चर्चा। पोलिंग पर एक औरत के बच्चा हो गया, लोहिया

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का दिल कच्चा हो गया। लीजिये ताजा पेपर 'तूफानमेल', डाक्टर ढिल्लन पर अष्टग्रह चढ़ बैठे, बैल आपस में लड़ बैठे। लीजिये तूफानमेल।

मुल्लो—अपर इंडिया, अपर इंडिया, आज का ताजा अखबार, दिल्ली में जनसंघी हार गये, कांग्रेसी बाजी मार गये। आज का पेपर, पढ़िये दस पैसे देकर, अपर इंडिया, अपर इंडिया।

(कुछ लोग अखबार खरीदते हैं)

चुन्ना—कहो मुल्लोसैन, कितने बेच लिये ?

मुल्लो—मत पूछो दोस्त, आजकल तो मजे हैं। अगर इसी तरह हर महीने चुनाव का चक्कर चलता रहे तो ईमान से लखपती हो जाऊं, लखपती ! तेरा क्या हाल है ?

चुन्ना—अपन तो यार, सुबह से अब तक पांच रुपये सीधे कर चुके हैं। बस अब जा रहे हैं, सैकिंड शो देखेंगे, फिर पड़के सो जायेंगे, दूसरी दुनिया में खो जायेंगे।

मुल्लो—कल भी तो गया था तू सिनेमा देखने ?

चुन्ना—रोज, डेली जाते हैं। जिस दिन सिनेमा नहीं जाते उस दिन रोटी हज़म नहीं होती।

मुल्लो—अच्छा, बड़ा शौकीन है यार ! शादी हो गई तेरी ?

चुन्ना—शादी वाले तो सैकड़ों चक्कर काट रहे हैं, लेकिन हमारा बाप कुछ मनहूस टाइप का आदमी है यार !

मुल्लो—क्या मतलब ?

चुन्ना—मतलब, हमारे पिताजी यानी फादर, इस मामले में बड़े सुस्त हैं। कोई लड़की वाला हमें देखने आता है तो कहते हैं, 'अभी लड़का छोटा है।' अब तू ही बता, मैं छोटा हूं ? शादी हो गई होती तो अब तक आधा दर्जन बच्चे हो गये होते न !

मुल्लो—(गम्भीरता से) हूं, कितनी उमर है तेरी ?

चुन्ना—अरे, ११ का होकर १२वीं में पड़ गया। फिर क्या

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बुढ़ापे में विवाह होगा ?

मुल्लो—अपनी जनमपत्री दिखाना किसी ज्योतिषी को, वह फौरन बता देगा कि शादी होगी तो कब होगी ?

चुन्ना—अरे चल, क्या बताएंगे ज्योतिषी ? उनका धन्धा तो फेल कर दिया अष्टग्रह के योग ने ! तेरी शादी तो हो गई शायद !

मुल्लो—हो तो गई दोस्त, लेकिन बीवी बड़ी थर्ड क्लास मिली है।

चुन्ना—थर्ड क्लास मिली है तो फोर्थ क्लास में दाखिल करा दे।

मुल्लो—तू तो गधा है यार ! थर्ड क्लास से मतलब है, सूरत न शकल, भाड़ में से निकल। सुभाव भी उसका हमारे माफिक नहीं आता। दिन-भर टें-टें करती रहती है।

चुन्ना—तो उसे चेन्ज कर ले या तलाक दे दे।

मुल्लो— हां, यही सोच रहा हूं, जब देखो तब लाओ-लाओ—

दार ला, दरिया ला, लहँगा ला, फरिया ला,
लाली की ला-ला सों, लाला घबरायौ जी।
यासों हम रडुआ भले, रोटी सों लडुआ भले,
बैठिकें अकेले नित गप्प-गप्प खाओ जी।
चून की न चिन्ता यार, घी की न घिस-घिस कछू,
रूखी चबाओ, चहें सूखी सरकाओ जी।
छोरी नहीं छोरा नहीं फुन्सी नहीं फोरा नहीं,
डाक्टर हकीमन सों जेब कौं बचाओ जी।
क्वारे रहोगे तो सुखारे रहोगे लला,
ब्याह कर नाक मत नकेल डरवाओ जी।
रोकै न कोऊ और टोकै न कोऊ तुम्हें,
जाइबे में चहें चार महीना मत न्हाओ जी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नाचौ जी, गाओ जी, चाहे जहँ जाओ जी,
रात कों सिनेमा सों डेढ़ बजे आओ जी।

चुन्ना—भई, मैं तुम्हारी राय से इत्तफाक नहीं कर सकता। अपने तो छांटकर ऐसी बढ़िया बीवी लायेंगे कि जिसे कोई देख ले तो उसका हार्ट फेल हो जाय। हसीन वाइफ, बना देती है लाइफ। हमारा तो ऐसा आइडिया है—

बहू खूब गोरी होय, पढ़ी चहैं थोरी होय,
चांदी की कटोरी होय, जैसे फिल्म तारिका।
नृत्य में नवीन होय, ताल में प्रवीन होय,
रूप रस रंग में, सुअंग होय नाइका।
खांसे तो खमाज राग, हांसे तो हिन्डोल लसै,
रोवत में रामकली, ऐसी होय गायिका।
फिरकनी सी होय, पर ऐसी मरखनी न होय,
चीमटा की चोट सों बिगारि देय जाइका।
ऐसौ वरदान देहु देवी महादेवी मोहि,
बालक तौ होंय पर होंय नहीं बालिका।

मुल्लो—वाह! कविता तो ज़ोरदार है दोस्त, मज़ा आ गया। अच्छा चल हमारे साथ, आज नई पिक्चर लगी है, देखेंगे दोनों मिलके, निकालेंगे हौसले दिल के।

(दोनों का प्रस्थान)

(बाबू करमचन्द और उनके दोस्त गुप्ताजी का प्रवेश)

बाबूजी—गुप्ताजी, चुनाव की खबरें सुन-सुनकर मेरा दिल तो ऐसे उछल रहा है जैसे पोखर में मेंढक। विरोधी बुरी तरह से हार रहे हैं। अपनी विजय में अब रत्ती-भर भी सन्देह नहीं है। हज़ारों वोटों से जीतेगा हमारा टट्टू, इसलिए हमने अपना चुनाव-चिह्न इसे बनाया है। क्या खयाल है, गुप्ताजी?

गुप्ता—[illegible] जीते और ऐसा जीते कि विरोधी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निखट्टुओं के छक्के छुट जायं। कम से कम दो हज़ार वोट तो आपके पक्ष में औरतों के ही मैंने डलवाये हैं। चम्पो की चाची, गुल्लो की मौसी, बिल्लो की बुआ, सुर्रो की साली, मेरी घरवाली सबने घर-घर घूमकर महिला मतदाताओं को पोलिंग पर पहुंचाया था। ज़मीन-आसमान एक कर दिये हैं बाबूजी! कोई शक्ति नहीं कोई ताकत नहीं जो बाबू करमचन्द को जीतने से रोक सके। यह देखो, कन्नो गुरू तो फूलमाला लेकर आ रहे हैं।

(कन्नो गुरू का प्रवेश)

बाबूजी—वाह कन्नोजी, अभी से फूलमाला भी ले आये! अभी तो पर्चे गिने जा रहे हैं। हार-जीत के फैसले में अभी देर है गुरू!

कन्नो—अरे बाबूजी, अब नांय कछु शंका, बजिवे ही बारो है हमारे टट्टू की विजय को डंका। मेरी राय तो ऐसी है कै झल्लूस तो पहिले ही निकार लें, फिर जानै निकरै कै न निकरै। मेरी सकल तो देखो, तीन दिना सूं न्हायो नांय, चार दिना सूं खायो नांय।

गुप्ता—अरे गुरू, क्यों झूठ बोल रहे हो! कल तो कैम्प में लड्डू-कचौड़ी खैंचे ही हैं तुमने।

कन्नो—अरे गुप्ताजी! दस-पांच लड्डू-कचौड़ीनसों का यहां छोंक लगै। वो कोई भोजन करिबो थोड़ै ही है। वो तो नास्ता है नास्ता, वासों पेट भरिवे को कहा वास्ता। १५ दिना सूं भौरा सौ भिन्नाय रह्यो हूं। शहर के सब नामी-नामी गुंडा, तुम्हारो हो कर रहे हैं प्रोपेगंडा। होने चाहिए अंटी में नोट, चाहें जितने हो लेउ वोट! हां तो झल्लूस पैदल ही निकरैगो, कै टट्टू सजवाऊं बाबूजी?

बाबूजी—ठहरो गुरू, अभी जल्दी मत करो।

कन्नो—बाबजी, छाती ठोक के कह रह्यो हूं, तुम हार जाओ

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तौ मोंकूं सूट करवाइ दीजों। गली-गली में, बजार-बजार में छोरा-छोरी, मर्द-लुगाई, परचूनियां-हलवाई सब हमारे टट्टू पै हो रहे हैं लट्टू।

बाबूजी—गुरू, मैंने भी खर्च करने में कमी नहीं रखी है, १५ हजार कैश तो अपने पास से ही लग चुके हैं और अभी हजारों के पेमैण्ट बाकी हैं।

कन्नो—सब जाई में सूं निकसैगा बाबूजी! एक साल में ही पन्द्रह की जगह बीस हजार न आ जायं तो म्हीं पै मूछ नहीं रक्खूं बाबू, है जान देउ सीट पै काबू!

गुप्ता—और अगर भाग्य ने साथ दिया तो आपकी योग्यता को देखते हुए उपमंत्री-पद तो बड़ी आसानी से प्राप्त हो सकता है। फिर तो हमारे-तुम्हारे भी पौबारह हैं; क्यों कन्नो गुरू?

कन्नो—लखनऊ में ही छनौ करेगी दोंनों समय। (नरमी से) बाबूजी, वो सोना हलवाई और वो पैट्रोल वारे और छपाई वारे कछू रुपैया मांग रहे···

बाबूजी—(नोट निकालकर) यह बीस नोट हैं सौ-सौ के, दे आना उन्हें, बाकी हिसाब बाद में हो जायगा। अच्छा अब उधर चलना चाहिए, काउंटिंग की स्थिति भी देखनी है। (प्रस्थान)

कन्नो—गुप्ताजी, तुम चलौ, मैं तगादे वारेन कों सिल्टाइकें अभी आऊं। (नोट गिनकर हिसाब लगाता है)—पांच सौ रुपये पैट्रोल वारे कों, सौ रुपया छपाई वारे कों, एक सौ पचास रुपये हलवाई को नास्ता के, और पचीस-पचीस रुपैया प्रचार करवे वारे पट्ठन कों। बाकी बचे बारह सौ रुपैया, जि हमारे रहे, हमन्ने का काम नाहें करो? अब हमारे जानें जीतौ, चाहें हारौ और चाहें जमानत जब्त है जाओ।

(अखबार वाले लड़के मुल्लो का प्रवेश)

मुल्लो—आ गया ताजा अखबार अपर इंडिया। रेडियो से

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भी पहले खबर देने वाला अपर इंडिया। करमचन्द बाबूजी की ज़मानत डूब गई, टट्टू की टांग टूट गई। लीजिए आज का पेपर, दस पैसे देकर।

कन्नो—(आश्चर्य से) बाबूजी की ज़मानत डूब गई, टट्टू की टांग टूट गई! हमें तौ पहले ही दीख रही। चलौ जी जि अच्छौ भयौ कै हमने अपनी रकम निकाल लई। (प्रस्थान)

(चुन्ना का प्रवेश)

चुन्ना—तूफान मेल। जीत गई जैपुर की रानी, कांग्रेस की मर गई नानी, लेटैस्ट खबरें पढ़िये, डाक्टर ढिल्लन का पत्ता कट गया। जनसंघ वाले मर्द को एक महिला ने पछाड़ दिया। बाबू करमचन्द हार गये, लपकानन्द बाजी मार गये। नया पर्चा, चुनाव की चर्चा।

मुल्लो—पोलिंग पर दंगा, हार गये रंगा, जीत गये नंगा। लीजिये ताज़ा अखबार अपर इंडिया। नया पेपर, जीत गई भाभी, हार गये देवर। बाबूजी की बाय पच गई, कम्यूनिस्टों की ज़मानत बच गई।

चुन्ना—नई-नई खबरें। गौतम की बधिया बैठ गई, मेहता का इंजन पटरी से उतर गया, पालीवाल जी को कांग्रेसी चूहा कुतर गया। तूफान मेल।

मुल्लो—लक्ष्मीलपक आचार्य जीत गये, गरीबी के दिन बीत गये। अपर इण्डिया पढ़िये लेकर, दस नये पैसे देकर।

(लड़कों का जाना, बाबूजी व गुप्ताजी का प्रवेश)

बाबूजी—ठीक कह रहे हैं लड़के, बाबूजी की ज़मानत डूब गई। ठीक कह रहे हैं, ठीक कह रहे हैं। सर्वनाश, सर्वनाश। बचाओ गुप्ताजी! मेरा कलेजा हिल रहा है, बचाओ, बचाओ!!

(गिरना चाहता है तभी गुप्ताजी साध लेते हैं और वहीं एक जगह लिटा देते हैं)

(कन्नो गुरु का प्रवेश)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कन्नो—बाबूजी की बाय पच गई, जान बच गई। चौं भैया, जामें हमारौ का कसूर है? जी-जान सों रात-दिन लगे रहे। वैसे बाबूजी हतू जाई लाइक हैं। ऊपर कों थूयरो करिकें चलते। कोई जैरामजी की करतौ तौ आंख मटकाइ देते। ऐसी पटक लगी है बेटा में, छटी कौ दूध याद आयगौ होयगौ। अब नांय कबहू खड़ौ होयगौ चुनाव में। मरन देउ जी, हमें का, अपनौ तो हज़ार-बारह सौ कौ धन्दौ है ही गयौ। बूढ़ौ मरौ चाहै ज्वान, मोकों हत्या ते काम। बाबूजी मिनिस्टर है जाते तौ हमें कलट्टर न बनाइ देते और हार गये हैं तौ फांसी पै नांय चढ़ाय सकें। पर चलें, नेंक सहानभूति तौ दिखाइ आमें। चार आंसू बहाइ आमें।

(थूक के आंसू लगाकर जाना)

कन्नो—गजब है गयौ बाबूजी, सत्यानास है गयौ। (आश्चर्य से) अरे बाबूजी की तबियत कैसी है?

गुप्ताजी—चुनाव का नतीजा सुनते ही हालत एकदम बिगड़ गई है।

कन्नो—बिगड़ जान देउ गुप्ताजी! घबड़ाओ मत, ठीक है जाइंगे, अभी तौ पिटीसन लड़ैगौ, पिटीसन!

गुप्ताजी—शोर मत करो, पहले किसी डाक्टर को ले आओ जल्दी।

कन्नो—मैं लाइ रह्यौ हूं डाक्टर कों जल्दी, तब तक इन्हें पीस के चटाइ देउ अदरक और हल्दी। (कन्नो गुरू का प्रस्थान)

(कन्नो गुरू वहां से रोते हुए उठते हैं किन्तु रास्ते में
फिल्मी धुन गुनगुनाते जाते हैं)

गजब भयौ रामा जुलम भयौ रे,
टट्टू हमारौ बिदक गयौ रे।

(होमियोपैथी के डाक्टर चटर्जी को लेकर कन्नो गुरू का प्रवेश,
साथ में भारी-भारी किताबों का बंडल है)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुप्ताजी—ये कौन हैं कन्नो गुरू ? कहां के बुकसेलर हैं ?

कन्नो—बुकसेलर नाहें, डाक्टर हैं, हैमियोपैथी के। किताब देख के इलाज करें। इनको नाम है डाक्टर मटर जी।

डाक्टर—(चिल्लाकर) शटअप, मटरजी नहीं, चटर्जी बोलेगा।

कन्नो—हां-हां, चटरजी सही, जल्दी देखो, हमारे बाबूजी चुनाव में हार गये हैं।

चटर्जी—(किताब देखता है) चुनाव में हार गिया है, कितना वोट से हारा है ?

गुप्ता—यही करीब दस हज़ार से।

चटर्जी—करीब-करीब नहीं चलेगा मोहाराज, ऐक्ज़ैक्ट नम्बर बतायेगा तब लौक्षण मिलेगा। होमियोपैथी तो लौक्षण पर चलता है, पौंडतजी।

कन्नो—पौंडतजी नहीं हैं, ये गुप्ताजी हैं।

चटर्जी—ओ सौरी, कुत्ताजी।

गुप्ता—अरे हटाओ इसको, कहां से पकड़ लाए गुरू ! यह तो बिल्कुल काठ का है। और किसी डाक्टर को लिवाकर लाओ।

कन्नो—डाक्टर नगेन्द्र को लिवा लाऊं ?

गुप्ता—अरे गुरू, वे तो साहित्य के डाक्टर हैं। ऐलोपैथी वाले को लाओ।

चटर्जी—(मुंह बिगाड़कर और चलने की तैयारी करता हुआ) ऐलोपैथी इज़ बोगस ट्रीटमैन्ट।

कन्नो—कहा करोगे पिपरमैंट को, बढ़ाओ घोड़ी (कन्नो गुरू किताबें उठाते हैं) चलो डाक्टर साब, तुम्हारी इलाज इन्हें माफिक नाहें आवेगी।

(आगे-आगे गुरू, पीछे-पीछे डाक्टर का प्रस्थान)

गुप्ता—कैसी-कैसी ओंची खोपड़ी के आदमी डाक्टर बन बैठे !

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कितने वोट से हारे हैं, यहाँ मालूम करके तो आप इलाज करेंगे।

(कन्नो गुरू के साथ डाक्टर बन्सल का प्रवेश)

गुप्ता—नमस्ते डाक्टर साहब !

बन्सल—(हकलाते हुए) नमस्ते, कहिये अच्छे हैं ?

गुप्ता—अच्छे होते तो आपको कष्ट क्यों देते ?

बन्सल—क्या शिकायत है ?

गुप्ता—हमारे बाबूजी चुनाव का नतीजा सुनते ही बेहोश हो गये हैं। सोच रहा हूं जरा होश में आ जायं तो इन्हें घर भिजवा दूं। यहां तो थोड़ी देर के लिए लिटा दिये हैं। देखिये क्या बात है।

(डाक्टर छाती को स्टेथस्कोप यंत्र से देखता है)

बन्सल—(मुंह बिगाड़कर) ओफ्फो !

कन्नो—क्या बात मिली बन्सल साब ?

बन्सल—दाहिने फेफड़े की स्पेशल नली टूट गई।

कन्नो—स्पेशल छूट गई ?

गुप्ता—अरे चुप रहो गुरू, बेकार बक रहे हो, कुछ समझो न बूझो।

बन्सल—(कन्नो के कान पर मुंह रखकर) नली टूट गई है महाराज !

कन्नो—(उतने ही जोर से डाक्टर के कान पर) तो फिर जो देउ जल्दी।

बन्सल—इंजैक्शन लगाना पड़ेगा।

कन्नो—तौ लगाइ लगूइ कै आफत काटौ।

(डाक्टर अपने बैग में से बड़ी-सी पिचकारी और बोतल निकालता है)

कन्नो—(आश्चर्य से) हे भगवान गिरवरधारी, ये इंजैक्शन की सुई है या होरी की पिचकारी !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुप्ता—यह कैसा इंजैक्शन है ?

बन्सल—घबराइये नहीं गुप्ताजी ! यह इंजैक्शन पन्द्रह लाख पावर का है। हारे हुए उम्मीदवारों के लिए स्पेशल मंगाये गये हैं। इसमें ऐसेम्बली का ग्लूकोज़ भरा हुआ है, वह बाबूजी के माइन्ड में सप्लाई करना पड़ेगा, तभी यह बच सकते हैं।

गुप्ता—ऐसेम्बली का ग्लूकोज़ ?

बन्सल—यस।

गुप्ता—माफ करिये डाक्टर, हमें यह इंजैक्शन नहीं लगवाना है। गुरू, इन्हें फीस देकर विदा करो।

कन्नो—फीस काहे बात की दै दै, इंजैक्शन तौ लगौ ही नांय।

बन्सल—वाह वा, अब यह बन्दूक भर गई है तो कहीं न कहीं चलानी ही पड़ेगी। (गुप्ता की ओर पिचकारी तानकर) आपके लगा दूं ?

गुप्ता—(उछलकर) अरे वाह !

बन्सल—(कन्नो से) तुम्हारे लगा दूं ?

कन्नो—(घबराकर) मेरी का नली फट गई है ?

बन्सल—तो निकालो फीस।

कन्नो—तुम्हारी दुकान पै पहुंच जायेंगे फीस के नोट।

(नोट की ध्वनि को वोट सुनकर बाबूजी बैठ जाते हैं)

बाबूजी—(एकदम बैठकर) वोट, कैसे वोट, किसके वोट, मुझकौं देना वोट। (डाक्टर को पिचकारी लिए देखकर) यह कौन होली खेलने आया है ? पकड़ लो इसे, मेरे टट्टू को वोट दिलवाओ। वोट, वोट, वोट, टट्टू, टट्टू।

(डाक्टर का घबराकर भागना, बाबूजी का गिर पड़ना)

गुप्ता—कन्नो गुरू, अब तौ एक चाल चलनी पड़ेगी।

कन्नो—बोलौ, तुम कहौ जैसे करूं, मोकूं तौ जा समय, गुप्ताजी, टट्टू ही टट्टू चारों तरफ दीख रहे हैं।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुप्ता—(कान के पास मुंह ले जाकर) मैं एक कागज़ लिखकर तुम्हें देता हूं, इसे किसी तार के चपरासी की मारफत यहां भिजवा दो।

कन्नो—हां-हां, लिखो तुम; पर गुप्ताजी, अपने मन की बात कह दें तुम सों।

गुप्ता—क्या ?

कन्नो—हमारे पंडितजी यों कहि रहे रात कूं कै अष्टग्रह वैसे तो टल गयौ है पर बाकौ असर अभी छै वर्ष तक रहैगो। जिनके नाम 'क' वर्ण से शुरू होवें हैं, उनके लिए बड़ौ हानिकारी है। बात हू ठीक है उनकी। तुम्हीं देख लेउ, जिनके नाम में पहिले 'के' आवे उनकौ लींपा है गयौ। काटजू हार गये, केसकर मारे गये, कृष्णदत्त पालीवाल चित्त है गये, कैलाशप्रसाद हार गये और हमारे बाबूजी करमचन्द कौ काम बिगड़ गयौ। (रोकर) रात कों हमारे कमरा में एक कबूतर मर गयौ। और मेरो नाम हू कन्नो है···कहूं कोई आफत न आइ जाय, मैं तौ अपनौ नाम बदलुंगो गुप्ताजी !

गुप्ताजी—अरे गुरू, तुम्हें कौन-सा चुनाव लड़ना है !

कन्नो—नाहें साब, मैंने तौ अपनौ नाम आज सों कन्नो गुरू के बजाय घन्नो गुरू रख लियौ है।

गुप्ताजी—अच्छी बात है, घन्नो गुरू सही, हमारा क्या नुकसान है। अच्छा यह बात तो हो गई, अब तुम जल्दी यह नाटकीय काम करा दो, तार लेकर किसीको यहां भिजवा दो तो बाबूजी की जान बच जाय। (कन्नो का प्रस्थान)

(गुप्ताजी बाबूजी की नब्ज़ आदि देखते हैं, बाहर से तार के चपरासी का प्रवेश)

तारवाला—बाबू करमचन्द का टेलीग्राम है।

गुप्ताजी—(तार लेते हैं और खोलकर पढ़ते हैं) विजय-विजय, पिटीशन मंजूर हो गया, कन्नो गुरू, बाबूजी का पिटीशन मंजूर हो गया। अब दुबारा लड़ेगा टट्टू।

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कन्नो—का कई, दुबारा लड़ैगो टट्टू, आइ गयो मज़ा, (नाच-कर) अब दुबारा लड़गौ हमारौ टट्टू। देखुंगो कैसे जीतैगौ बैलन कौ जोड़ा। फूट जायगौ कांग्रेस कौ फोड़ा। (बाबू जी के कान पर) बाबूजी, तुम जीत गये, बाबूजी, तुमजीत गये। (बाबूजी का उठना)

बाबूजी—मैं जीत गया, चुनाव जीत गया, सच बताओ कन्नो गुरू, गुप्ताजी! कन्नो गुरू, गुप्ताजी···

गुप्ताजी—जीतने में अब क्या कसर है बाबूजी! देखिये यह टेलीग्राम। दुबारा चुनाव होगा, तो जीतेगा ही हमारा टट्टू।

बाबूजी—अच्छा तो गुप्ताजी, कन्नो गुरू, ऐसा करो, मेरा जुलूस निकाल दो, फिर निकला या नहीं। अब जीतने में शक है ही नहीं।

कन्नो—(गुप्ता के कान पर) गुप्ताजी, बात तो ठीक है, बाबूजी को ज़िन्दा रखने के लिए जल्लूस निकारवौ ज़रूरी है। मैं इन्तज़ाम करबे जाइ रह्यौ हूं। (प्रस्थान)

(कुछ ही देर में कन्नो गुरू का एक सजा हुआ टट्टू और माला लेकर आना, बोर्ड और झंडा लिए हुए कुछ आदमी भी साथ हैं)

कन्नो—लेउ गुप्ताजी, बैठारौ बाबूजी कूं और बोलौ "जीतेगा भई जीतेगा, टट्टू वाला जीतेगा। अपना टट्टू जीतेगा।" (नारे लगाते हुए प्रस्थान)

पटाक्षेप

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

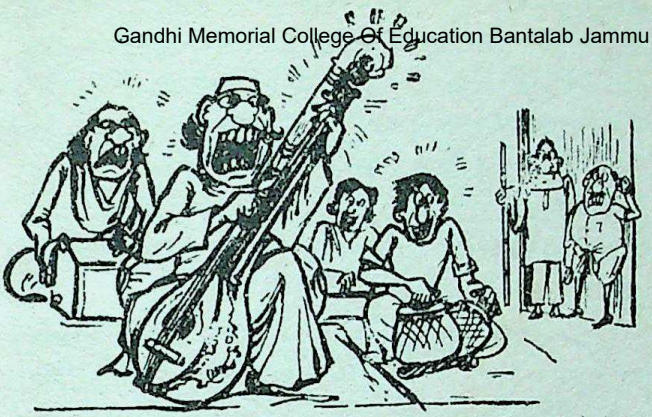

हमीर का हलवा

पात्र :

धुरन्धर शास्त्री—एक अधकचरा, अभिमानी और ढोंगी संगीत-शास्त्री

ताले खां—धुरन्धर जी का शिष्य, ताल का विद्यार्थी

छन्नू-मन्नू—दो छोटे विद्यार्थी

गणेशानन्द—ग्वालियर का एक गर्वैया

मकान वाला—एक लाला

ऊधमसिंह—मकान वाले का अक्खड़ लठैत नौकर

(स्थान धुरन्धर जी का संगीतालय, एक चौकी पर आसन बिछा है, मसनद रक्खा है। कोने में टूटा-सा तानपूरा खड़ा है। बेसुरा हारमोनियम और फटा हुआ तबला पड़ा है। शास्त्री जी का शिष्य ताले खां गले में कनस्टर लटकाये उसे बजाते हुए एवं मुंह से तिहाई बोलते हुए प्रवेश करता है।)

ताले खां—झगड़ झगड़ तड़क धा, झगड़ झगड़ तड़क धा, झगड़ झगड़ तड़क आं। अब्बाजान कहा करते थे कि देख बेटा ताले खां, पहले तीन साल तक सिर्फ 'नाधीधीना' बजाना तब किसी और

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ताल से हाथ लगाना। मेरी बात मानेगा तो जिन्दगी-भर बेताल नहीं होगा। इसलिए बन्दा उनकी राय पर अमल करता हुआ तीन साल तक तिताले का रियाज़ करता रहा और जब पूरे ३६ जोड़ी तबलों की पुड़ी फट गई तो अब्बा ने कहा था, "बेटा ताल बहादुर, तेरे तिताले की चोट यह मरी हुई खाल बर्दाश्त नहीं कर सकती, इसलिए ले यह टीन का कनस्टर, इसीपर रियाज़ कर। न मिलाने का झगड़ा न फटने का रगड़ा और सुर ऐसा तगड़ा कि सुनने वालों के कान फोड़ दे, खाली को सम से जोड़ दे।"

जी हां, आपने समझा क्या है कनस्टर को। बस में कंडक्टर का, ज़िले में कलक्टर का और सूबे में मिनिस्टर का जो दर्जा है वही ताल के बाजों में कनस्टर का है। अंग्रेज़ी राज में इसी कनस्टर पर डोंड़ी पीटकर हमारे दादा मियां ने लाखों-करोड़ों की जायदादें कौड़ियों में नीलाम करा दीं। अरे साहब, कलाकार होना चाहिए, उनके लिए क्या तबला और क्या कनस्टर! मेरी फूफी के भतीजे का साला, बिस्सू खां बीड़ी वाला, मिट्टी के घड़े पर ऐसा बढ़िया कहरवा लगाता है कि उस्ताद थिरकवा थिरकने लगते हैं। शम्भू महाराज नाचने लगते हैं। चार पैसे वाली सारंगी पर जब कल्लू कहार फिल्मी धुनें निकालता है तो कल्याण जी आनन्द जी के मुंह में पानी भर आता है।

यानी कि आर्टिस्ट होना चाहिए, उसके लिए जैसी चंग वैसा मृदंग, जैसा घल्ला वैसा मल्ला। इसी कनस्टर पर आपका ताले खां रेला, परन, मोहरा, लग्गी, घोड़ा, बग्गी, खाली भरी, लाल हरी, आड़ी, कुआड़ी, पान सुपाड़ी, सब कमाल दिखा सकता है। कल शाम के बम्बई संगीत सम्मेलन से बुर्जनारायन जी का टेलीग्राम आया था, "मिस्टर ताले खां कम सून विद योर कनस्टर" हमने लिख दिया, "नो टाइम सर", (गम्भीर मुद्रा में एक ओर मुंह करके खड़ा हो जाता है, दूसरी ओर से बुरन्धर शास्त्री ताल और लय में

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरगम बोलते हुए प्रवेश करते हैं)

धुरन्धर—सारेगा, रेगमा, गमपा, मपधा, पधनी, धनिसां।

(अन्तिम सां पर ताले खां से टकरा जाता है। ताले खां 'आं' करते हुए चौंक पड़ता है)

धुरन्धर—इसे कहते हैं सम, वाह रे हम। क्यों बेटा ताले खां, उर्फ तल्लू! क्या सोच रहा है तल्लू? और विद्यार्थी अभी नहीं आये?

ताले खां—(खोपड़ी खुजाते हुए) आते होंगे गुरुजी!

धुरन्धर—तो चल, तब तक रियाज़ कर लें।

(दोनों रियाज़ करते हैं। धुरन्धर जी सरगम बोलते हैं और ताले खां कनस्टर पीटता है)

धुरन्धर—सारे मामा, गारे मामा, माधा मामा, मारे मामा, गामा गामा, ला पाजामा।

(नेपथ्य से मकान वाले लाला की आवाज़ आती है)

लाला—अरे यार सोमन देउगे कै नांय। जि का हू-हल्लड़ मचाइ रक्खो है। अजब सनकीन सों पालो पड़ो है!

धुरन्धर—(चौंककर) कौन है यह, जो हमें सनकी बता रहा है?

ताले खां—अजी वही मकान वाला मोटा लाला बड़बड़ा रहा है। हमारे रियाज में टांग अड़ा रहा है।

धुरन्धर—बकने दो मनहूस को, जानता नहीं इस समय श्री धुरन्धर जी स्वराभ्यास कर रहे हैं। लय भंग कर दी दुष्ट ने। हां जी, ताले खां, चलो, सारे गामा, मर गए मामा, धानी धाना, नानी नाना।

(मकान वाले लाला का प्रवेश)

लाला—देखो महाराज धुरन्धर जी, आधी रात तक धमा-चौकड़ी मचाओगे तो जा मकान में तुम्हारी गुजर नाहें होयगी।

ताले खां—(घड़ी देखकर) अभी तो १२ बजने में ५ मिनट

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बाकी है जनाब !

धुरन्धर—देखिये लाला जी, किराया मुफ्त का नहीं है जो वैसे ही दे दें। हमें तो रात-भर गायेंगे, अभी तो रात्रि के दूसरे प्रहर का राग ही चल रहा है। स्वराभ्यास करते समय आप हमें नहीं टोक सकते, सरगम की ट्रेन को नहीं रोक सकते। हां, बेटा ताले खां—सारे-सारेगा, रेगारेगामा, गामागामापा, मापामापाधा, पाधापाधा···।

लाला—अभी भाड़ में डारौ पाधापाधा कों। व्यर्थ में फोड़ रहे हौ कान, आधी रात तक आलाप रहे हो बेसुरी तान।

ताले खां—अमां लाला, अभी तानें शुरू कहां हुई हैं? शुद्ध-तान, कूटतान, छूटतान, टूटतान, फूटतान, लूटतान, झटके की तान, खटके की तान, लटके की तान···।

लाला—(हाथ जोड़कर) माफ करौ बाबा, हमें नाहें सुननी तुम्हारी तान, यहां तो वैसे ही फूटे जायें कान। गाइवे-बजाइवे कौ जि कोई कायदा है?

धुरन्धर—कायदा? जब ताल के बोलों को ठेके में बांधकर बजाते हैं, तब उसे 'कायदा' कहते हैं, जैसे—धाधा मिट्टी धाधा तूना, ताता मिट्टी, धाधा तूना।

(साथ-साथ ताले खां कनस्टर पीटता है)

लाला—देखो धुरन्धर जी महाराज, जि तूना और चूना मैं कछू नाय जानूं। मोकों चकमा दैवे की कोसिस मत करो, नहीं फिर टेढ़ी उंगरियन सों घी निकासनौ परैगौ। वा साव वा, अच्छी आफत लगी।

धुरन्धर—(मुंह बिगाड़कर) हाय, हाय, बड़े अरसिक हो लाला! महाराज भर्तृहरि ने ठीक ही कहा है—

साहित्यसंगीतकलाविहीनः।
साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः॥

लाला—संसकिरत बौलिकें मोकूं नांय घौंसाइ सकौ। देखो

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जी, एक हफ्ता में मेरो कमरा खाली कर देउ, नहीं फिर मैं अपनी पै आइजाउंगो तो सब तानारीरी भूल जाओगे।

धुरन्धर—एक सप्ताह में खाली कर दो। सप्ताह में ७ दिन और सप्तक में ७ सुर। खाली उसे कहते हैं, जहां ताल की आवाज नहीं होती, क्यों बेटा तालबहादुर ? लगाओ ठेका—नाधिधिना, नाधिधिना, नातितिना···

लाला—(झींककर) अजब सनकीन सों पालौ पड़ो है !

धुरन्धर—झालो तौ सितार में होवे लाला ! हां बेटा, ज़रा सुनाओ तो लाला को झाला (कनस्टर में ही झाला बजाता है, लाला घबराकर चला जाता है)।

धुरन्धर—(खुश होकर) हः हः हः, कहो बेटा तल्लू, कैसा उड़ाया उल्लू ? अरे संगीत में बड़ी शक्ति है। यह बेचारा लाला क्या चीज है, एक फटकार मालकोस के स्वरों में लगा दूं तो पिघलकर पानी हो जाय। दीपक के सुर सुना दूं तो जलकर भस्म हो जाय।

(सन्नू-मन्नू नामक दो शिष्यों का प्रवेश)

सन्नू—गुरूजी, नमस्कार।

मन्नू—गुरूजी, नमस्कार।

धुरन्धर—खबरदार ! आज से नमस्कार-वमस्कार सब बन्द।

सन्नू—(आश्चर्य से) क्यों गुरूजी ?

धुरन्धर—अरे मूर्ख, नमस्कार में कितनी मात्रा हैं, मालूम है ?

सन्नू—(अंगुलियों पर गिनता हुआ) न म स का र। छै मात्रा हैं महाराज !

धुरन्धर—छै मात्रा की कौन-सी ताल होती है ?

मन्नू—मैं बताऊं गुरूजी ?

धुरन्धर—खामोश ! तुम नहीं बोल सकते, क्योंकि तुम केवल कहरवा के विद्यार्थी हो।

सन्नू—छै मात्रा का दादरा होता है गुरूजी !

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धुरन्धर—शाब्बास। दादरे के बोल क्या होते हैं ?

मन्नू—(मटकता हुआ) धा धी ना, धा ती ना, धा धी ना, धा ती ना···।

धुरन्धर—(कान पकड़कर मन्नू को बैठाता है) तुझसे बीस बार कह दिया, बीच में मत बोला कर, बैठ इधर।

धुरन्धर—हां तो देखो बेटा सन्नू ! नमस्कार में भी ६ मात्रा और दादरे में भी ६ मात्रा। इसलिए हमने निश्चय किया है कि नमस्कार की जगह दादरे की लग्गी 'धिरकिटधा' बोलता हुआ प्रत्येक विद्यार्थी हमको अभिवादन किया करेगा। (मन्नू से) क्या समझे मन्नू ?

मन्नू—(रोता-सा) धिरकिटधा।

(दरवाज़े पर खटखट की आवाज़)

धुरन्धर—देखना कौन है बाहर ?

(सन्नू-मन्नू दोनों दौड़कर बाहर जाते हैं और तत्काल वापस आते हैं)

सन्नू—(हांपता हुआ) बाहर से कोई गवैया आये हैं। आड़े-चौताले चलते हैं।

मन्नू—खम्माज में खांसते हैं।

सन्नू—हिंडोल में हंसते हैं।

मन्नू—छायानट में छींकते हैं, रामकली में रोते हैं।

सन्नू—ग्वालियर के मालूम होते हैं।

धुरन्धर—गायक आये हैं ? सब कितने नग हैं ?

सन्नू—वन औनली।

धुरन्धर—उनके साथ कोई विवादी स्वर भी है क्या ?

सन्नू—नो सर।

धुरन्धर—नो सर के बच्चे, हिन्दी बोल।

सन्नू—कोई नहीं है गुरुजी, अकेले हैं बे।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धुरन्धर—ठहर जा, रोके रहना अभी। हम व्यवस्था ठीक कर लें। (दुपट्टा कंधे पर डालता है, हारमोनियम हटाकर तानपूरा हाथ में लेता है, और गम्भीर मुद्रा बनाकर आसन मारकर बैठता है) जाओ, ले आओ।

(सन्नू-मन्नू का बाहर जाना और गायक को लेकर आना)

गणेशानन्द—(लंगड़ाते हुए) नमस्कारम्।

धुरन्धर—'तिरकिटधा' अहोभाग्य महाराज! विराजिये।

(गणेशानन्द बैठ जाते हैं)

धुरन्धर—कहां से पधारे हैं, कहां को जायेंगे, क्या शुभ नाम है, कौन-सा मुकाम है, हमसे कुछ काम है?

गणेशानन्द—ओह, एकसाथ इतने प्रश्नों का उत्तर! ग्वालियर से आये हैं, दिल्ली को जायेंगे, गणेशानन्द नाम है, हाथरस मुकाम है, आपसे कुछ काम है।

धुरन्धर—ग्वालियर से पधारे हैं? अहोभाग्य! शंकर पंडित के यहां से?

गणेशानन्द—जी नहीं।

सन्नू—हद्दू खां हस्सू खां के घराने से?

गणेशानन्द—नहीं लल्लू!

मन्नू—घिस्सू खां पिस्सू खां के यहां से?

गणेशानन्द—नहीं मुन्ना!

धुरन्धर—यह भी नहीं, वह भी नहीं, तो पूंछ वालों के मौहल्ले से?

गणेशानन्द—पूंछ और सींग से अपना कोई सरोकार नहीं। अपन तो सैनी घराने से संबंध रखते हैं।

ताले खां—यह नसैनी वाला घराना भी खूब है महाराज, बहुत नाम कमाया है इसने।

गणेशानन्द—(हंसकर) नसैनी नहीं सैनी, अर्थात् तानसेन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
का घराना।

धुरन्धर—(आंख फाड़कर) अच्छा! तो आप तानसेन के घराने के शिष्य है? वही तानसेन जिनके शिष्य स्वामी हरिदास थे?

गणेशानन्द—(हंसकर) शिष्य नहीं, गुरू।

धुरन्धर—हा-हां, गुरू ही सही। धन्य है ऐसे कलाकारों के चरणों से हमारा संगीतालय आज पवित्र हो गया। आपके वास्ते दूध मंगाऊं?

गणेशानन्द—मंगा लीजिये।

धुरन्धर—चाय बनवाऊं?

गणेशानन्द—बनवा लीजिये।

धुरन्धर—कुछ मिष्टान्न, कुछ नमकीन?

गणेशानन्द—हां-हां।

धुरन्धर—पान, इलायची, सुपाड़ी?

धुरन्धर—चूना, कत्था, तमाकू?

गणेशानन्द—सब चलेगा बेटा!

धुरन्धर—(स्वतः) सब चलेगा बेटा? मामला बड़ा गंभीर है। (बटुए में से तम्बाकू निकालकर देता हुआ) यहां कब तक रुकने का विचार है भगवन्?

गणेशानन्द—सोच रहा हूं कि जब यहां आया हूं तो दस-बीस दिन रुक जाऊं।

धुरन्धर—(लम्बी सांस खींचकर) हूं।

गणेशानन्द—(तम्बाकू मींड़ते हुए) कितने विद्यार्थी हैं आपके संगीतालय में?

धुरन्धर—विद्यार्थी तो पचासों हैं; किन्तु आज उपस्थित केवल तीन हुए हैं।

गणेशानन्द—(तम्बाकू की फंकी लगाकर) तीन भी बहुत होते हैं। और विद्यार्थी क्यों नहीं आये?

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धुरन्धर—दस विद्यार्थियों को मालकोश गाकर मलेरिया हो गया है, पन्द्रह विद्यार्थी गांधार की गरमी से पीड़ित हैं, बीस को पंचम के अभ्यास से पेचिश हो गई है और पांच लड़कों को धैवत की धुकधुकी बैठ गई है।

गणेशानन्द—हरे-हरे ! समय बड़ा खराब है। किन्तु आपकी तोंद दिनोंदिन उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रही है, यह बड़ी प्रसन्नता की बात है।

धुरन्धर—हिं-हिं, सब आपके चरणों की कृपा है। चलो जी मन्नू, कल का पाठ सुनाओ।

मन्नू—राग धकापेल, ताल रेलमपेल। राग की चाल—धड्धक धड्धक धाऽ धाऽ, धड्धक धड्धक धाऽ धाऽ, धड्धक धड्धक आं।

(आं कहता हुआ सम पर सन्नू के चपत लगाता है)

तनन तनन तम, दिरनाम दिरनाम दिरनाम दिरनाम, दिरनाम दिरनाम दीमतन दीमतन, दिरदिर दीमतन तवा चीमटा चकला बेलन घड़बड़ घड़घड़ धाड़ेधिड़ धाड़ेधिड़ धकापेल की रेल चलाऊं, सब गुनियन में धुनी कहाऊं।

(ताल में चलते हुए) धकधक फकफक धड़ाम धा, धकधक फकफक धड़ाम धा···

गणेशानन्द—बस बेटे, बस, अब इस रेल को रोक दो वर्ना पुल टूट जायगा। अहा हा, इन बच्चों का भविष्य बड़ा उज्ज्वल है। बड़े होकर ये बच्चे देश-देशान्तर में आपका यश फैलायेंगे। इनकी कला देखकर मेरा दिल ऐसे दौड़ रहा है जैसे 'रेस' का घोड़ा, खूब है ये विद्यार्थियों का जोड़ा।

धुरन्धर—हां बेटा सन्नू ! अब तुम भी अपनी कला का प्रदर्शन करो। यह भी क्या याद करेंगे किसी संगीतालय का निरीक्षण किया था, सुनाओ राग जमालगोटा।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सन्नू—राग जमालगोटा में ७ सुर १ असुर। षड्ज बैठा हुआ, ऋषभ उतरा हुआ, गांधार गढ़ा हुआ, मध्यम मरा हुआ, पंचम पिचका हुआ, धैवत धड़कता हुआ, निषाद निचुड़ता हुआ।

गणेशानन्द—(एकदम चकित होकर) हें, मध्यम मरा हुआ, पंचम पिचका हुआ ?

धुरन्धर—(अभिमान से हंसकर) अजी गणेशानन्द जी, यह विषय बड़ा क्लिष्ट है, बड़ा गूढ़ है और विद्यार्थी कूढ़ है। भरत ने स्पष्ट लिख दिया है: मृदुपंचमो भवेन्यासः मध्यमे मृत्युयोगेहम्। इस विषय में आचार्य भैंसपति जी ने बड़ी खोज की है। आपने उनके दर्शन नहीं किये अभी तक ?

गणेशानन्द—नहीं भगवन् !

धुरन्धर—उनकी निर्मित तारतोड़ वीणा भी नहीं देखी आपने?

गणेशानन्द—ना महाराज !

धुरन्धर—हरे हरे ! जीवन व्यर्थ ही गया। तब आप इस विषय की गहराई में न जाइये, वरना डूब जायंगे। हां जी सन्नू, चलो आगे राग 'जमालगोटा'।

गणेशानन्द—यह नाम तो मैंने आज ही सुना है, इसकी सरगम क्या है महाराज ?

धुरन्धर—जमालगोटा की सरगम बड़ी विचित्र है, आप सुनेंगे तो अभी दीर्घशंका के लिए प्रस्तुत होना पड़ेगा।

गणेशानन्द—कोई चिन्ता नहीं, संगीतकला के लिए मैं बड़े से बड़ा त्याग करने को तैयार हूं।

धुरन्धर—साहसी प्रतीत होते हैं, हां बेटे सन्नू !

सन्नू—राग जमालगोटा, ताल घोटमघोटा, मात्रा ४२०, समय रात्रि का आठवां प्रहर। आरोहावरोह—सा रे ग धा प नि सां, सां नि प धा ग रे सा। पंचम एकदम उतरा हुआ है।

गणेशानन्द—वाह वा, जियो। जमालगोटा को घोट-घोटकर

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पिया। क्या विचित्र आरोहावरोह है। धन्य धुरन्धर जी, आपके शिष्य संगीत के क्षेत्र में क्रान्ति मचा देंगे, आग लगा देंगे।

धुरन्धर—उतरा हुआ पंचम ही इस राग का वादी स्वर है।

गणेशानन्द—अहा हा, पंचम को उतारने का हौसला भी आपने खूब दिखाया है। जिस कार्य को बड़े-बड़े दिग्गज संगीत-सम्राट, संगीताचार्य भी न कर सके वह आपने कर दिखाया है।

धुरन्धर—अजी श्रीमान, यह एक रहस्य है जो हरएक को बताया नहीं जा सकता, किन्तु आप संगीत के मर्मज्ञ हैं, बड़ी दूर से पधारे हैं, अतिथि हमारे हैं।

ताले खां—आफत के मारे हैं।

धुरन्धर—चुप बे तल्लू। बीच में बोलता है, रस में विष घोलता है। हां, तो मैं निवेदन कर रहा था कि आप हमारे अतिथि हैं, इसलिए मित्र भी हैं, अतः हम अत्यन्त उदारतापूर्वक पंचम उतारने का रहस्य भी आपको बताये देते हैं। क्योंकि गुरु से कपट मित्र से चोरी···

सन्नू-मन्नू—दोय होंय छोरा, दस होंय छोरी।

धुरन्धर—(आंख निकालकर) खामोश! हां तो ऐसा हुआ एक दिन··· (स्वर बदलकर) यह तो आप जानते ही होंगे कि संगीत में तीन ग्राम होते हैं?

गणेशानन्द—हां-हां, सप्त सुर तीन ग्राम २१ मूर्च्छना।

धुरन्धर—वाह वा, वास्तव में आप गुणी हैं, अधिकारी हैं इस विषय के। हां, तो तीन ग्रामों के सब स्वरों ने मिलकर एक दिन मीटिंग की और सर्वसम्मति से यह निश्चित हुआ कि पंचम को अपने आसन पर अचल हुए युग के युग बीत गये। सदा किसीकी रही है न रहेगी। पंचशील की दुनिया क्या कहेगी। इसने तीन ग्राम पर चिरकाल से अधिकार जमा रक्खा है। अब वह समय

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
लद गया जबकि एक ही राजा या प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति वर्षों तक कुर्सी से चिपके रहें। अब मताधिकार का युग है। अतः तीनों ग्रामों के सुर सर्वसम्मति से पंचम को गद्दी से उतारते हैं।

गणेशानन्द—धन्य शास्त्रीजी! बलिहारी!! मुझे आपसे मिलकर इतनी प्रसन्नता हुई है कि खुशी के मारे मेरा पेट फटा जा रहा है, दुपट्टा हटा जा रहा है, कलेजा कटा जा रहा है।

धुरन्धर—बेटा ताले खां! पंडितजी को मृदंगभास्कर चूर्ण खिला दे और बागेश्री का इन्जैक्शन लगा दे। तबियत झक्क हो जायगी, आवाज़ फक्क हो जायगी और इनको दो-चार रेला परन ऐसे सुना दे कि जिससे इनके हृदय की गति लय में चलने लगे, पगड़ी हिलने लगे, कलेजे की बिगड़ी हुई घड़ी टिक-टिक करने लगे।

ताले खां—शिरीमान को क्या सुनाऊं? हाथी परन, घोड़ा परन, ऊंट परन, गधा परन, कहिए तो लाल किले का बाज सुनाऊं, आगरे का ताज सुनाऊं, मोहरा सुनाऊं, मुखड़ा सुनाऊं, कलेजे का टुकड़ा सुनाऊं, अपना सब दुखड़ा सुनाऊं?

गणेशानन्द—अहा, न मैंने ऐसे विद्यार्थी देखे न गुरू, कर दो शुरू। आज की संगीत-चर्चा सुनकर मैं हक्का-बक्का रह गया।

ताले खां—नवहक्का, दुपल्ली, तिपल्ली, चौपल्ली, छिपकल्ली, तोप के बोल, बन्दूक के बोल, पिस्तौल के बोल···

गणेशानन्द—बस-बस भय्या, कमाल हो गया।

ताले खां—कमाली चक्करदार, तीया और रेला, अमरूद और केला, सारंगी और बेला, गुरूजी का चेला, सब सुना सकता है आपको।

लल्लू—मेरे ताऊजी जब तिताले का तूफान मेल चलाते थे तो पैसेन्जर ट्रेन रुक जाती थी, गार्ड और टीटी कुश्ती लड़ने लगते थे। ताऊ की संगत करने से बड़े-बड़े ताऊ घबराते थे, कहार कन्नी काटते थे। सिर्फ हमारे गुरूजी श्री श्री नौ करोड़ नौ श्री धुरन्धरा-

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
चार्य जी की सामर्थ्य थी जो उनकी संगत करने का साहस रखते थे।

ताले खां—अहाहा, दोनों की जुगलबन्दी होती थी तो कुत्ते भौंकते थे, गधे रेंकते थे, दुलत्ती फेंकते थे। वो समां बंधता था कि सुनने वाले रो जाते, बेखुदी में खो जाते।

सन्नू—हमारे गुरूजी की तालीम क्या मामूली है, आपने संगीत की शिक्षा छोटी लाइन में मथुरा कैंट तक, बड़ी लाइन में टूंडला जंक्शन तक पूरी करके बोम्बे सैन्ट्रल से 'संगीत धुरन्धर' की डिग्री हासिल की है।

ताले खां—और फिर रियाज ! क्या कोई रियाज करेगा ! तानपूरा बजाते-बजाते एक अंगुली घिसकर खत्म हो गई, दूसरी से बजाने लगे तो वह भी एक संगीत-सम्मेलन के स्टेज पर गिर पड़ी, आजकल आप चम्मच से तानपूरा बजाते हैं, हमीर का हलवा बनाते हैं, शागिर्दों को खिलाते है।

गणेशानन्द—हमीर का हलवा ? (धुरन्धर से) धुरन्धर जी महाराज, उसकी कुछ प्रसादी हमें भी दीजिए ना।

धुरन्धर—मेरा गला तो आज कुछ खराब हो रहा है, उसका कुछ दिग्दर्शन अपने शिष्य द्वारा कराता हू : देखिये, हमने हमीर, हिन्डोल, हसककड़ी और हंसध्वनि इन चारों रागों को घोट-पीस-कर यह हलवा तैयार किया है। विशेष रूप से इसमें राग हमीर की चसक है इसीलिए इसका नाम 'हमीर का हलवा' रक्खा गया है। हां बेटा सन्नू, सुनाओ हमीर का हलवा।

(ताले खां कनस्टर सम्हालता है)

धुरन्धर—हां तो पहले राग का उठाना देखिये हां, बेटे सन्नू!

सन्नू—सासा रेरे गागा मामा पापा धाधा सांसां (आरोह करते-करते धीरे-धीरे उठकर खड़ा हो जाता है) सांसां निनि धाधा पापा मामा गागा रेरे सासा (अवरोह करते-करते धीरे-धीरे बैठता है)

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धुरन्धर—अब सुनिये इस राग का एक ध्रुपद—

सन्नू—गुनिजन गावत हमीर।

सम्पूरन ठाठ जोड़, रागन की आंख फोड़।
मारि-मारि मुक्कन सों मध्यम के दांत तोड़॥
नैनन सों झरत नीर, गुनिजन गावत हमीर
वादी सुर धैवत कै वादी को उठ्यो सूल,
सम्वादी गान्धार गदहा सौ गयो फूल।
खाइ मरे अधिक खीर, गुनिजन गावत···
सोयो सो खोयो रे, मूरख अब जाग-जाग,
बांटते धुरन्धर जू हलवा हम्मीर राग।
महफिल में भई भीर, धा धा धा धनिक धीर,
पा पापा पिनक पीर, गुनिजन गावत हमीर।
गुनिजनगा, गुनिजनगा, गुनिजन गावत हमीर।

(गाना समाप्त होने पर सब वाह-वाह का शोर मचाते हैं; उसी समय मकान वाले लाला का प्रवेश, साथ में एक व्यक्ति लाठी लिए हुए है)

लाला—(दोनों हाथों को ऊपर उठाकर) शान्तम् शान्तम्। आपकी जि बीमारी अभी दूर नाहें भई महाराज? न सोओ, न सोमन देउ। न खाली करो, न किरायो देउ।

धुरन्धर—(लठैत को देखकर) किराया? हमने कब मना किया है किराये को? ताले खां, दे दो किराया।

ताले खां—अहा, किराना घराना भी अपना नाम कर गया, हाय उस्ताद अब्दुलकरीम खां, तुम कहां गये? (रोता है, साथ-साथ सन्नू-मन्नू भी रोते हैं।)

लाला—(आश्चर्य से) हैं, जि क्या चक्कर है, अरे अब्दुल-करीम खां को रोइ रहे हौ या किराये को?

सन्नू—कितना बाकी है तुम्हारा किराया?

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लाला—बीस रुपैया पच्चीस पैसा।

सन्नू—५ मिनट गाना सुनाने के हम लोग पचास रुपये लेते हैं, बाकी २९ रुपये ७५ पैसे दे जाइये और रसीद ले जाइये।

लाला—(आंख बदलकर) अच्छा! ऊधमसिंह···

ऊधम—(लट्ठ ज़मीन पर मारकर) हुकुम सेठजी!

लाला—उठाओ तानापूरा और तबला।

(ऊधमसिंह गणेशानन्द का तानपूरा उठाता है)

गणेशानन्द—(चिल्लाकर) अरे भाई यह तो मेरा है।

(ऊधमसिंह कुछ नहीं सुनता, तबला भी उठाता है और चल देता है, पीछे-पीछे मकान वाला भी जाता है)

गणेशानन्द—(उनके पीछे-पीछे) लेकिन यह तानपूरा तो मेरा है, लाला, मैं तो परदेशी हूं। अपने किरायेदार का ले जाइये, यह तो मेरा है, अरे यह तो मेरा है। (गणेशानन्द भी उनके पीछे-पीछे चलता जाता है।)

धुरन्धर और सन्नू—(मिलकर गाते हैं)

ना घर तेरा ना घर मेरा, चिड़िया रैन बसेरा है।
कहत कबीर सुनो भई साधो, सब जग झूंठ झमेला है।
ना घर तेरा, ना घर मेरा···

पटाक्षेप

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मनसुखा-लीला

पात्र :

मनसुखा—कृष्ण का विदूषक सखा
श्रीदामा—मनसुखा का साथी
मालती—गोकुल की सखी
चित्रा
मोहिनी } मालती की सहेलियां
कृष्ण—बाल रूप कन्हैया
यशोदा—कृष्ण की माता

पहला दृश्य

(बांसुरी की ध्वनि के साथ मनसुखा और श्रीदामा का गीत गाते हुए प्रवेश)

तू नन्दगाम में आइ जइयो री, सुनि बरसाने वारी।
घौनी में लौनी भरि लइयो, अपने हाथ खबाई जइयो री सुनि···
छाछ-मठा मोहि कछू न भावै, माखन-दही चटाइ जइयो री, सुनि···

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो तेरो सास लड़ै घर तोसों, वाकू सींग दिखाइ अइयो री, सुनि···
जो तेरो बालम आंख नटेरै, मीठी बात बनाइ अइयो री, सुनि···
अतौ-पतौ पूछै जो ननदी, उलटी गैल बताइ अइयो री, सुनि···
तू नन्दगाम में आइ जइयो री, सुनि बरसाने वारी···

मनसुखा—चौं भइया श्रीदामा, ऐसी बंसी बजाइवौ हमकू नाहिं सिखाइ सकै का ? बड़ी मीठी लगै सखे !

श्रीदामा—अरे मनसुखा, बंसी मीठी करिवे में कहा देर लगै यार, नेंक-सौ गुड चिपकायौ और मीठी भई ।

मनसुखा—तू तौ ठठ्ठा करै हमते; बताइ दै भइया !

श्रीदामा—कहा करैंगौ बांसुरी सीखकें। तू गाओ कर, मैं बजाओ करूं; तू नाचौ कर, मैं नचाओ करूं; चौं कैसी रही ? हिःहिः हिः (हंसता है)

मनसुखा—हंसी में डारि देयै बात कूं। हमतौ या मारै सीखनौ चाहतें कै बरसाने की सखी वैसैं तो बात करैं नाहैं; बंसी सुनि कै लट्टू है जायें और फिर तौ दही पै दही, माखन पै माखन सैंत-मैंत में चलौ आवै ।

श्रीदामा—अच्छा लला, या मारै बांसुरी बजाइवे कौ चाव लग्यौ है; बड़ौ पेटू है यार, जब देखौ तब खाइबे कूं तैयार !

मनसुखा—अरे भइया, संसार में और है ही का। माखन खाओ, मिश्री खाओ, नाचौ-गाओ, गाय चराओ। देख लै अपने कन्हैया कों, बांसुरी के सहारे खूब मौज उड़ावै पट्ठा; आप खावै माखन और हमें पियावै मट्ठा ।

श्रीदामा—कन्हैया कू बांसुरी बजाइवे सूं ही माखन नाहैं मिल जाय; वा में बड़े-बड़े गुन भर रहे हैं। मोहन के रूप और गुण पै मोहित है कैं ही तो ब्रजबाला वाकी पूजा करै !

मनसुखा—तौ भइया, हमारौ थूथरौ बैमाता नैं सुन्दर नाहिं बनायौ तौ यामें हमारौ कहा दोष है ? वैसे तौ हम कन्हैया सौं

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
गोरे हैं, पर और बातन में कोरे हैं। वाकी बराबर चालाकी हममें कहां है? देखो न, माखन-माखन तौ आप खाइ जावै और छाछ दैकें हमें बहलाय देवै। इनहीं बातन सूं हमारी आतमा पजर जायै यार! कोई ऐसी जुगत लगाओ कै हमपै हू ब्रज की सखी रीझन लगैं और माखन खवाओ करैं।

श्रीदामा—अच्छा तौ एक बात हमारी मानैगौ मनसुखा?

मनसुखा—हां-हां बेगि बताइ।

श्रीदामा—मैं कहूं सो करैगौ?

मनसुखा—कछू बतावैगौ हू कै वैसे ही प्रान चाटि रह्यौ है।

श्रीदामा—तौ देख, आज कन्हैया तौ निधिबन गयौ है, बड़ी अच्छी मौकौ है। वाके घर चलिकें मैया पै ते पीताम्बर, मुकुट और पटुका मांग लामें, उनकूं पहरि कें और मुकुट लयाइकें तू तौ बनजा कृष्ण और मैं बन जाऊं तेरौ सखा; दोनों मिलकें चलौ बरसाने। फिर देखौ कैसी पूजा होवै यार! सब हैं जायं दिलद्दर पार।

मनसुखा—सो तो ठीक है, पर म्हौड़े को रंग कैसे बदलौ जाय? कन्हैया के रंग में और हमारे रंग में तौ बड़ौ अन्तर है भैया!

श्रीदामा—अरे तो कारौ म्हौं करिबे में कहा देर लगै भले आदमी! नेंक-सौ कौला और खरिया मिलायकें पोत लेउ, हैगयौ श्याम रंग।

मनसुखा—अच्छा तौ अब चलौ जल्दी, जसोदा मैया सों कपड़ा-लत्ता लै आवें।

("तू नन्दगाम में आइ जइयो" गाते-गाते दोनों का प्रस्थान)

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूसरा दृश्य

[यशोदा का घर]

(यशोदा दही बिलोते हुए गा रही है :)

निधिबन सों श्याम न आयौ री, निधिबन सों।
बिनु मोहन घर-आंगन सूनौ,
उमंगि रह्यौ हिय नेहा दूनौ,
मोरे नैन नीर भरि आयौ री, निधिबन सों।
निधिबन की ग्वालिन मतवारी,
मटकावें अंखियां कजरारी,
मैंने टोना हू नाहिं लगायौ री, निधिबन सों।
जबलौं मेरौ स्याम न आवै,
तबलौं कोऊ काम न भावै।
वानें माखन नाहें खायौ री, निधिबन सों।

(मनसुखा और श्रीदामा का प्रवेश)

मनसुखा—ले पट्ठे, मैया तौ मठा चलाइ रही है।

श्रीदामा—चलो खूब पीमिगे।

मनसुखा—तू चल अगारी।

श्रीदामा—(मनसुखा को आगे धकेलकर) तू ही चौं न चलै।

मनसुखा—मो पै किल्लावैगी।

श्रीदामा—मोकों मारैगी।

मनसुखा—बड़ौ कायर है यार!

श्रीदामा—तू बड़ौ नाहर है यार!

मनसुखा—(अकड़कर) अच्छा तौ लै, पहले मैं ही बढ़ूं सूली पै। (आगे बढ़कर) अरी मैया! ओ मैया!!

यशोदा—अरे को है भैया?

मनसुखा—मैया, हमें एक चीज दै दै आज।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यशोदा—बोलौ बेटा, कहा चहिए ?

मनसुखा—तौ पहिलै हां कहि दै, तब बतामिगे। हाल तैनैं करि दई नाई, तौ सब खेल है जायगौ चाई-माई।

श्रीदामा—ना तेरे चहिएं बछरा-गैया, ना तेरी दूध-मलैया री !
घन-दौलत हम कछू न मांगें, हामी भरिलै मैया री !!

यशोदा—अरे कछू बताओ तौ सही कै गीत ही गावत रहौगे। होती चीज कू नाहीं करूंगी नहीं और अनहोनी चीज कू हामी भरूंगी नहीं।

(मनसुखा कोहनी मारकर श्रीदामा को चीजें मांगने का इशारा करता है)

श्रीदामा—मैया, एक मुकुट, एक पीताम्बर और एक माला दै दै, आज हम मिलिकें रास करिगे।

यशोदा—रास ! कन्हैया के बिना कैसौ रास ?

श्रीदामा—(स्वत:) 'है गयौ सत्यानाश' मैया री, कन्हैया तौ निधिबन गयौ है। आज हम और काहू छोरा कूं कन्हैया बनाइकें रास करिगे।

मनसुखा—बालकन को खेल ही जो ठहरौ मैया !

यशोदा—बेटा, मेरे लिए तौ जैसौ कन्हैया वैसे ही तुम, कपड़ा तौ मैं तुम्हें दै दुंगी, पर देखौ, मेरे लाला कौ चीरा-पटुका कोई ग्वालिन चुराइकें न लै जाय, नहीं टोटका कर देगी, भला ! देखौ वा कौने में टंग रहे होंगे, लै जाओ।

मनसुखा—धन्य है मैया, बनि गयौ काम, चलौ भइया !

श्रीदामा—चलें यार ! मैया, नेंक-सौ मठा तौपिवाइ दै। बहुत दिना में आये हैं देखि लै···

मनसुखा—और मैया, मोकूं तौ नेंक-सी लौनी दै दै; मठा मोकूं अनुकूल नाहें। (यशोदा मठा व माखन देती है)

(यशोदा का प्रस्थान; मनसुखा-श्रीदामा सामान लेते हैं)

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीदामा—लेउ मनसुखासैन, अब तौ मजा आइजाइगौ। जा समै बु नथवारी हमकूं-तुमकूं देखैगी, तौ हा-हा खाइगी, हा-हा।

मनसुखा—कौन-सी नथवारी रे ?

श्रीदामा—कैसौ भोरौ बन रह्यौ है लल्ला, वा नथवारी कों नांय जानें, ऐसी है जैसे रसगुल्ला !

रसिया

श्रीदामा—लाला तोई कों बुलाइ गई नथवारी, लाला तोई कों।
मनसुखा—मोहि कौन-सी बुलाइ गई नथवारी, मोहि कौन-सी ।।
श्रीदामा—वा नथवारी कौ नाम न जानूं,
मनसुखा—वा नथवारी कौ गाम न जानूं।
दोनों—बरसाने वारी प्यारी, लाला तोई कों···
श्रीदामा—वा नथवारी कौ भेद ना जानूं,
मनसुखा—घर-आंगन नाहें पहचानूं।
दोनों—ऊंचे महल-अटावारी, लाला तोई कों···
श्रीदामा—वा नथवारी की गैल न जानूं,
मनसुखा—रूप-सरूप नाहिं पहचानूं।
दोनों—लाल बिन्दु, कजरावारी, लाला तोई कों—

(दोनों का गाते-गाते प्रस्थान, दूसरी ओर से माखन की मटकियों के साथ मालती, चित्रा तथा मोहिनी आदि सखियों का प्रवेश)

अइयो-अइयो जू कन्हैया नन्दलाल, सुनाओ प्यारे बांसुरिया।
ऊंचौ गाम-धाम बरसानौ, खेलें गोपी-ग्वाल।
दुलहिन प्यारी राधिका जी, दूल्हा है नंदलाल।
अइयो-अइयो जू···
मोरमुकुट सिर सुन्दर सोहै, गल बैजन्ती माल,
पीताम्बर की छटा निराली, मुरली मधर रसाल।
अइयो-अइयो जू···

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोक-लाज, कुल-कानि छोड़ हम भाजी फिरें लगन में,
घर में ढूंढें, बन में ढूंढें; ढूंढें कुंज गलिन में।
अइयो-अइयो जू···

चित्रा—भैन मालती, और दिना तौ याही कुंज में स्यामसुन्दर के दरसन है जाओ करते, आज तौ यहां सूनौ ही सूनौ है।

मालती—सखी, आज पूनौ है; कहूं रास रचाइ रहे होंगे मुरलीधर।

चित्रा—तौ चलौ, फिर बंसीबट की ओर देखें।

मालती—चित्रा जीजी, जा बंसी ने हमारे बड़े प्रान पिये हैं। मेरे हाथ परि जाय तौ सौत कूं दुबकाय दऊं कोठे के आरे में, बन्द कर दऊं तारे में।

मोहिनी—और मोय मिल जाय तौ दारी कूं खाइ जाऊं, कच्ची चबाइ जाऊं।

चित्रा—अरी बीर, जादू बांसुरी में नाहें, बांसुरीबारे में है। बांसुरी छीन कें कहा पावैगी; वो तौ बिचारी जड़ है। चेतन कूं चीन्ह और वाही कूं छीन।

(बांसुरी की आवाज़)

मालती—(विह्वल होकर) अहा हा हा, आओ बंसीबारे! पधारौ मोहन प्यारे!!

चित्रा—कहां हैं बंसीबारे, बावरी है गई है का?

मालती—अरी, तैंनें नाहिं सुनी बंसी की धुन?

चित्रा—(कुछ ध्यान लगाकर सुनती है) हां···नेंक-नेंक सुनी तौ हती पर···

मालती—अब कैसें सोच में परि गई चित्रा? पहिलै तौ कह रही, बांसुरी में जादू है ही नाहें!

चित्रा—मोकूं तौ जि मोहन की बांसुरी की धुन मालूम पर नाहें।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मालती—मोहन, देखि तो आइ रहे हैं मनसुखा प्यारे, बंसी-बारे, नन्ददुलारे, देखि वो आइ रहे हैं।

(कृष्ण के वेश में मनसुखा का प्रवेश, साथ में श्रीदामा)

मालती—(हाथ जोड़कर) बलिहारी, श्रीठाकुरजी महाराज!

मुरलीधर की यह सुन्दर छबि, नैनन सों बिसरै न बिसारे।
आइ बसौ इन नैनन में, तब चैन परै मनमोहन प्यारे॥

श्रीदामा—सखी, जो कन्हैया नैनन में घुसि गयौ तौ ऐसौ मारैगौ करका, सब ढीलौ है जाइगौ चरखा।

चित्रा—(फटकारकर) जा मिटे मूसटा, तोसों को बोलि रह्यौ है।

श्रीदामा—देखि लै कन्हैया, गारी दै रही है, मूसटा कह रही है।

मनसुखा—तौ तू बीच में चौं बोलि रह्यौ है, फटे ढोल!

श्रीदामा—(आंख नटेरकर) अकड़ैगौ तौ खोल दुंगो पोल।

मनसुखा—(नरमी से) अरे भैया, मैं तौ तेरी-सी कहि रह्यौ हूं, रिस मत होय। (सखी से) लाओ सखी, कछु माखन-मिश्री होय तौ देउ हमारे सखा कों।

मालती—पहलै बांसुरी तौ सुनाओ, तब मिलैगौ माखन।

(मनसुखा, श्रीदामा द्वारा बांसुरी बजाते हुए सम्मिलित रसिया)

माखन दै दै नई गुजरिया रसिया ठाड़े तेरे द्वार,
ठाड़े तेरे द्वार गुजरिया ठाड़े तेरे द्वार, माखन दै दै···
ये रसिया तेरे नित्य न आवें,
प्रेम होय तब दरसन पावें,
दूध-दही कौ भोग लगावें,
ऐसौ औसर, सुघर ग्वालिनी मिलैनबारम्बर, माखन दै दै ··
हिरदे की चौकी बिछाइलै,
नेहा कौ चन्दन लगाइलै,
मीत हमें अपने बनाइलै,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
Digitized by eGangotri
Digitized by eGangotri

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुतरिन पलंग बिछाय पलक की करिलें बन्दकिबार, माखन···

सास ननद को डर मत करियो,

घमकामें तो धीरज धरियो,

प्रेम-पंथ को छोर पकरियो,

दै दै दान सूम की सम्पति, जीवन है दिन चार, माखन···

सबसों तोरि नेह की डोरी,

यमुना पार उतरि चल गोरी,

निधरक खेलें हम तुम होरी,

स्याम रंग चढ़ि जाय जा दिना, है जाय बेड़ा पार, माखन···

चित्रा—मालती जीजी, आज ठाकुरजी की बांसुरी कछू बेसुरी-सी मालुम परै, मौकूं तौ कछू दार में कारौ दीखै।

श्रीदामा—(स्वतः) लै बेटा, आई आफत (प्रकट) अरी सखी, आज हमारे कन्हैयाजी की बन्सी को पत्ता कछू ढीलौ है गयौ है, यासों सुर कहूं के कहूं लुढ़क जावें। फिर सुनाऊंगे तुम्हें काहू दिना बंसी। लाओ माखन निकासौ।

मालती—सो बात नाय होयगी लाला, बिना बांसुरी सुनाये माखन नाहें मिलैगौ।

मनसुखा—मिलैगौ कैसे नाहें।

(मनसुखा व श्रीदामा छीनकर माखन खाते हैं)

चित्रा—चलो मालती जीजी, आज तौ धोके में लुट गये।

मोहिनी—(जाते-जाते) सेंतमेंत कौमाखन खाइबे में तुम्हें है-आहू नाहिं लगै बजमारेओ। (सखियों का प्रस्थान)

मनसुखा—(खुश होकर) वोम्मारा भैया श्रीदामा, कहो कैसे स्वाद आये माखन में।

श्रीदामा—बेटा, स्वाद के चक्कर में भौत मत परै, जो आइ गयौ कन्हैया तो सबरौ स्वाद किरकिरौ है जाइगौ।

मनसुखा—अरे हां-हां, कन्हैया आइ जाइगौ तौ का हमें खाइ

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाइगो। मुद्दत सो माखन खाइ रह्यो है, आज नेकसो हमने खाइ लियो तौ कहा पल्लौ परि गई। बड़ी चसक आइ रही है श्रीदामा। देख और कोई गोपी आइ रही है का ?

(श्रीदामा देखता है, उसके चेहरे की मुद्रा बदलती है)

मनसुखा—कहा बातै ? कैसें घबराइ रह्यौ है ?

श्रीदामा—लै सारे आई आफत। कन्हैया कूं लैकें वे ही सखी आइ रही हैं।

(कृष्णजी तीनों सखियों सहित प्रवेश करते हैं, मनसुखा कांपने लगता है)

चित्रा—देखौ महाराज, आपकौ भेस धरिके जि दोनों हमारौ सब माखन खाइ गए हैं।

कृष्ण—(हाथ जोड़कर व्यंग्य से) जै हो कृष्ण कन्हैया, बंसी के बजैया, माखन के चुरैया, बलदाऊ के भैया, जसुदा के छैया ! आज कांप क्यों रहे हो महाराज ?

श्रीदामा—महाराज ! याकूं तीसरे दिना जूड़ी आइ जावै, कैऊ औषधी दई हैं, पर कछू लाभ नाहें भयौ, तब एक स्याने नैं बताई कै याकूं कृष्ण जी के कपड़ा पहराइ कै नचाओ, तब भाजैगी जूड़ी। सोई हम जशोदा मैया पै गये, कपड़ा मांगि कै लाये, जाकूं पहराये, पर तौहू जाड़ौ नाहें गयौ।

मालती—(मुकुट खींचकर) हाय मिटे मनसुखा, तो में जि गुन ?

मनसुखा—(हाथ जोड़कर) अरी सखी, कछू मेरी हू तौ सुन !

चित्रा—(कान पकड़कर) मिटे, रिस तौ ऐसी आवै, तेरौ थूथरौ कुचल दऊं।

मनसुखा—अरे टूट गयौ कान, बचइयों भगवान।

चित्रा—सबरौ तौ माखन लील गयौ और ऊपर ते जीभ चलाय

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रह्यौ है।

मनसुखा—सखी, तेरौ माखन बड़ौ ठंडौ है, जब सों खायौ है, जाड़ौ चढ़ि आयौ है।

चित्रा—(डंडा मारते हुए) ला, तेरौ जाड़ौ छुड़ाऊं मिटे!

(पिटते-पिटते मनसुखा और श्रीदामा भाग जाते हैं)

मालती—ठाकुर जी महाराज, आज तौ हम भौत घाटे में रहे, अब तौ मुरली सुनाइकें हमारौ घाटौ पूरौ करनौ परैगौ तुमकों।

कृष्ण—वाह सखी, माखन खाय गयौ मनसुख ाजलैया और बांसुरी सुनावैं कृष्ण कन्हैया? ये खूब रही!

चित्रा—(बांसुरी छीनकर) अब बोलौ, सुनाओगे कै नांय?

(कृष्ण का गायन और सखियों के साथ नृत्य)

कृष्ण—प्यारी चित्रा सखी हमारी, लाओ बंसी दै देउ मोय!

या बंसी बिन चैन न पाऊं,
या बिन कैसें गाय चराऊं;
या के बल गिरिराज उठाऊं।
शिव-ब्रह्मा-सनकादिक याकौ पार न पावैं कोय
प्यारी चित्रा सखी हमारी, लाओ बंसी दै देउ मोय!!

पटाक्षेप

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab, Jammu

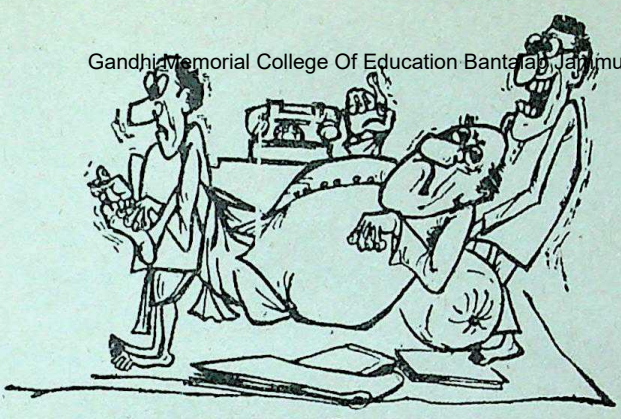

लल्ला को ब्याह

पात्र :

सेठजी

मुनीमजी

महाराज

जग्गो—सेठजी का पुत्र

इन्सपैक्टर

कोसो वाले लाला

[स्थान : सेठजी की गद्दी]

(बहीखाता, टेलीफून, पंखा, मसनद, संदूक आदि सामानों से युक्त सेठ खेंचूमल बटोरचन्द का फर्म···टेलीफून की घंटी बजती है)

सेठजी—देखियों मुनीमजी, कौन है ?

मुनीम—(टेलीफून उठाकर) हलो···हां-हां सेठ खेंचूमल बटोरचन्द के यहां से बोल रहे हैं, तुम कहां से बर्राय रहे हो··· पाटिया से ? अच्छा···हां-हां, मौजूद हैं सेठजी, जोहैकाए बात करो। (टेलीफोन सेठजी को देता है)

सेठजी—हलाऊ ···जै गोपाल, कहो साब छप्पोमल, गुड़ का

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
भाव बंद भयौ कल्ल पौने सात आना···नांय जा बखत तौ कछू नांय करनौ···न···हत्तुमारेका, आज कछू नांय करनौ···हां-हां फिर देखिगे। (टेलीफून रखकर) जि दलाल तौ साब खोपड़ी कूं चाटै ही जायें। जैसे-तैसें तौ जा अवमूल्यन के हू-हल्ला में थोड़ी-सी रकम इकट्ठी भई है, अब एकाध सौदा उल्टौ परि गयौ तौ सब तरावट निकर जायगी। जामारे मुनीमजी, मैं तौ भौत बच-बचकै सौदा करूं, फूंक-फूंक के पैर धरूं।

मुनीम—ठीक है लाला, नफा की पूंछ बड़ी चौकनी होवे, जोहै-काए, नेंक निघा बची और पूंछ सरकी, सब रकम निकल जावै घर की। हुसियारी कौ काम है लाला। जा समै बाजार ऊंचौ-नीचौ जाइ रह्यौ है, लल्ला जी को ब्याह ऊपर सै आइ रह्यौ है।

सेठजी—अरे हां, खूब याद दिवाई मुनीमजी! आज बुधवार है न, अपने लल्ला कूं देखिबे कोसी वारे लाला आवत होंगे! कै बजे हैं? अभी तौ समय है।···महाराज!

महाराज—(दूर की आवाज़) आयौ लाला!

(महाराज का प्रवेश)

सेठजी—देखौ महाराज, तुमकू इतने दिना है गये जा गद्दी पै, पर जि अकल नाहैं आई कै मौकौ-बे-मौकौ तौ देख लेउ करें। आज लल्ला कूं देखिबे वारे आइ रहे हैं और तुमने फटी पल्ली बिछाइ दई है।

महाराज—तौ मोकूं का खबरी लाला! नई पल्ली बिछावतूं तौ तुम वैसे हल्ला मचावतौ, इतनी जल्दी चौं बदल दई, कपड़ा तेज है गयौ है, फलानी बातैं, ढिमकी बातैं। नौकर की तौ सब तरह सूं आफत है, अरे तौ हां।

सेठजी—हत्तुमारेका, तौ ऐंठ के बात चौं कर रहे हो गुरू, जल्दी ठीक-ठाक कर देउ, तब तक हम रसोई जैम आमें। देखो महाराज, फकालैन पावै मोकूं सब मामलौ, लल्ला के हू कपड़ा

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बदलवामें है और मुनीमजी, आज तुम नेक अच्छो सो कुरता पहरकें अइयों, मुनीमकौऊ बड़ो असर परै बेटी वारे पै···जाओ, रोटी खाइकें आज जल्दी आइ जाओ। और देखो महाराज, ऊपर वारे कमरा में जो बाबूजी रह रहे हैं, २ घंटा के ताईं उनकी रेड़िया मांग लइयों। फिर तौ चकभका है जाइगो कोसी वारो, रौब गठि जाइगी हमारौ। वाके परदादे ने हूं ऐसे ठाठ नाहें देखे होंगे। (बाहर की ओर देखकर) लेउ लल्ला हू पढ़ि कै आइ गयौ।

(जग्गो का प्रवेश : महाराज का जाना)

सेठजी—कहौ बेटा, आज बड़ी देर करिकें आये ?

जग्गो—पिताजी, आज हमारे विद्यालय में पंचवर्षीय योजना पर एक निबन्ध लिखवाया गया था, उसीमें कुछ देर हो गई।

सेठजी—चौं बेटा जग्गो, जि पंचवटी की योजना कहा बवाल है ? कैऊ आदमीन के म्हों से सुनी है, कछू समझ में नाहें आवै।

जग्गो—पंचवटी की योजना नहीं पिताजी, पंचवर्षीय योजना।

सेठजी—हां-हां तौ जि कहा बीमारी है, कछु मालुम तौ परै ?

जग्गो—बीमारी नहीं पिताजी, यह हमारे देश की उन्नति के लिए सरकार द्वारा एक विशाल योजना तैयार की गई है, जिसमें करोडों रुपया खर्च करके बड़े-बड़े बांध बनाये जा रहे हैं, बिजली के प्लांट लग रहे हैं। इससे अन्न का उत्पादन बढ़ेगा। लाखों आदमियों को रोजगार मिलेगा···

सेठजी—हत्तुमारेका, हमें कहा मिलैगौ जि बताय। लाखन आदमियों सूं हमें का मतबल ?

जग्गो—पिताजी, आप तो हर बात में अपना ही स्वार्थ ढूंढ़ते हैं, गरीबों का कुछ ख्याल नहीं करते।

सेठजी—(हंसकर) हः हः हः अच्छा-अच्छा, ठीक है बेटा, अभी तू लल्ला है, कच्चौ घल्ला है, पकि जाइगो तब पक्कौ होइगो।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
अब तू जाई मेमन, कपड़ा वारे लाला, मोसी वारे लाला तोकूं देखिवे आमिगे, सो देख, नेंक बार-फार अच्छी तरियां काढ़ि कै अइयो, हां, और चाची पै काजर लगवाइ अइयो। जा···

(जग्गो का जाना)

सेठजी—मुनीमजी, हम तौ अपने लल्ला कों स्कूल त उठामिगे।

मुनीम—चौं लाला, का बात भई जोहैकाए ?

सेठजी—अरे उस्ताज, देखौ तौ सई, अबई नेंक पढ़ौ है, सोई पंचवटी की योजना की बात करन लगौ, गरीबन कों रुजगार दैवे की बात करन लगौ, हमकों स्वार्थी बतामन लगौ ! कोई इन बातन के ताईं पढ़वे थोड़े ही बैठारौ हो, वा साव वा !

मुनीम—अजी लाला, अभी नेंक और पढ़ि लेन देउ जोहैकाए, बिगर जायगौ तौ बिगर जाओ पर जि बात है कै सम्बन्ध तौ अच्छे घर ते है जायगौ, दहेज तो तगड़ौ मिल जायगौ ! एक बात है लाला, लल्ला अभी छोटौ है, विवाह के लिऐं साल दो-साल और ठहर जाओ तौ का नुकसान है ?

(महाराज का रेडियो लेकर आना)

सेठजी—चौं जी, यो सुनें हैं कै दहेज रोकिबे के ताईं कानून बनायौ जाइ रह्यौ है।

महाराज—अजी बनि गयौ कानून, मेरी-तेरी राजी तौ कहा करैगौ काजी, अरे तौ हां।

मुनीम—कछू नांहें कर सकै कानून हम लोगन कौ। लैवे-दैवे के टैम पै काउ कूं बुलाओ ही मत, चुप्पचाप नोट सरको करिंगे, तू जानै कै मैं जानूं। ऐसी-तैसी कानून की जोहैकाए।

सेठजी—मुनीमजी, आज तुम्हारी और महाराज की बातन सों हमें भौत खुसी भई है, अगले महीना ते एक रुपया महीना तुम्हारी और आठ आना महीना महाराज की तरक्की है जाइगी, भला।

महाराज—वाह लाला, कैसौ ऊंचौ दिल पायौ है, धन्य है

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तुम्हारे बाप-दादेन कूं, जो ऐसौ पूत जायौ है, कोई कर सकै इतनी तरक्की, अरे तौ हां।

मुनीम—लाला, आज हमकों खर्च-पानी दै देते तो जोहैकाए सौदा-सट्टौ लै आवते।

सेठजी—हत्तुमारेका, तुमकों ऐसे ही बखत खर्च की परै।

मुनीम—तौ साब, कैऊ दिना तौ मांग चुकौऊं, जोहैकाए, पिछलौ महीना पूरौ है गयौ और जा महीना में हू आज २२ दिना चढ़ गये। महंगाई के मारे नाक में दम है, रुपया सेर के गेहूं बिक रहे हैं, मट्टी के तेल के ड्यौढ़े दाम है गये, चीनी···

सेठजी—कछू महंगाई नायें कोई भूखन नांय मर रह्यौ, सिनेमा की खिड़की पै लैन लगी रहै, घंटा वारे हलवाई कौ सौनहलुआ बनत-बनत बिक जायै।

महाराज—सावन के अंधे कूं हरौ ही हरौ सूझै लाला, तुमकों तौ सौनहलुआ ही दीखैगौ, यहां तौ बेभर के हू लाले परि रहे हैं। आज हमें हू खर्चा मिल जातौ तौ नाज-पानी लै आवते, अरे तौ हां।

सेठजी—हत्तुमारेका, दोनों जने आज ही लामिगे नाज-पानी, आज नाहें मिलैगी तनखा।

महाराज—चौं नांय मिलैगी तनखा, अरे तौ हां?

सेठजी—(क्रोध से) अच्छै नांय मिलैगी। चौं नांय मिलैगी, चौं नाय मिलैगी, कान खायें जायें, खोपड़ी चाटे जायें। (सेठजी उठकर चले जाते हैं)

मुनीम—लेउ महाराज, लाला तौ घरकूं चले गये जोहैकाए, मोकों तौ ऐसी मालुम परै, सूधी उंगरियन सों घी निकसैगौ नाहें। मैं तुमकों एक जुगती बताऊं। (धीरे से) आज लल्ला को देखिवै कोसीवारौ बनियां आवैगौ···

महाराज—हां-हां।

मुनीम—बस गुरू, बाही के सामनें तगादौ कर देउ सुरू, तब

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
लाला की ऐंठ निकसैगी जोहैकाए।

महाराज—हाई मुनीम जी, तुम्हारी सों, जि बाम तुमन्नै खूब बताई, जा मौके कूं नांय छोड़नौ। आज कोसीवारे कूं भड़काइकें न भजाइ दऊं तौ मेरौ हू नाम खन्ना गुरू नाहें, अरे तौ हां।

मुनीम—(पैरों की ओर देखकर) गुरू, आज जूता तौ बड़े ठाट के पहरि कै आये हौ, कितने के लाये ?

महाराज—अजी मुनीमजी, जूता खरीद कै पहरे तौ परि गये पूरे।

मुनीम—तौ फिर ?

महाराज—तौ फिर काहे की, कल्लि रात कूं बौहरे जी के यहां रामायन कौ अखंड पाठ है रह्यौ, वहीं से छांटि कै पहरि आये।

राम झरोखा बैठिकें सबकौ मुजरा लेंय।

जैसे जाकूं चाहिए तैसे ताकूं देंय ॥ सियावर रामचन्द्र शंकर हरि ओ३म्।

भगवान बड़े दयालू हैं, सबकी इच्छा-पूर्ति करें।

मुनीम—विचार तौ तुम्हारे धार्मिक हैं गुरू !

(बाहर से खट-खट की आवाज़)

मुनीम—देखियों बाहर कौनें ? जोहैकाए, कोसीवारे आइ गये दीखें।

(महाराज का बाहर जाना; कोसीवारे को लाना)

महाराज—बैठो लाला, बिराजौ ! मुनीमजी, जेई हैं लाला कोसीवारे। सेठजी कौ लल्ला है न जग्गो, वाही कौं देखिवे आये हैं।

मुनीम—आपके आइवे की तौ आज बड़ी बाट देखी जाय रही लाला ! सेठ जी अभी-अभी घर कों चले गये हैं जोहैकाए, तब तक रेड़िया सुनो···

(रेडियो खोलता है किन्तु घर्र-घर्र की आवाज़ के सिवा कुछ नहीं बोलता)

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

CC-0. Mahatma Gandhi Memorial College Hindi Vidyapeeth, Dehradun. Digitized by eGangotri

कुछ सुनाई नहीं देता।

महाराज—लाला जी, आप जानौ ही हौ, मगैनू रेड़िया तौ ऐसे ही बोलें।

कोसीवारे—मगैनू रेडियो ?

महा०—और का, हमारे लाला ऐसे बुद्धिमान थोड़े ही हैं अरे तौ हां, जो बैठे-ठाले फिजूल खर्चा करें। अजी साब, जब मगैनू चीज से काम चल जाय तौ चौं ५०० रुपैया में आग लगाई जाय। इतनी रकम ब्याज पै लगामें तो १० रुपैया महीना घर बैठे आमें, और फिर टूट-फूट, लैसंस, बिजली, बीस टंटे हैं लाला! हमारे सेठजो तौ जुक्ती से काम लैवे वारे हैं। घर पै जितनो फरनीचर है सब किराये कौ है।

कोसी०—अच्छा! फरनीचर भी किराये का है? मकान तौ घर का होगा ही?

महा०—है तौ घर कौ ही, पर सेठानी के नाम कर दियो है।

कोसी०—क्यों?

महा०—अजी कुरकी, बारंट बीस झगड़े हैं। जा मामले में हमारे सेठजी के बिचार बड़े तगड़े हैं।

कोसी०—अच्छा, हां तो मुनीम जी, अभी कितनी देर है लाला जी के आने में?

महा०—अजी बैठौ सान्ती सै, आवत ही होंगे। ऐसी का जल्दी है लाला, अरे तौ हां।

मुनीम—कहौ साब लालाजी, जोहैकाए आपके यहां कैसो काम-काज चल रह्यो है आजकल?

कोसी०—ठीक है मुनीमजी, हमारे यहां तो ब्याज-भाड़े की आमदनी है, पिछली साल दो-तीन आसामी फेल हो गई थीं, उन-पर हमारी भी कुछ रकम मारी गई। आजकल तो कुछ ऐसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
Digitized by eGangotri
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रिवाज हो गया है मुनीम जी, कि जान-बूझकर पहले से स्कीम बनाकर लोग-बाग फट्टा फेल कर देते हैं और दिवाला निकाल देते हैं। किसी-किसीने तो ३-३ बार दिवाला निकाला है।

महा०—निकारौ होयगो साब तीन-तीन बार। हमारे लाला ने तौ बस्स एक दफै ही निकारौ है, सोऊ कछू जादा रकम नाहें मारी, और जब से खेंचूमल बटोरचन्द के नाम सों नयौ फरम चालू करौ है, खूब माल खेंच रहे हैं, चक्क रकम बटोर रहे हैं।

मुनीमजी—खन्ना गुरू, तुमकों जाने आज का है गयौ है, बेकार की बात कर रहे हौ! जाओ तीन-चार पान लगवाय लाओ।

कोसी०—नहीं मुनीमजी, कष्ट मत करिए, मैं पान नहीं खाता। आपके सेठजी का लड़का आजकल कौन-सी क्लास में पढ़ रहा है?

मुनीम—अभी तौ आठवीं में पढ़ि रह्यौ है, पर बड़ौ होनहार लड़का है।

महा०—अजी तीन दफै फेल है गयौ, नहीं तौ अब तक बी० ए० में चढ़ जातौ।

कोसी०—और भी कहीं से बातचीत चल रही है क्या?

महा०—वैसें तो कैऊ बनियां पीछे परि रहे हैं, पर बात जि है कै लल्ला नेंक हकलावै, जा मारें कोई जम कै बात नांय करै, नहीं अब तक तौ बाके सैकड़न ब्याह है गये होते।

मुनीम—गुरू, तुमसों बीस दफै कै दई है कै जोहैकाए बीच में मत बोलौ करौ।

महा०—चौं न बोलौ करूं बीच में, अरे तो हां? लाला ने कहि दई है, खूब लम्बी-चौड़ी हांकियों!

मुनीम—अच्छा जाओ, देखौ तौ सही, लाला कों बडी देर है गई है। का बातैं, कैसे नांय आये।

महा०—बात का होयगी, सेठानी सों लड़ि रहे होंगे, अरे तौ हां।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोसी०—सेठानी का स्वभाव कुछ खराब है क्या ?

महा०—नाहें ऐसी विसेस खराब हू नाहें, कभी-काध लाला को चीमटा दिखाय देवे, पर मारे नांय बिचारी।

कोसी०—(हंसकर) मुनीमजी, आपके महाराज बड़े खिलौना हैं। अब हम चलेंगे फिर कभी देखा जायगा।

मुनीम०—अजी वाह लाला, ऐसो नांय है सकै जोहैकाए, सेठजी से मिलकै जइयो साब !

कोसी०—नहीं मुनीमजी, अब तो हम चलेंगे, और सत्य बात आपको बता दें। हमने तो बड़ी तारीफ सुनी थी सेठजी की, इसी-लिए देखने आये थे, पर यहां आकर तो कुछ मामला ही और दिखाई दे रहा है, इसीलिए तबियत कुछ खट्टी हो गई।

महा०—सरबत लाऊं लाला ? नेंक तो और बैठो। हमारी तनखा तोऊ मिल जाती, अरे तो हां।

कोसी०—कैसी तनखा ?

मुनीम—अजी कछू नांय, जोहैकाए, इनकी बातन की भली चलाई।

कोसी०—(उठते हुए) अच्छा जै गोपाल ! (कोसीवाले का प्रस्थान)

मुनीम—(हंसकर) कहो गुरू ! ऐकली-बैकली दैकें उड़ाय दई चिरैया, अब गिन लीजो तनखा के रुपैया।

महा०—अजी मुनीमजी, नेंक देर में वसूल होयें रुपैया। इन बातन में कहा रक्खो है।

(दरवाज़े पर खट-खट की आवाज)

महा०—अरे कौन है भाई ?

मुनीम—अरे उस्ताज, नेंक उठकै तो जाओ, कै यहीं सों रेंक रहे हो, देखो तो सही जोहैकाए कौन है ?

(महाराज का जाना और साथ में इन्कमटैक्स इन्सपैक्टर का आना)

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंस०—सेठ खेंचूमल बटोरचन्द का फर्म यही है न ?

मुनीम—हां-हां, क्या बातें जोहैकाए ?

इंस०—मैं इन्कमटैक्स इन्सपैक्टर हूं, कुछ इन्क्वायरी करनी है। कहां हैं आपके सेठजी ?

मुनीम—सेठजी घर गये हैं, बैठिये। बाबूजी कों कुर्सी लाइ देउ महाराज !

(महाराज कुर्सी रखते हैं जो कि टूटी हुई है, बैठते ही और टूट जाती है, इन्सपैक्टर गिर पड़ता है)

महा०—लगी तौ नाहें बाबूजी ? क्या बतामें आजकल फरनीचर ऐसौ सड़ौ भयौ आइ रह्यौ है कै कछू कही नाहि जायै अरे नौ हां, लगी तौ नाएं साब ?

इंस०—नहीं, कोई बात नहीं।

महा०—(बाहर की ओर देखकर) लेउ साब, आइ रहे हैं सेठजी।

(सेठजी तथा जग्गो का प्रवेश)

सेठजी—(प्रवेश से पहले ही) देखिलै बेटा, कोसीवारे लाला कैसे ठाठ के हैं। पतलून पहर रहे हैं। आखिर तौ साब पढ़ी-लिखी पाल्टी है, छोरी आठवीं पास है और अब नैन्थ में पढ़ि रही है, रामायन बांच लेवे। (लड़के की तरफ देखकर) हनुमारेका, टोपी चौ नाय पहरि आयौ ?

जग्गो—भूल गया पिताजी, टोपी घर रह गई। अब पहन आऊं ?

सेठजी—अरे जा उल्लू, अब पहरि आयौ तौ का नतीजा ! घर तक जाइवे-आइवे में एक आना के जूता घिस जाइंगे। खैर एक काम कर, जूता हाथ में लैजा और भाजि कें टोपी पहरि आ। जल्दी अइयो। तब तक मैं इनसे बातचीत करूं।

(जूते हाथ में लेकर जग्गो का प्रस्थान)

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जग्गो—(जाते-जाते) क्या कंजूस पिता से पाला पड़ा है।

सेठजी—(अन्दर आकर) जैगोपाल साब !

इन्स०—नमस्ते सेठजी, बैठिये।

(इसी बीच मुनीम और महाराज आपस में इशारेबाज़ी करके यह निश्चय करते हैं कि सेठजी को यह भेद मत बताओ कि यह इन्सपैक्टर है, वह इसे कोसीवाला बनियां समझेंगे सो समझने दो, मजा आयेगा)

सेठजी—आप कितनी देर के बैठे हैं, माफी चाहूं साब, मोकों नेंक देर लग गई घर। अजी महाराज, रेड़िया खोल देउ और पंखा तेज कर देउ, आप थके-मांदे आये होंगे।

इन्स०—लेकिन सेठजी, ज़रा जल्दी करिये, मुझे और भी काम है।

सेठजी—हत्तुमारेका, आवत की देर नाहें भई और जाइवे की जल्दी परि गई ! नेंक बैठौ तौ सही, ऐसी क्या बातें साब ! सम्बन्ध की बातचीत में समय लगे ही है।

इन्स०—सम्बन्ध ? अरे साब, मैं तो इन्क्वायरी के लिए आया हूं।

सेठजी—हां, हां, खूब इन्क्वारी कर लीजिये, मनें कौन करे साब, अड़ोसिन तें, पड़ोसिन तें, ऊपर वारेन तें, नीच वारेन तें—चाहें जासें पूछ लेउ, हमारे फारम की बाबत, घराने की बाबत। (महाराज से) महाराज, तुमसे कैऊ दफै कै दई है, कोई आयौ करै तौ बिना पूछै पान लै आओ करौ। पर तुम्हारी खोपड़ी में तौ भुस भर रह्यौ है।

महा०—कोठरी में भुस भर रह्यौ है ? कितनौ ले आऊं बामें से ?

सेठजी—हत्तुमारेका, कछू कहौ, कछू समझें। जाओ जल्दी चार-पांच पान लगवाइ लाओ और अपने बगीचा पै सों ४ दर्जन

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
केला, ८ दर्जन चीकू, १६ दर्जन गाजर और ३२ दर्जन मूरी जल्दी लिवाइ लाओ । जाओ गैरिज में सों सफेद कार निकरवाइकै जल्दी सब सामान लै आओ, नीली कार में तौ सेठानी सिनेमा गई है।

महा०—(स्वगत) तुम्हारे दादे ने हूंदो-दो कार देखी होंयगी? क्या लम्बी उड़ान भर रहे हैं लाला! (प्रस्थान)

इन्स०—अच्छा! आपके यहां दो कार हैं सेठजी?

सेठजी—अजी, कार तौ तीन हैं, एक कार मांगिवे बारे ऑफीसरन कूं अलग रहै, वासूं हाथ भी नाहें लगाऊं।

इन्स०—वाह! तीन-तीन कार हैं? खूब, तब तौ सेठजी, आपका फार्म काफी बड़ा मालूम देता है।

सेठजी—अजी साब, मैं का लायक हूं, सब भगवान की कृपा है, जैसी आमदनी, वैसौ खर्चा।

मुनीम—सबरे शहर में इन्हीं की है चर्चा। पिछले साल की मुनाफा ते एक कोठी और लल्ला के ताईं एक मोटर साइकिल खरीदी. अब की मुनाफा ते लल्ला कौ ब्याह होइगौ।

सेठजी—बात ये है लालाजी, ऊपर-ऊपर की आमदनी सब ऐसे कामन में लगानी पड़ै, नहीं तो टैक्स के मारै ही ढेर है जाय।

इन्स०—कितनी मुनाफा रहती है आपके यहां साल-भर में?

सेठजी—मुनाफा की कछू मत पूछौ, आपसे कहा छुपाऊं। २०-२५ हजार की तौ हर साल ऐसी आमदनी होवै, जाकौ जमा-खर्च बहीखाते में हम नाहें करें।

इन्स०—वाह सेठजी! मैंने अपनी ज़िन्दगी में आप जैसा सत्यवादी व्यक्ति कोई नहीं देखा। जिसके पास जाता हूं वही व्यर्थ के रोने रोता है, आप पहले व्यापारी हैं जो सब बातें इतनी सचाई के साथ बता रहे हैं। अच्छा तो आपका बहीखाता सब यहीं पर है?

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सेठजी—बहीखाता ? हां-हां यहां है, पर बहीखाते में का रक्खो है, अपनो हिसाब तो जेब में रहै, बहीखातो तो इन्कमटैक्स बारेन के ताईं है ?

इन्स०—मैं भी तो इन्कमटैक्सवाला हूं सेठजी !

सेठजी—(आश्चर्य से आंखें फाड़कर) हैं···इन्कमटैक्स ? आप कोसीवारे लालाजी नहीं हैं ?

इन्स०—नहीं सेठजी, मैं तो इन्कमटैक्स का इन्सपैक्टर हूं, बड़े साहब ने इन्क्वायरी के लिए भेजा था। आपने बड़ी कृपा की जो सब बातें खुद ही बता दीं, इससे मुझे बड़ी आसानी हो गई। लाइये खाते और रोकड़ पर मैं अपने दस्तखत कर दूं, जबनक्शा आपके पास आ जाय तो उसे भरकर भेज दीजिये और पेशी की तारीख पर सब कागज़ात लेकर इन्कमटैक्स आफिस में तशरीफ ले आइये।

सेठजी—हत्तुमारेका ! अरे बाबूजी, मेरी सत्यानाम है जाइगी। मेरे ऊपर रहम करो सरकार ! मैंने तो आप कोसीवारे लाला समझे, वे लल्ला के सम्बन्ध की बातचीत को आइवे बारे हैं।

इन्स०—सम्बन्ध तो हमारा-आपका हो ही गया सेठजी, घबराने की कोई बात नहीं, अगर आपने नक्शा भरने में या बहीखाते में कोई चोरी नहीं की तो जुरमाना नहीं होने दूंगा, वाजिब टैक्स होगा सो लग जायगा।

सेठजी—अजी इसपट्टर जी, मेरी बात तो सुनो, मेरी आमदनी इतनी कहां है जो टैक्स दै सकूं, बड़ी मुसकिल ते घर कौ खर्चा निकर रह्यो है। मोकों छोड़ देउ तो आपकौऊ कछू···

इन्स०—माफ करिये सेठजी, अब तो मैंने केस दर्ज कर लिया है, फैसला वहीं होगा। मुनीमजी, इधर लाइये जल्दी खाता रोकड़। मुनीम खाता रोकड़ देता है, इन्सपैक्टर दस्तखत करके जाता है, सेठजी सिर पकड़कर बैठ जाते हैं)

मुनीम—(जोड़ लगाते हुए) पन्द्रह, पन्द्रह, पन्द्रह और सात,

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाईस, बाईस, बाईस और पांच सत्ताईस के सात, हासिल लगे दो। दो, दो, दो दो, और नौ ग्यारह, ग्यारह, ग्यारह···

सेठजी—(ऊपर को मुंह करके) मुनीमजी···

मुनीमजी—(अपनी धुन में) ग्यारह, ग्यारह और तीन चौधै, चौधै और नौ तेईस, तेईस, तेईस···

सेठजी—अरे ओ तेईस के ताऊ !

मुनीम—मौसे कह रहे हौ का सेठजी ?

सेठजी—तुमसे नांय कह रह्यौ तौ का ध्यानदास तैं कह रह्यौ हूं !

मुनीम—(फिर उसी प्रकार जोड़-बाकी में लग जाता है) सोई तौ कहूं, मैंने समझी मौसों कहि रहे हौ। तेईस, तेईस, तेईस और सात तीस, तीस और चालीस सत्तर, सत्तर, सत्तर।

सेठजी—अरे ओ पत्थर !

मुनीम—ऐं···

सेठजी—मैं जि पूंछूं तुमते, कै जि कहा है गयौ आज ? कोढ़ में निकर आई खाज ! तुमनै मोकूं जि बात चौं नांय बताई कै जि इन्कमटैक्स के इन्सपट्टर हैं। मैंने तौ जि कोसीवारे समझे।

मुनीम—कोसीवारे तौ भौत देर के चले गये।

सेठजी—कब चले गये ?

मुनीम—उनको घंटा-भर है गयौ।

सेठजी—हे भगवान, दोनों तरह सों मारो गयो, कोसीवारे कैसे चले गये ?

मुनीम—अपने पैरन ते चले गये और कैसें चले गये।

सेठजी—जि तौ मालुम है कि पैरन ते चले गये, पर बात कहा भई, बिना हमसों मिलें कैसें चले गये ?

मुनीम—देखौ जी, जोहैकाए मोकों तौ विशेष बात मालुम नाहीं उनसों ज्यादा बातचीत तौ महाराज की भई, उनसों पूछ लेउ।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

सेठजी—कहां गये महाराज, (चिल्लाकर) अजी महाराज !
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
(महाराज का प्रवेश)

महा०—का बातै लाला, कैसे घबराय रहे हो ?

सेठजी—जि बताओ कोसीवारे सों तुमनै कहा कह दई सो चलौ गयौ ?

महा०—मैंने कहा कहि दई। बु पट्ठा दुनिया भर की सेखी मारन लगौ कै हमारे सहर में आसामी तीन-तीन दफै देवालौ निकारें, सो हमनैऊ कह दई, अरे तौ हां।

सेठजी—कहा कह दई ?

महा०—यों ही कह दई कै निकारे होंगे तीन-तीन दफै देवाले, हमारे लाला नै तौ बस्सि एक दफै ही निकारौ है अरे तौ हां।

सेठजी—हत्तुमारेका, रेड़ कर दई तुमन्नै। हे भगवान, अब कैसी करूं, मैं तौ काऊ दीन कौ न छोड़ौ। (हांपने लगता है)

महा०—अजी मुनीमजी, अइयों जल्दी लालाकों दौरा है गयौ।

मुनीम—(पंखा करता हुआ) लाला, अब तौ दै देउ हमारी तनखा।

महा०—हां सेठजी, दै देउ ऐसे में, फिर बोलती बन्द है गई तौ हम वैसै ही रह जांगे, अरे तौ हां।

सेठजी—अरे ! तुमकों सरम नाहिं आवै भले आदमियों, मेरी जान सों बीत रही है और तुम्हें तनखा की पड़ी है।

महा०—लाला, मौत की घड़ी है, जाने कब आइ जाय, हम तौ तुमारी सी कह रहे हैं, यहां न देउगे तौ वहां देनौ परैगौ। अच्छा मुनीमजी, जि बताइ देउ कि लाला कों गंगाजी पहुंचामें कै जमना जी ?

सेठजी—अरे गंगाजी पहुंचाइवे में तौ भौत खर्चा परैगौ महाराज, जो काऊ कौ ठेला मगैनूं मिल जाय तौ जमना जी लै जइयों नहीं तौ···

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुनीमजी—अजी लाला, ऐसी बात जोहैकाए, चौंकर रहे हो, ठीक है जाओगे।

सेठजी—नाहें मुनीमजी, अब ठीक नाहें है सकू, एक जोतिसी ने मेरो हाथ देखकै बताई कै लाला सोमवार कों तुम्हारो मृत्यु-योग है, सो मोकों तो बखत आयगो दीखै आज। हे भगवान···महाराज, एक काम करो जल्दी।

महा०—बोलो लाला!

सेठजी—नेंक चेयरमैन साब के पास चल जाओ, चुंगी की पिकप लिखाय आओ मथुरा के ताईं।

महा०—अजी लाला, अभी सों लिखाइवे की क्या जरूरत है, हाल की हाल लै आऊंगो।

सेठजी—अरे मोय तो संतोष है जायगो। नाय तो मुनीमजी, दो-चार जगह टेलीफून करकें ठेला को इन्तजाम कर लेउ, फिर मेरे मरे पीछे कोई नाय देगो।

मुनीम—(टेलीफून करता है) हलाउ···१८६ लम्बर···हां जी, लालाजी हैं का, जैगोपाल साब, मैं खैचूमल-बटोरचन्द के यहां ते बोल रह्यौ हूं। हमारे सेठजी समाप्त है रहे हैं, चुंगी की पिकप मथुरा लै जानी है···हां जी, घंटा आध घंटा के ही हैं···ऐं···अच्छा। (टेलीफून रखता है)

सेठजी—चौं कहा कह दई?

मुनीम—यों कह रहे हैं कै हमारी पिकप कौ टायर तौ छुट्टी पै गयौ है और ड्राइवर बस्ट है गयौ है।

सेठजी—हत्तुमारेका, जाने कहा बक रहे हौ। ड्राइवर बस्ट है गयौ है, टायर छुट्टी पै गयौ है? अकल खराब हो गई है तुम्हारी, जान देउ, बड़े अस्पताल की पिकप मांग लेउ।

मुनीम—रहन देउ लाला, फेल है गई तौ रस्ता में ही किरिया-करम करनौ पड़ैगौ। वाय मत मांगौ।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महा०—अजी धता भेजो, मोटर और लारी को। उठाओ मुनीम जी; राम-राम सत्य है। (दोनों सेठजी को उठाते हैं)

सेठजी—अरे जल्दी चौं कर रहे हौ, अभी नांय मरौ।

महा०—अब मरते रहियों लाला धीरे-धीरे, कब तक इन्तजार करें। तनखा देवे में टालमटूल और मरबे में हू टालमटूल। अरे तौ हां! उठाऔ मुनीमजी। राम-राम सत्य है···

सेठजी—अरे अभी नांय मरौ, लल्ला कौ ब्याह तौ कर लैन देउ।

दोनों—हम कर दिंगे लल्ला कौ ब्याह, चलौ मुनीमजी, राम-राम सत्य है।

पटाक्षेप

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

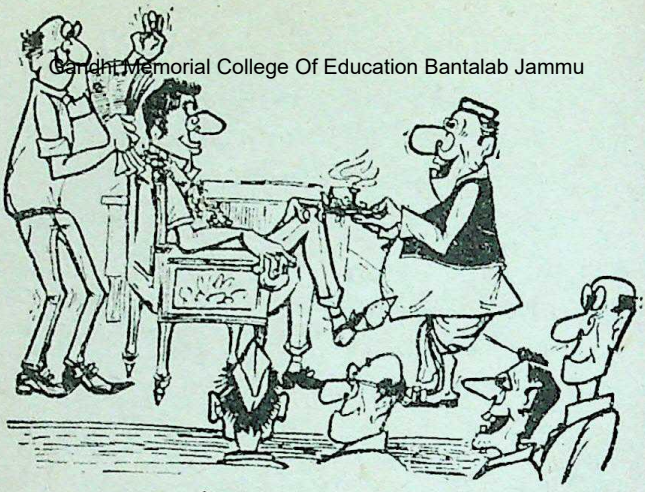

फ्री स्टाइल गवाही

पात्र :

झंडामल—एक मारवाड़ी सेठ वादी

शर्मा—वादी का वकील

भटनागर—प्रतिवादी का वकील

सत्यपाल—वादी का गवाह

जज़, पेशकार, चपरासी आदि

[स्थान : अदालत का कमरा]

(पेशकार बैठा हुआ कागज़ पलट रहा है, चपरासी खड़ा है, जज की कुर्सी खाली है। एक ओर से सेठ झंडामल और दूसरी ओर से उनके वकील शर्मा जी का प्रवेश)

झंडामल—गजब होगियो वकील साब !

शर्मा—क्या हुआ सेठजी ?

झंडामल—के बताऊं वकील जी, म्हे तो मरगियो हाय-हाय।

शर्मा—अरे क्या हुआ, कुछ बताओगे भी या वैसे ही हल्ला कर रहे हो ? देखते नहीं यह कोर्ट है।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

झंडामल—म्हारे गवाह ने जाड़ो मारगियो, अब कैसी होगी राम, पट्ट होगियो सब काम। (रोता है)

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शर्मा—अरे सेठ झंडामल, आप भी खूब हैं, ज़रा-सी बात के लिए बच्चों की तरह रोते हैं। गवाहों की आजकल क्या कमी है, आप कहें जितने इकट्ठे कर दूं ? पैसा चाहिए अंटी में।

झंडामल—तो फिर बुलाओ न वकील जी ! म्हारो तो कलेजो हिल रिह्यो है।

शर्मा—घबराइये नहीं, अभी इन्तज़ाम किये देता हूं। आप बैठिये। (वकील का बाहर जाना और एक व्यक्ति को लेकर आना)

शर्मा---देखो मिस्टर सत्यपाल ! होशियारी से बातें करना। सेठ कंजूस है, चार मांगोगे तब एक देगा।

सत्यपाल—अजी वकील साहब, यहां तो ऐसे ही मनहूसों से पाला पड़ता रहता है। हमें भी बालू में से तेल निकालने का अभ्यास हो गया है।

शर्मा—तुम जानो, लेकिन ध्यान हमारा भी रखना मिस्टर !

सत्यपाल—यस वन फोर्थ सर !

शर्मा—(सेठ के पास जाकर) लीजिये सेठजी, गवाह हाज़िर है।

(सेठजी गवाह को बड़े ध्यान से ऊपर से नीचे तक देखकर उसके हाथ जोड़ते हैं)

झडामल—जैगोपाल जी की गवाह जी, जय गोपाल जी की !

सत्यपाल—जैगोपाल जी की सेठ, तबियत खुश हो गई आपसे करकें भेट। सेवा कुछ लीजिये, आज्ञा दीजिये।

झंडामल—अरे भाया, आज्ञा के है। झाऊलाल का बाप खाऊलाल म्हारौ पांच सौ रुपया लेकर मरिगियो। ताके ऊपर ब्याज, ब्याज के ऊपर ब्याज चढ़ते-चढ़ते ५०० का २५०० होगियो आज की तारीख है भाया, म्हारौ गवाह धर्मपाल बीमार पड़गियो, मामलो

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बीच में अड़गिया ।

सत्यपाल—कोई चिन्ता नहीं, धर्मपाल बीमार है तो सत्यपाल हाजिर है, गवाही के कार्य में कम्पलीट माहिर है, दुनिया में जाहिर है ।

झंडामल—थे तो शायरां की सी बातें करो हो, के काम करो हो भाया ?

सत्यपाल—रसिया बनाते हैं, ख्याल खूब गाते हैं । आप जैसे सेठ कभी हमको बुलाते हैं, तो कोर्ट में पहुंचकर गवाही दे आते हैं । परोपकार के लिए ही जन्म लिया है । विधाता ने माइण्ड हमें फर्स्टक्लास दिया है । यही अपना काम है, सत्यपाल नाम है ।

झंडामल—अहाहा, थारो नामसत्तपाल, म्हारो नाम झंडामल। सत्त और झंडा ने मिलकर जब अंग्रेजी राज छीन लिया तो यो बेचारो झाऊलाल के चीज है । अब तो म्हारी जीत ही जीत है ।

शर्मा—देख लीजिये सेठजी, सोहबत का असर इसे कहते हैं । आप भी तुक मिलाने लग गये । अच्छा अब जल्दी मामला तय कर लीजिये, कोर्ट का टाइम हो रहा है ।

झंडामल—तैं के करनो वकील जो, जीत गयो तो पांच रुपैया दे देगा ।

सत्यपाल—वाहवा सेठजो, आप हैं भरपेट जी । पांच के ऊपर अभी बिन्दी और रखिये एक । मालुम है आपको, गवाह का एक पैर जेल में रहता है । शीघ्र बतलाइये, कान मत खाइये । समय व्यर्थ जा रहा, क्रोध हमें आ रहा ।

झंडामल—अरे तो क्रोध की के बात है भाया, (वकील से) पर पचास रुपया तो बहुत हैं वकील जी !

शर्मा—देखिये सेठजी, यहां पर सौदेबाजी नहीं होनी चाहिए । जज साहब आते होंगे, जल्दी करिये, चलो जी सत्यपाल, २५ रुपये दिला देंगे, हो गया । लेकिन गवाही देते वक्त यह तुकमिल्लाबाजी

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

छोड़कर ढंग से बात करिये।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सत्यपाल—वकील साहब, बात यह थी कि इस समय बाहर बैठे-बैठे हम एक कविता बना रहे थे, उसी मूड में आप हमें उठा लाये, इसलिए सेठजी से सौदा पटाते वक्त कविता में ही बातें करने लगे। लेकिन आप चिन्ता न करें, हमारी तो गद्य और पद्य दोनों में ही समान गति है, सब जानते हैं, अदालत वाले हमें मानते हैं।

झंडामल—(वकील से) तो शर्माजी, गवाह जी को मुकदमो तो समझा देउ।

सत्यपाल—अजी समझ लिया मुकदमा। यहां तो 'फ्री स्टाइल' गवाही देते हैं, हर जगह फिट बैठती है। रोजाना यही काम रहता है। आप बेफिकर रहिये, पेशकार को हमारा नाम नोट करा दीजिये।

(वकील व सत्यपाल का जाना)

झंडामल—(पेशकार के पास जाकर) पेशकार जी, म्हारो एक गवाह धरमपाल बीमार होगियो, ताके बदले में सत्यपाल को नाम नोंद लेउ, किरपा होगी बाबूजी!

पेशकार—वाह वाह, ऐसा कैसे हो सकता है? कमाल कर रहे हैं आप, कहीं नाम बदले जाते हैं गवाहों के?

झंडामल—अरे पेशकार जी, अपने व्यापारी लोग तो गुड़ की जगह चीनी और शक्कर की जगह बूरो बदल देते हैं। थे धरमपाल की जगह सत्तपाल नहीं बदल सको हो? धरम और सत्य तो एक मां के बेटे हैं। या लेउ अपना हक्क, काम कर देउ फटाफट्ट। (नोट देता है)

पेशकार—एक रुपया? वाह सेठजी, यह एक रुपये का काम है?

झंडामल—अजी पेशकार जी, एक रुपयो के कम है। जी को

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

१०० नयौ पीशौ होवे है।

पेशकार—(रुपया फेंककर) ले जाइये यह १०० पैसे, (मुंह बिगाड़कर) चले आते हैं सेठ बनकर।

झंडामल—(रुपया उठाकर दांत दिखाते हुए) थे तो रूठ गया पेशकार जी, गांधी का चित्तर लगा रख्या है, थोड़ा डरो तो सही भाया।

पेशकार—गांधीजी का चित्र लगा है तो क्या हुआ, देखते नहीं, महात्मा जी अपने हाथ की पांचों अंगुलिया दिखाकर और लाठी लेकर कह रहे हैं कि पांच रुपये से जो कम दे उसमें लाठी लगाओ।

झंडामल—अच्छा भाया, लो। (पांच का नोट देता है)

(जज का प्रवेश; झंडामल हट जाते हैं)

पेशकार—चपरासी! सेठ झंडामल बनाम झाऊलाल को आवाज दो।

चपरासी—कोई झंडामल बनाम झाऊलाल हाजिर है? कौन है झंडामल बनाम झाऊलाल?

(दोनों पार्टियों का वकीलों सहित प्रवेश)

चपरासी—(झंडामल से) आपका ही नाम झंडामल है?

झंडामल—दुनिया जाने है म्हारो नाम झंडामल, बाप को नाम गंडामल, बाबा को नाम संडामल, परबाबा का नाम डंडामल। असली बनिया मारवाड़ी—भौत पुराने कबाड़ी।

शर्मा—बस-बस, बन्द करिये रेलगाड़ी। यह बताइये, आपने झाऊलाल के पिता खाऊलाल को जो ५०० रुपये दिये थे, किस-लिए दिये थे?

झंडामल—किसलिए दिए थे? यो बात म्हां से कांई पूछो हो, दुनियां जाने है। बात यों हुई, एक दिन झाऊलाल का बाप खाऊलाल कहन लग्यो···सेठजी, म्हारो बेटो झाऊलाल कुपात्तर

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
है, म्हारी तेरहीं करेगा नहीं, यासे अपन तो जीवता ही तेरहीं कर दूं। थे पांच सौ रुपया उधार दे देउ। अपनो तो दया-धरम को काम पुरखा-पंगत से चलो आवै है; दे दियो रुपयो।

शर्मा—तो खाऊलाल ने अपनी तेरहीं करने के लिए आपसे ५०० रुपये कर्ज़ लिये थे! कुछ सबूत है आपके पास?

झंडामल—(बही खोलकर) ये देखो परमान।

शर्मा—कोई गवाह है, जिसके सामने रुपये दिये हों?

झंडामल—हां-हां, गवाह बाहर खड्यो है।

भटनागर—क्या नाम है आपके गवाह का?

झंडामल—नाम···नाम···गवाह को नाम?

शर्मा—घबराइये नहीं, सत्य बात हो सो बता दीजिए।

झंडामल—हां, गवाह को नाम सत्यपाल है।

पेशकार—चपरासी, सत्यपाल गवाह को हाजिर करो।

चपरासी—सत्यपाल गवाह हाजिर है! कोई सत्यपाल गवाह हाजिर है? कौन है सत्यपाल?

(सत्यपाल का प्रवेश)

चपरासी—कहो भगवान को साक्षी करके सच-सच कहूंगा।

सत्यपाल—अरे भाई, मेरा तो नाम ही सत्यपाल है, झूठ तो हमने जिन्दगी-भर नहीं बोला।

भटनागर—आपका ही नाम सत्यपाल है?

सत्यपाल—यस सर, माई नेम इज़ सत्यपाल।

भटनागर—आप अंग्रेज़ी कहां तक पढ़े हैं?

सत्यपाल—अंग्रेजी हमने ई० आई० आर० में मुगलसराय जंकशन तक पढ़ी थी, लेकिन जब स्वराज्य हो गया तो कांग्रेस सरकार ने इस रेल का नाम बदलकर एन० आर० कर दिया, तब हमने भी अंग्रेजी को उठाकर ताक में रख दिया।

भटनागर—देखिये, यह कोर्ट है, फिजूल बातें यहां मत करिये।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो बातें पूछी जा रही हैं उनका ठीक ठीक जवाब दीजिये।

सत्यपाल—आप कहें, उसी भाषा में गवाही दे सकता हूं। हिन्दी, उर्दू, सराफी, बंगला, मराठी, पंजाबी, गुजराती, तेलगू, चीनी, रूसी, लैटिन, बुलैटिन १२ भाषाएं बोल सकता हूं। झाऊलाल की पोल खोल सकता हूं।

जज—आर्डर-आर्डर, फिजूल बातें मत बोलो। वकील जो बात पूछें उसका जवाब दो।

सत्यपाल—बहुत अच्छा हुजूर!

भटनागर—आपके पिता का नाम?

सत्यपाल—गवाही मैं दे रहा हूं या मेरा पिता? खैर, फिर भी बताता हूं। हमारा नाम सत्यपाल, बाप का नाम हरिश्चन्द्र, बाबा का नाम युधिष्ठिर।

भटनागर—बस-बस, जरूरत से ज्यादा मत बोलिये। क्या काम करते हैं आप?

सत्यपाल—काम, क्रोध,' लोभ, मोह इनसे अपने राम हमेशा दूर रहते हैं, सत्य सुनते हैं, सत्य कहते हैं। सत्य की गंगा में रात-दिन बहते हैं, इसीलिए लोग हमें सत्यपाल कहते हैं।

भटनागर—अरे भाई, तुम गवाही दे रहे हो या कविता पढ़ रहे हो? यह पूछा जा रहा है कि क्या कार्य करते हो?

सत्यपाल—सुबह उठकर कैंची की तीन सिगरेट पीता हूं। फिर चार कप चाय बनाता हूं, उसे पीकर लैटरिन जाता हूं। स्नान करके गीता का पाठ करता हूं, फिर रोटी खाता हूं, तब कचहरी जाता हूं।

भटनागर—यह नहीं पूछते हम, मतलब···आप धन्धा क्या करते हैं?

सत्यपाल—धन्दे तो सेलटैक्स ने सब चौपट कर दिये, अब धन्दे हैं ही कहां वकील साहब?

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भटनागर—फिर भी कुछ रोजी-रोटी का जरिया तो होगा ही।

शर्मा—(जज से) देखिये हुजूर, सवाल का जवाब गवाह ने दे दिया है, फिर भी वही सवाल बार-बार करके वक्त बरबाद किया जा रहा है।

भटनागर—(बात अनसुनी करके) मिस्टर सत्यपाल, आप एक बार जेल भी जा चुके हैं।

सत्यपाल—मैं एक बार जेल जा चुका हूं तो क्या हुआ। नेहरू जी नौ बार जेल जा चुके हैं, गांधीजी ग्यारह बार गये थे, पटेल साहब पन्द्रह बार गये थे। जेल जाना तो देशभक्ति का चिह्न है, आपका आइडिया हमसे भिन्न है।

भटनागर—किस जुर्म में जेल गये थे आप ?

सत्यपाल—जून में नहीं, सन् ४२ की जुलाई में, और गये इसलिए थे कि सुराज्य होने पर हम भी किसी ऊंची कुर्सी पर फिट हो जायंगे, लेकिन इस तकदीर को क्या करें साहब ! (सांस लेकर) ओफ्फो, वहीं के वहीं रह गये, भाग्य के नाले में बह गये।

भटनागर—(जज से) देखिये सरकार, यह महाशय झूठी गवाही देने के सिलसिले में ३ महीने की सज़ा काट चुके हैं, लेकिन मंजूर नहीं करते, सवाल को बातों ही बातों में उड़ा रहे हैं।

शर्मा—आपके पास कोई सबूत है इस बात का ? अगर किसी केस में इनको सज़ा हुई है तो आप उसकी नकल पेश कर सकते हैं।

जज—राइट, आगे चलिए।

भटनागर—अच्छा जी सत्यपाल, यह बताइये, जिस वक्त सेठ झंडामल ने खाऊलाल को रुपये दिये थे उस वक्त क्या टाइम था ?

सत्यपाल—टाइम इज़ मनी, टाइम ही रुपया है और रुपया ही टाइम है। इसलिए हमने सिर्फ रुपये की तरफ अपना ध्यान रक्खा था। दूसरा कारण यह था कि हमारी रिस्टवाच उस दिन

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
सफाई दी कि बड़ी तेज धूप थी और बादल छाये हुए थे। ऐसी सूरत में कौन माई का लाल टाइम का पता लगा सकता है।

जज—दिस इज राइट।

भटनागर—मिस्टर सत्यपाल, यह तो आपको मालूम ही होगा कि जिस दिन झाऊलाल के पिता ने सेठजी से रुपये कर्ज लिये थे, उस दिन क्या तारीख थी। यानी किस दिन रुपये लिये थे?

सत्यपाल—जिस दिन बहीखाते में लिखे गये।

भटनागर—यही तो मैं पूछता हू, बहीखाते में कौन-सी तारीख को लिखे गये?

सत्यपाल—जिस दिन लिये गये, उसी दिन लिखे गये।

भटनागर—तो तारीख आपको मालूम नहीं?

सत्यपाल—मालूम क्यों नहीं, देखिये यह लिखी हुई है। (सेठ के हाथ से बही छीनकर मिती पढ़ता है) माघ सुदी ७ सोमवार।

भटनागर—अच्छा, आप यह बता सकते हैं कि झाऊलाल ने जब कर्जा लिया था, उनकी उम्र कितनी थी, सफेद बाल थे या काले?

सत्यपाल—उम्र का बालों से कोई कनेक्शन नहीं वकील साहब! अपने शहर में ही देख लीजिये, लोहिया जी के बाल १२ वर्ष की उम्र में ही सफेद हो गये, डाक्टर शर्मा तो गर्भ ही से सफेद बालों वाले पैदा हुए थे। और काका हाथरसी के बाल ६० वर्ष की उम्र में भी काले हैं।

भटनागर—देखिये हुजूर, गवाह हर सवाल का जवाब गोल दे रहा है।

सत्यपाल—हजूर, चांद गोल, सूरज गोल, यह दुनिया गोल, वकील साहब के सवाल गोल, इसलिए मेरे जवाब भी गोल।

शर्मा—देखो मिस्टर सत्यपाल, वक़ील साहब यह पूछ रहे हैं कि झाऊलाल की एज कितनी थी?

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सत्यपाल—श्रीमान जी, किसीकी सही उम्र या तो उसकी माताजी बता सकती हैं, या म्यूनिसपैलिटी का पैदाइशी रजिस्टर।

भटनागर—फिर भी आदमी की बौडी देखकर कुछ तो अन्दाज किया जा सकता है।

सत्यपाल—बौडी देखकर ?···हर्गिज नहीं, अभी हाल में ही एक जगह जब सितारा नाचने के लिए स्टेज पर आई तो १६ वर्ष की मालुम होती थी, लेकिन वास्तव में उसकी उर्म मेरी चाची के बराबर है, यानी फिफ्टी ईयर्स।

जज—आर्डर-आर्डर। यहां सितारा की या आपकी चाची की उम्र नहीं पूछी जा रही; खाऊलाल की उम्र बताइये।

शर्मा—सरकार, गवाह का नाम सत्यपाल है, वह झूठ बोलना नहीं चाहता, इसलिए उनकी ठीक-ठीक उम्र बताने के लिए उस-पर जोर डालकर सत्य की हत्या नहीं करनी चाहिए। भारतीय संविधान भी यही कहता है।

भटनागर—अच्छा छोड़िये, यह बताइये, खाऊलाल जी कपड़े कैसे पहनते थे ?

सत्यपाल—हमारे मित्र खाऊलाल थे अवसरवादी। उनके बक्स में ढाई दर्जन ड्रैस डिफरैन्ट क्वालिटीज के हर वक्त तैयार रहते थे। किसी कांग्रेसी नेता से मिलने जाते तो खादी की अचकन पहनते थे। जनसंघ की मीटिंग में केसरिया टोपी और लहंगाकट नेकर पहनकर जाया करते थे। समाजवादी पार्टी में लाल टोपी उनके सिर की शोभा बढ़ाती थी। भाई-बिरादरी में पगड़ी पहन लिया करते थे, एक ड्रैस हो तो बताऊं आपको। मैं पहले ही कह चुका हूं कि खाऊलाल थे अवसरवादी, जैसा मौका देखते, वैसा ठाट बनाते थे, अवसर का लाभ उठाते थे।

भटनागर—उनके चेहरे का रंग बता सकते हैं आप ?

सत्यपाल—चेहरा न तो गोरा था न काला। उनका रंग था

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
भदमैला, जैसे सीमेण्ट का थैला। लेकिन सुराज्य होने के बाद उनके चेहरे का रंग धीरे-धीरे निखरने लगा और मरते वक्त तो उनका चेहरा ऐसे दमदमा रहा था जैसे हज़ार वाट का बल्ब।

भटनागर—(झुंझलाकर) ओफ्फो! मैं पूछता हूं जिस समय उन्होंने बहीखाते में दस्तखत किये थे उस वक्त उनके चेहरे का रंग कैसा था?

सत्यपाल—(जज से) सरकार, दस्तखत करते समय तो हर आदमी का मुंह नीचे की ओर रहता है। ऐसी हालत में मैं कैसे देख सकता था उनका चेहरा!

जज—दिस इज़ राइट। हैलो मिस्टर भटनागर, जल्दी करिये। थ्री फिफ्टी हो गया।

भटनागर—बस हुजूर, एक सवाल और है। हां जी सत्यपाल, यह और बता दीजिये कि खाऊलाल की मौत किस बीमारी से हुई थी?

सत्यपाल—(रोनी सूरत बनाकर) हाय-हाय वकील साहब, एक बीमारी हो तो बताऊं आपको। डाक्टर बर्मन कहते थे इन्हें हैजा हो गया है, जौहरी साहब फरमाते थे फेंफड़ा फट गया है, शर्मा कहते थे मलेरिया है, वर्मा कहते थे पीलिया है। डाक्टर यादव का कहना था कि इनके पेट में फोड़ा हो गया है। मरते दम तक पता ही नहीं चला उनकी बीमारी का, बेचारे दवा खाते ही खाते मर गये, हमें अनाथ कर गये। (रोता है)

जज—ओह सौरी, गवाह रोता क्यों है?

शर्मा—हुजूर, यह सच्चा और भावुक आदमी है, अपने दोस्त की मौत की याद आते ही इसे रोना आ गया है। जाहिर है कि खाऊलाल वास्तव में मर चुका है और यह भी साबित हो गया है कि झाऊलाल दरअसल खाऊलाल का पूत है, केस मजबूत है।

भटनागर—देखिये सरकार, गवाह की सब बातें बे सिर-पैर

gamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

की हैं। किसी भी सवाल का साफ जवाब नहीं दिया गया। मुझे
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अभी-अभी मालूम हुआ है कि यह गवाह कुछ रुपयों में तय होकर आया है।

जज—मिस्टर भटनागर, दिस इज़ डाइरैक्ट ब्लेम।

शर्मा—भटनागर साहब, होश-हवास दुरुस्त रखकर बातें कीजिए!

भटनागर—शटअप!

शर्मा—बको मत!

भटनागर—बदतमीज़ हो तुम।

शर्मा—गधे की दुम हो तुम।

जज—आर्डर-आर्डर। मिस्टर भटनागर, आपने मुद्दई के वकील की और कोर्ट की इन्सल्ट की है। इस जुर्म में आपके ऊपर पचास रुपया फाइन। मुद्दई का दावा डिगरी। केस फिनिश।

(जज का प्रस्थान। भटनागर और झाऊलाल का निराश मुद्रा में माथा ठोकते हुए प्रस्थान)

शर्मा—हिप-हिप-हुर्रे।

सत्यपाल—फि-फि-फुर्रे।

(वकील और गवाह खुशी से नाचते हैं। झंडामल बाहर जाकर एक माला लाकर सत्यपाल के गले में डालता है और उसे पकड़कर जज की कुर्सी पर बैठाता है। इस दृश्य को पेशकार साहब मुंह फाड़कर आश्चर्य की मुद्रा में देखते हैं। बाद में कुछ व्यक्ति झंडामल के पक्ष के और आ जाते हैं और सब मिलकर गवाह की आरती गाते हैं)

आरती

ओम् जय सतपाल हरे।
झंडामल के संकट क्षण में दूर करे।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सांचे को तुम झूंठ करो अरु झूंठे को सांचो
स्वामी झूंठे को सांचो
गीता को नित पाठ करो तुम रामायण बांचो ।। ओम्···
परमारथ की चटनी तुमने श्रद्धा सों चाटी,
स्वामी श्रद्धा सों चाटी
याही कारण छह महीना की सख्त सजा काटी ।। ओम्···
जीवन-भर यहि काम तिहारो, लड़वाये कुत्ता,
स्वामी लड़वाये कुत्ता
न्यायालय में भई वकीलन में गुत्थमगुत्था ।। ओम्···
कानूनी बारीकी समझी, हे घट-घटवासी
स्वामी हे घट-घटवासी
डरते सबहि वकील मुहर्रिर तुमसों चपरासी ।। ओम्···
फ्री स्टाइल दई गवाही, हमको तार गये,
स्वामी हमको तार गये
जीत गये श्री झंडामल जी झाऊ हार गये ।। ओम्···
दिये पांच सौ, पच्चिस्सौ की करवाई डिगरी,
स्वामी करवाई डिगरी
प्रतिवादी वकील की इज्जत बीच कोर्ट बिगरी ।। ओम्···
कहं लग वर्णन करें तिहारो 'काका' गुनवन्ता
स्वामी 'काका' गुनवन्ता
मर जाओ तो फूट-फूटकर रोवैगी जनता ।। ओम्··

पटाक्षेप

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

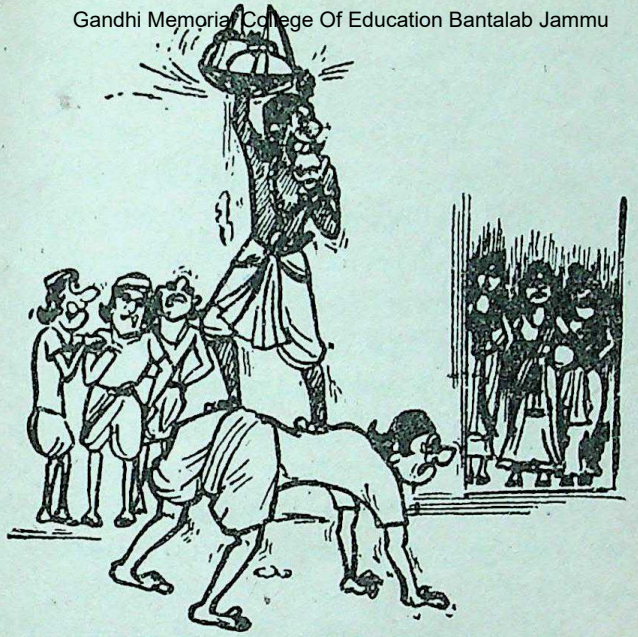

माखन चोरी

पात्र :

कृष्ण

मनसुखा

यशोदा

ललिता, बिसाखा—सखियां

ग्वाल-बाल

(दो ग्वालों के साथ कृष्ण और मनसुखा का प्रवेश, कृष्ण का बांसुरी-वादन तथा ग्वालों का लोकनृत्य)

मनसुखा—भैया कन्हैया !

कृष्ण—हां, बेटा मनसुखा !

मनसुखा—देखिलै, बेटा कहि रह्यो है हमते !

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gurukul Mahavidyalaya College Of Education Bhatalab Jammu

हूं ? अच्छा अच्छा, रसे मनहरण ! बोल, माखन खाइगो ?

मनसुखा—हां भैया ! कैऊ दिना सों माखन नाहें मिल्यौ, सो पेट में मरोरा से मारि रहे हैं, है कोई भांग ?

कृष्ण—चौं, पीलई दीखै भांग ?

मनसुखा—नांय कन्हैया ! यहां तौ बिना भांग के ही मगज भिन्नातौ रहै यार ! हां तौ, बताइ कछू ताड़ !

कृष्ण—अच्छा म्हौं फाड़ ।

(मनसुखा मुंह फाड़ता है, कृष्ण एक मिट्टी की डली उसके मुंह में डाल देते हैं, सब ग्वाल-बाल हंसते हैं)

मनसुखा—(मुंह बिगाड़कर) जि माखन होइगो, भले आदमी! तू तो कन्हैया हमसूं ठठोरिआई करै यार, जानैं कहा डारि दई म्हौं में मट्टी-सी, सबरे म्हौं की रेड़ करि दई···हि···

कृष्ण—अच्छा देख मनसुखा, आज ललिता सखी दही बेचिबे वृन्दाबन चली गई है, चलौ वाही के घर चलैं। चक्क माखन मिलैगौ आज। सब मिट जायगी जीभ की खाज ।

मनसुखा—अच्छा चलौ, चलौ ।

(सब ग्वाल-बाल कृष्ण-मनसुखा सहित ललिता के घर जाते हैं, छींके पर माखन रक्खा है)

मनसुखा—(माखन देखकर जीभ लपलपाता हुआ) आइ हाइ रे मक्खन, खुलिगौ म्हौं कौ ढक्कन । अब हाथ कैसे पहुंचै मटुकिया तक। चौं भैया कन्हैया ! ललिता सखी ऊंट पै चढ़िके छींके पै माखन धरती होइगी ?

कृष्ण—अरे नसैनी लगावत होइगी, नसैनी ।

मनसुखा—अच्छा तौ बताइ कछू अक्कल । अब कैसें हाथ पौंचें छींके तक ?

कृष्ण—अच्छा···तौ अक्कल-बक्कल सौने की तक्कल···अ··· हूं···हां, तू घोड़ा बन जा ।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education, Bantalab Jammu

मनसुखा—(आश्चर्य की मुद्रा में) कोहू ?

कृष्ण—हां-हां घोड़ा। मैं तेरे ऊपर चढ़िकै माखन की चपटिया उतार लुंगो।

मनसुखा—तुही न बन जाये घोड़ा।

कृष्ण—देखिलै हमारी अक्कल नांय मान रह्यौ, आवत होइगी ललिता, मारत ही मारत बनाई देगी मलीदा।

मनसुखा—अच्छा तौ लै बनिगौ घोरा, झट्टि घौंसाइ लेए नैंकसौ छोरा।

(मनसुखा घोड़ा बनता है, कृष्ण उसके ऊपर चढ़कर माखन निकालकर खा रहे हैं)

मनसुखा—देखिलै अकेलौ ही खाइ रह्यौ है।

(ललिता और बिसाखा का प्रवेश; मटकी का गिरकर टूटना)

ललिता—हाय पल्लौ परि गई, जि का है रह्यौ है घर में !

मनसुखा—दीखै नांय, का है रह्यौ है घर में ! माखन जाइ रह्यौ है नर में।

बिसाखा—हाय मिटे मनसुखा, तू है !

मनसुखा—देखिलै भइया कन्हैया, आधौ नाम लेकै दे रही है गारी ! बेइज्जती कर रही है हमारी, लाला मनसुखलाल नांय कहै।

बिसाखा—(बेलन उठाकर) आ बजमारे तोइ बनाऊं 'लाला'!

मनसुखा—(चिल्लाकर) अरे मरिगौ रे, बचइयो भइया कन्हैया ! तेरी सौं ललिता सखी, मैंने तौ माखन सूंघौ हू नांय, या कन्हैया ने ही खायौ है।

(मनसुखा को छोड़कर कन्हैया को पकड़ती है)

ललिता—आज पकरौ गयौ है लल्ला, भौत फोरे हैं माखन के मल्ला।

कृष्ण—चौं मचाइ रही है हल्ला ? तेरी सौं ललिता सखी,

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हम तो तोइ बांधुरी सुनाइबे आय पर तू यहां मिली नाहिं। माखन की चपटिया देखिकें मनसुखा की जीभ लपलपाइ गई।

मनसुखा—हां पट्ठे, लैदै मेरो नाम।

कृष्ण—हां तौ मैंने कब खायौ माखन बताइ ?

ललिता—नांय खायौ माखन ! और जि थूथरे सूं का लगि रह्यौ है ?

कृष्ण—(सिटपिटाकर) जि···जि···माखनहोइगौ ! बंसीवट पै रपट गयौ हो, सो यहां खुरसट लग गई। सो·· सो···सो नैंक चूना लगाइ लियौ।

बिसाखा—चूना लगाय लियौ ! मैं सब जानूं तेरी चालाकी। चल तौ सही, आज जसोदा मैया पै, तोकूं ठीक करबाइ कें मानूं।

(ललिता रस्सी से कृष्ण को बांधती है, बिसाखा मनसुखा को बांधती है)

साथ ही सब मिलकर गाती हैं :—

माखन-चोरी छोड़ कन्हैया, मैं समझाऊं तोय।
नौ लख धेनु नन्दबाबा घर, नित नयौ माखन होय॥
चोरी घर-घर करत श्याम क्यों, लाज शरम नाहिं तोय।
ब्रजवासी तेरी हंसी उड़ावें, घर-घर चरचा होय॥
दही-छाछ के कारन मोहन ! हांसी तेरी होय।
कन्हैया हांसी तेरी होय॥ माखन·····॥

(दोनों को यशोदा के पास ले जाती हैं)

ललिता—चलौ तौ सही, आज याद आइ जायगी मैया !

मनसुखा—अरी छोड़ि दै बिलइया !

ललिता—अरे मिटे जलैया ! मेरो ही तौ माखन खायौ और मोही सों कहि रह्यौ है बिलइया ?

कृष्ण—अरी मेरी दैया, आज पिट्ट परैंगी भैया।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Banaras Hindu

(कृष्ण और सखाओं की यशोदा मैया के समक्ष पेशी और सखियों द्वारा शिकायत)

ललिता—

यशोदा तेरे ही लाला नैं मोरी दई मटुकिया फोर।
दधि की मटकी धरी सीस पै, मैं आई बड़ी भोर।
बिन्दावन की कुंज-गलिन में मिल गयौ नन्दकिसोर॥
दधि मेरो खाय मटुकिया फोरी, ऐसौ ढीठ कठोर।
दोउ हाथन सों बांह पकरिकें दई मोहि झकझोर॥
इत जाऊं तौ जमुना गहरी, लहरे लेत हिलोर।
उत जाऊं तौ सखा संग के घूमत चारों ओर॥
अब न बसेंगे या तेरे ब्रज में लियौ सबन सुख मोर।
छोटी सी कोई और नगरिया लेंगे अन्त टटोर॥

कृष्ण—

मैं नहीं माखन खायौ।
मैया मोरी, मैं नहीं माखन खायौ॥
भोर भयौ गयन के पाछे मधुबन मोहि पठायौ।
चार पहर बंसीवट भटक्यौ सांझ परे घर आयौ॥
मैया मोरी···॥
मैं बालक बहियन कौ छोटौ, छीकौ केहि विधि पायौ।
ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लिपटायौ॥
मैया मोरी···॥
ये ले अपनी लकुटि कमरिया बहुत ही नाच नचायौ।

(पद की अन्तिम पंक्ति 'सूरदास तब···' पार्श्व से गाई जायगी और तभी यशोदा द्वारा कृष्ण को दुलारते हुए कण्ठ से लगाना)

'सूरदास' तब बिहंसि यशोदा लै उर कण्ठ लगायौ॥
मैया मोरी···॥

पटाक्षेप

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

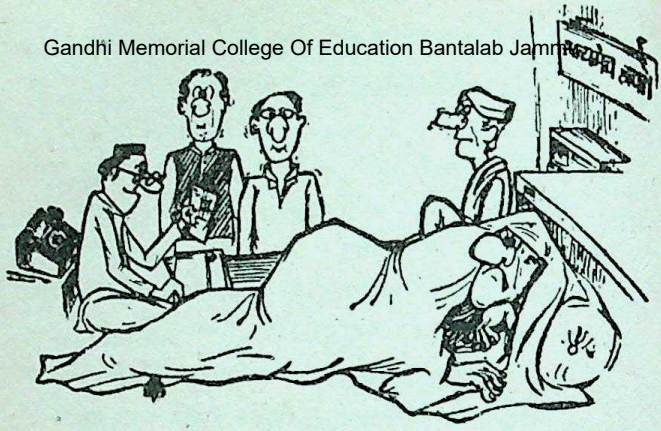

लाला डकारचन्द

पात्र :

लाला डकारचन्द—फर्म हड़पूमल डकारचन्द के मालिक

मुनीमजी—लाला के मुनीम

बल्लो महाराज—लाला का भंगड़ी नौकर

नटवरलाल—सुधारक

चन्दामल—सुधारक

भोला—अखबार वाला हॉकर

धन्नू—अखबार वाला हॉकर

एक्साइज इन्सपैक्टर, चपरासी आदि

[स्थान : सेठ हड़पूमल डकारचन्द सर्राफ की दूकान]

(सन्दूक रखा है, गद्दी बिछी हुई है, मसनद लग रहे हैं, टेलीफोन व टूटा-सा रेडियो रखा है, मुनीमजी बहीखाता कर रहे हैं, लाला डकारचन्द बैठे माला जप रहे हैं और 'सत्यमेव जयते' का बोर्ड लटक रहा है।)

(अखबार वाले लड़कों का प्रवेश)

भोला—आ गया 'बमभोला', आज का नया अखबार

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बमभोला । चीन में चीनियों ने आक्रमण कर दिया । नई-नई खबरें पढ़िये, लीजिये दैनिक बमभोला ।

धन्नू—धकापेल, ताजा समाचार देनेवाला आज का पेपर 'धकापेल', चीन से लड़ाई शुरू हो गई। चाऊ का विश्वासघात। भारतीय सैनिकों का जवाबी हमला। आज का ताजा पेपर धकापेल ।

भोला—बमभोला, गजब का गोला। बेच रहा है भोला। नई-नई खबरें पढ़िये, चीनियों से लड़िये !

धन्नू—लीजिये धकापेल, सबसे पहले खबरें देने वाला आज का पेपर धकापेल। लड़ाई की खबरें, गरमागरम समाचार ।

लाला—बल्लो महाराज, लइयों इन छोरन सों एक-एक अखबार ।

(महाराज का लड़कों से अखबार खरीदना)

भोला—(झपटकर महाराज की नाक के पास अखबार रखते हुए) बमभोला ।

धन्नू—(झपटकर महाराज की नाक के पास अखबार रखते हुए) धकापेल ।

बल्लो महाराज—(पीछे हटते हुए) अरे तौ यार, अरयि चौं परौ, लाओ दोनों जने एक-एक देउ। कै-कै पैसा के हैं ?

भोला—सिर्फ दस पैसा । बमभोला ।

धन्नू—केवल पांच पैसे । धकापेल ।

(महाराज पैसे देकर अखबार ले जाता है। अखबार वालों का प्रस्थान)

बल्लो—लेउ लाला, छिड़ गई ।

(लाला चकित होकर अखबार लेते हैं)

लाला—छिड़ गई ? पढ़ियों मुनीमजी ! (मुनीमजी को अखबार देते हैं)

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Education Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दोनों ओर से भयंकर गोलाबारी। यह तो छिड़ गई लाला !

लाला—आइहाइ, दोनों जने छिड़ गई, छिड़ गई कर रहे हैं, हमकों तौ यह बताओ कै अपने सोने-चांदी के व्यापार पै जा कौ कहा असर पड़ेगौ ?

बल्लो—असर जि परैगौ कै सौनों ढाई सौ रुपया तोले बिकगौ।

लाला—आइहाइ, तुमसे कौन पूछि रह्यौ है महाराज, वैसे ही कूदे पड़ौ बीच में जोहैकाय।

मुनीम—लालाजी, सोना तो तेज जायगा, इसमें कोई सन्देह नहीं। आज के रेडियो में बड़ी गर्मागरम खबरें आई हैं। लड़ाई काफी दिनों तक चल सकती है लाला !

बल्लो—लड़ाई चलैगी कम से कम दस साल, खूब खैंचियो माल। बड़ौ बढ़िया मौकौ है लाला !

लाला—आइहाइ, फिर बोले तुम बिना पूछै (मुनीम से) चौं मुनीमजी, जि चौकी जोहैकाऐं कैसी हैं, लकड़िया की हैं, पत्थर-चूना की हैं, कै सोने-चांदी की चौकी हैं ? इनपै हमला चौं करें चीनी जोहैकाय ?

बल्लो—(स्वतः) हाय री अकल, पामरी लैकें दौड़ परी है। हे लच्छो मैया, तो कों उल्लू की सवारी ही पसन्द आई ? लाला कों सपने में हू सौनों-चांदी दीखै।

मुनीम—लालाजी, यह फौजी चौकियां हैं, इनपर हमारे सैनिक, देश की रक्षा के लिए तैनात रहते हैं। इनका बड़ा महत्त्व है और देखिये ! (अखबार पर अंगुली रखकर) नेहरूजी ने सुरक्षा-कोष के लिए अपील निकाली है।

लाला—आइहाइ, अपील निकारी है तौ हमें का ? यहां तौ आजकल वैसे ही बारह बज रहे हैं। बन्दो-पानी है नांय। महंगाई

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

के मारै नाक में दम है। टैक्सन के मारै जान निकरी जावै, रक्षाकोष को कहां सौ दै जाहिकाय। श्रीराम, जै श्रीराम।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुनीम—लालाजी, ऐसी बातें मत करिये, इस समय देश पर संकट है, अपनी शक्ति के अनुसार कुछ न कुछ सहयोग अवश्य देना चाहिए।

बल्लो—जि नांय दिंगे फूटी कौड़ी भी।

लाला—(बल्लो की बात अनसुनी करके) आइहाइ, देश पै संकट है, जि तौ तुम्हारी बात ठीक है, पर भैयाजी, ठंडे दिल से विचार करौ जोहैकाय, जल्दी चौं कर रहे हौ। दिंगे जरूर कछू न कछू। अभी लड़ाई कौ रुख देखौ, अपनौ दुख-सुख देखौ। जीत देखौ, हार देखौ, तेल देखौ, तेल की धार देखौ।

बल्लो—और एक-एक के चार-चार देखौ।

लाला—का मतलब ?

बल्लो—मतलब जि कै कोई चन्दा में एक रुपया देगौ तौ हमारे लाला चार रुपैया दिंगे।

लाला—(माला फेरते हुए) श्रीराम, जै श्रीराम।

(टेलीफोन की घंटी)

लाला—(टेलीफोन उठाकर) हलाउ, हड़पूमल डकारचन्द··· हां-हां, मैं डकारचन्द बोल रह्यौ हूं। आप···? अच्छा, कहौ घूरीमल, क्या हाल-चाल हैं। सौनों का भाव बन्द भयौ आज! १४५! अच्छा ?···बम्बई ऊंची आई है. लड़ाई छिड़े गई बतामें साब! देखौ का होवै। तुम्हारौ क्या ध्यान है···ठीक-ठीक हमारी हू ऐसी धारना है। (टेलीफोन रखते हुए) लेउ मुनीमजी, सौनों तौ ऊंचौ जाय रह्यौ है जोहैकाय।

बल्लो—मैंने तौ पहिले ही कही, ढाई सौ बिकैगौ।

लाला—आइहाइ, ठहरौ उस्ताज, बेकार हल्ला मत कियौ करौ। हां तौ मुनीमजी, ऐसौ करौ, सवेरे की गाड़ी सों दिल्ली चले

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जाओ। ५०० तोले की तैयार माल संग लै आओ और ५०० तोले को मार्जन दै आओ। बाकी डिलीवरी पहली तारीख कों लै लिंगे। श्रीराम, जै श्रीराम।

मुनीम—फोन से ही सौदा क्यों न कर लिया जाय ?

लाला—आइहाइ, तुम समझौ नाओ जोहैकाय, तीन घंटा तौ फौन मिलवे में ही लग जायंगे और तुम जानौ आजकल घंटा भर में कछू सों कछू होवै। बजार खुलते ही छातौ पै जाय चढ़ौ। पहले मारै सो जीतै। अब जाओ तुम सिदौसी सोई जाओ। सवेरे पौने सात की गाड़ी न निकस जाय। देखौ ! एक बात कौ ध्यान रखियों, दिल्ली में सोने के पांसे ब्लैक में 'बिस्कुट' के नाम से बिकै हैं। श्रीराम, जै श्रीराम।

(मुनीम का प्रस्थान)

(सुरक्षा-कोष का चन्दा लेने वाले दो व्यक्तियों का प्रवेश; सेठजा उन्हें देखते ही माला जपने लगते हैं)

चन्दामल—नमस्कार सेठजी !

नटवरलाल—जैगोपाल लालाजी !

लाला—नमस्कार, जैगोपाल (मुंह खोलकर और आंखें फाड़कर देखता है) कहिए कैसें कष्ट कियौ ? मेरे जोग्य सेवा ?

चन्दामल—यौं ही आपके दर्शन करने चले आये !

बल्लो—कर लेउ दर्सन, तर जाओगे भवसागर सों !

नटवरलाल—सेवा क्या है सेठजी, प्रार्थना करने आये हैं। आपको मालुम है ही कि हमारे देश पर दुष्ट चीनियों ने आक्रमण कर दिया है। उसका मुकाबला करने के लिए आपका सहयोग भी आवश्यक है।

लाला—भैयाजी, हमारौ तौ सरीर ही नांय चलै। हम लड़ाई में का सहजोग दै सकैं जोहैकाय। श्रीराम, जै श्रीराम।

बल्लो—बन्दूक देखिकें लाला कूं बुखार आइ जावै। पिस्तौल

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

देखकें सन्निपात है जावै।

लाला—आइहाइ, वल्लो तौ पांच हजार देवौ महाराज, बड़ी खराब आदत है तुम्हारी जोहैकाय।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नटवरलाल—देखिये सेठजी, हमारा मतलब आपकी शारीरिक सेवा से नहीं है। आप तो धन द्वारा देश-सेवा कर सकते हैं।

लाला—(चौंककर) धन ? श्रीराम, जै श्रीराम।

बल्लो—(उसी तरह) धन ? श्रीराम, जै श्रीराम।

चन्दामल—हमारा तात्पर्य यह है लालाजी कि आप कुछ थोड़ी-बहुत आर्थिक सहायता देकर, इस पुण्यकार्य में हाथ बटा सकते हैं। हम आपका समस्त धन नहीं मांगते।

नटवरलाल—देखिये सेठजी, पहले मैं आपका परिचय करा दूं। आप हैं नगर सुरक्षा समिति के मंत्री श्री चन्दामल···और मेरा नाम नटवरलाल···

लाला—(चौंककर) नटवरलाल ? कब छूटि कें आये भैया जी !

चन्दामल—(हंसकर) अजी लालाजी, यह ४२० वाले नटवरलाल नहीं हैं। ये हैं नगरपालिका के भूतपूर्व उम्मीदवार जो पिछले चुनावों में सिर्फ पांच हजार वोटों से हारे थे। आप उन्हें भूल गये सेठजी ?

लाला—आइहाइ, भूलौ तौ नाऊं बाबूजी, पर हारबे वारे की सकल कछू और तरह की बन जाय जोहैकाय। देखौजी चन्दामल, चन्दा तौ मैं जरूर दुंगो और खूब दुंगो, पर आज हमारे मुनीमजी बाहर चले गये हैं, रोकड़ की चाभी उन्हीं के पास है जोहैकाय। श्रीराम, जै श्रीराम।

बल्लो—तुम्हारे पास दूसरी तारी जो मौजूद है लाला ! मुनीमजी कों घता भेजौ, दै दाइ कैं टन्टौ काटौ।

लाला—आइहाइ, तुम तौ भोंदू हौ गुरू ! बीच में बोले बिना

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

तुमकों रोटी नांय पचै, जोहैकाय।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नटवरलाल—नाराज मत होइये सेठजी, आप बड़े भाग्यशाली हैं जो एक स्पष्टवादी और सच्चा व्यक्ति भी आपके यहां मौजूद है। वह आपको नेक सम्मति दे रहा है।

बल्लो—अरे हा, कर ले सो काम और भज ले सो राम। लाला कों डाइभट्टी की बीमारी वैसे है, काऊ दिना यों ही लुढ़क जाइंगे, कट्ट प्रान निकर जाइंगे।

लाला—बात ऐसी है बाबूजी, कै अभी तौ लड़ाई सुरू भई है, कछू टैम देउ हमकों, तब तक हमारे मुनीमजी आइ जाइंगे। उनसों सलाह करकें···

चन्दामल—कहां गये हैं आपके मुनीमजी ?

बल्लो—दिल्ली गये हैं सोनों खरीदवे।

नटवरलाल—सोना खरीदने ?

लाला—आइहाइ, बक रहे हे जि तौ वैसे ही, मालुम कछु है नांय। श्रीराम, जै श्रीराम।

चन्दामल—अच्छा छोड़िये सेठजी! हम फिर आयेंगे आपकी सेवा में, नमस्कार।

(चन्दामल व नटवरलाल का प्रस्थान)

लाला—(नाराज होकर) बल्लो महाराज, तुम्हारी बड़ी भद्दी आदत है जोहैकाय। अपने घर की बात, अपने व्यौपार कौ भेद, ऐसें बताइ देउ करें जोहैकाय; बा साव बा!

बल्लो—अजी तौ मोय का खबरी कै जाऊ में कछू भेद घुसि रह्यौ है। मैं तौ एक राह कौ चलौ भयौ हूं लाला!

(अखबार वाले लड़कों का प्रवेश)

बन्नू—आ गया 'धकापेल' आज का नया पेपर। मुरारजी देसाई का भाषण। स्वर्णबौन्ड लेकर देश की सहायता करिये। नया अखबार धकापेल।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भोला—बमभोला, गजब का गोला, सेठ हापड़जी-पापड़जी ने दस हजार के स्वर्णबॉन्ड खरीदे। ब्लैक का रुपया ठिकाने लगाने के लिए सुनहरी अवसर। बमभोला देखिये, ताजा खबरें।

धन्नू—आ गया धकापेल वाला, चीनी जासूस पकड़े गये। नई खबरें, नया मसाला, पांच नया पैसा।

भोला—बमभोला ..बरों का झोला, तोप का गोला, दस नया पैसा। (महाराज दोनों से अखबार लेते हैं, लड़कों का प्रस्थान)

(मुनीमजी का प्रवेश)

मुनीम—जै गोपाल लालाजी !

लाला—कहो साब, क्या करि आये मुनीमजी ?

मुनीम—ले आया लाला ५०० तोले। (थैला में से निकालकर सोने के पांसे रखता है।)

लाला—बल्लो महाराज, तुम नेंक बाहर खड़े है कै देखते रहो, कोई आवै तौ रोक दीजौ।

(महाराज का बड़बड़ाते हुए बाहर जाना, किन्तु सब बातें छुपकर सुनने का उपक्रम करना)

लाला—का भाव लाये ?

मुनीम—एक सौ पच्चीस के भाव लाया हूं लाला !

लाला—अच्छा, बड़ौ सस्तौ है गयौ !

मुनीम—१२५ दस ग्राम का भाव है लाला !

लाला—आइहाइ, हम नांय जानें जा ग्राम-फ्राम कों। हमें तौ जि समझाओ कै तोले के हिसाब सें का भाव पड़ौ जोहैकाय ?

मुनीम—ऐसा पड़ेगा करीब १४५, बड़ी तेजी भन्नाय रही है लाला ! लेते-लेते पांच रुपये चढ़ गये।

बल्लो—(भीतर आकर) ढाई सौ बिकैगौ।

लाला—आइहाइ, फिर कूदे तुम बीच में ! देखौ मुनीमजी, अखबारन में लिख रही है कै बिदेसन सों सोने के बदले में हथियार

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Digitized by eGangotri, Mirror Courtesy College of Education Bantalab Jammu
मंगाये जावांगे, सो तुम देख लीजो सोनो पैदा बांद होइगो, या सोने कों दाब कै रखनो है जोहैकाय। कोई ग्राहक आवै, सफा नाईं कर देउ। काऊ भाव मत बेचौ।

बल्लो—ढाई सौ···

लाला—आइहाइ, बिकैगो तौ ढाई सौ ही, पर महाराज, तुम जादा हल्ला मत करौ जोहैकाय, सौ बैरी सौ दुसमन हैं। काऊ कौ खायौ-पीयौ नांय देख सकें जोहैकाय। श्रीराम, जै श्रीराम।

मुनीम—दिल्ली में तौ ऐसी अफवाह है कि सोने पर बहुत जल्दी नियन्त्रण हो जायगा।

बल्लो—बस फिर तौ जा सोने कों ब्लैक में बेचकें खेंचौ माल।

लाला—आइहाइ, धीरै बोलौ महाराज! श्रीराम, जै श्रीराम।

(अखबार वाले लड़कों का प्रवेश)

धन्नू—आ गया धकापेल का नया अंक। चीनियों द्वारा इक-तरफा लड़ाई बन्दी। चाऊ की चाल और माऊ का खेल, पढ़िये आज का धकापेल।

भोला—बमभोला, गजब का गोला। चीनियों के गोला-बारूद निबट गये, चाऊ-माऊ दलदल में फंस गये। (महाराज द्वारा अख-बार खरीदना)

भोला—(अखबार देते हुए) बमभोला।

धन्नू—(" ") धकापेल।

बल्लो—एक चहिऐं हमकों तौ।

भोला—पहले मैंने दिया है बमभोला।

धन्नू—पहले मैंने दिया है धकापेल।

बल्लो—यार जि तौ बड़ी चक्कर की बातैं। हमकों एक अखबार चहिऐं और तुम दोनों सिर पर रहे हो। अच्छा तौ लेउ आधौ-आधौ दोनोंन में सों फारिकै लै लऊं, किस्सा खतम। (अख-बार फाड़ता है)

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भोला—यह क्या कर रहे हैं महाराज, आधा लें या चौथाई, पैसे पूरे देने पड़ेंगे।

बल्लो—वाहरे छोरा, कौन से मदर्सा में पढ़ौ है ? अरे एक अखबार दस पैसा कौ तौ आधौ पांच पैसा कौ। सूधौ हिसाबै, हमकूं बहकावै।

धन्नू—गुरू, यह भांग की पुड़िया नहीं है, जो आधी पीछे बिक जायगी। पैसे पूरे दीजिये। (महाराज का कुर्ता पकड़ लेता है)

मुनीम—अरे महाराज, किस चक्कर में पड़ गये। ले आओ न जल्दी।

बल्लो—अच्छा लेउ भैया, छोड़ौ पीछौ। (दोनों को पैसा देता है)

लाला—(अखबार देखकर) जि क्या, फटे भये अखबार चौं लाये हो ?

बल्लो—अजी छोरन से लड़ाई है परी, वामें फटि गये।

लाला—(अखबार फेंककर) हमें नांहि चहिऐं, वापिस करि आओ।

बल्लो—(अखबार लेकर फिर जाता है) लेउ रे छोराओ ! हमारे लाला फटे अखबार नाहें लें।

भोला—नाहें लें तो हमें क्या ! फाड़े हैं तुमने या हमने ?

(दोनों लड़के भाग जाते हैं, महाराज देखता हुआ रह जाता है)

बल्लो—(वापस आकर) लाला, छोरा तौ भाजि गये।

मुनीम—गुरू, वैसे तुम बड़े अक्खड़ बनते हो, ज़रा-ज़रा-से लड़के तुम्हें उल्लू बनाकर भाग गये। लाओ इनसे ही अपना मतलब निकालेंगे। (फटे अखबारों को पढ़ता है)

मुनीम—लो सेठजी, लड़ाई तो बन्द हो गई। चीनी पीछे हटने लगे।

लाला—जि क्या बात भई मुनीमजी, जोहैकाए जि तौ बुरौ भयौ। अब सौने कौ भाव गिर जाय कहूं। मुनीमजी, मोकों तौ

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जामें कछू चाल दीखै।

मुनीम—हमारे संगठन और शक्ति को देखकर चीनियों के होश उड़ गये हैं लालाजी, इसलिए पीछे हटने के सिवा और वे कर ही क्या सकते थे ? अब इसे चाल समझिए या और कुछ।

लाला—का कई, हमारी सकती देखकें पीछे हट गये हैं चीनी! हः हः हः हः ! अरे मुनीमजी, हम तौ तुम्हें अकलबन्दर समझौ करते, पर निकसे बिल्कुल बछिया के ताऊ। देखौ, जि सब प्रोपर-गंडा है प्रोपरगंडा। जाड़ेन के दिन निकस जान देउ, फिर दुबारा ऐसो हल्ला बोलिगे चीनी कै देखते रह जाओगे। तुम देखियों, ऐसी घनघोर लड़ाई होयगी कै···।

बल्लो—सौनों ढाई सौ है जाइगौ।

लाला—आइहाइ, बात नहीं सुनौगे पूरी। हां तो देखो, अष्ट-ग्रह-योग कों लोग-बाग भूठौ बतावते।

बल्लो—वुही तौ अब अपनौ चमत्कार दिखाइ रह्यौ है लाला!

लाला—तुम्हारो बेटा जीवै महाराज ! इतनी देर में अब एक अकल की बात निकसी है तुम्हारे थूथरे में सों।

बल्लो—(स्वगत) लाला, थूथरो तौ तुम्हारो है, मेरो तौ मुखारबिन्द है। (चन्दे वालों को देखकर) अजी लाला, बु तौ फिर आइ रहे हैं।

लाला—(चौंककर) कौन आ रहे हैं ?

बल्लो—लाला, बु तौ फिर आइ रहे हैं।

लाला—आइहाइ, कौन आ रहे हैं, कछू बताओ तौ सही।

बल्लो—बु चन्दावारे आइ रहे हैं।

लाला—चन्दावारे ? (चादरा ओढ़कर गद्दी पर लेट जाता है)

(चन्दा वालों का प्रवेश)

चन्दामल—कहिए महाराज, कहां गये लालाजी ?

मुनीम—लालाजी कुछ अस्वस्थ हैं आज, इसलिए पड़े हुए हैं।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नटवरलाल—क्या बात हो गई ?

बल्लो—बात का है गई, तुमकों देखिकें बुखार आइ गयो है लाला कों।

नटवरलाल—हमको देखकर ?

मुनीम—अजी छोड़िये, इनकी बात और कुत्ते की चले बरात। बात यह है बाबूजी ! व्यापार में इस समय उथल-पुथल चल रही है। आप दो-चार दिन बाद आ जाइये, सब प्रबन्ध हो जाएगा। हमारे लालाजी किसीसे पीछे रहने वाले नहीं हैं। उन्होंने एक रक्षा-फंड खोल दिया है, उसमें प्रत्येक कर्मचारी से कुछ न कुछ जमा कराया है।

नटवरलाल—कितना रुपया जमा हो गया है उसमें ?

बल्लो—हत्तुमारेका, (बही उठाकर) देख लेउ बामें देर का लगै। नौकरन की तनखा में से काट-काटकर ६३५ रुपैया अब तक जमा भये हैं और ६२५ नाम लिख रहे हैं।

नटवरलाल—नाम कैसे लिख रहे हैं, क्या इतनी रकम आप लोग रक्षा-फंड में भेज चुके हैं ? क्यों मुनीमजी ?

(मुनीमजी बही लेकर पन्ने पलटते हैं)

बल्लो—अजी मैं बताऊं तुम्हें ६२५ रु० को भेद। एक रिक्शा खरीदो है लाला नें सवा छै सौ रुपैया कौ। सो रिक्शा की रकम रिक्शा-कोष के नाम डार दई।

नटवरलाल—रिक्शा की रकम रक्षा-कोष में···

(लाला चादरा फेंककर उठते हैं)

लाला—आइहाइ, रिक्शा की रकम रिक्शा-कोष में नाहें जायगी तौ और कहां जायगी जोहैकाए ? तुम कछू पढ़े-लिखे तो है नाओ महाराज, बीच में टांग अड़ाइवे बिना मानो नाओ जोहैकाय।

बल्लो—हां ठीक बातैं साब, रिक्शा में बैठिकैं लाला के बाल-बच्चे स्कूल जांगे तौ उनकी रक्षा भई कै नांय ?

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लाला—हां तो मुनीमजी, ऐसा करो। रिक्शा-फंड में जो दस-पांच रुपया बाकी निकसि रहे हैं, बु इनकों दे देउ, टन्टौ कटै। श्रीराम जै श्रीराम।

चन्दामल—धन्य है सेठजी, शर्म नहीं आती आपको ! गरीब कर्मचारियों के वेतन से रक्षा-फंड के नाम पर पैसा काट-काटकर रिक्शा खरीद लिया और हमें ५ रुपये दिखा रहे हैं। हिं···सत्य-मेव जयते का बोर्ड लटका रक्खा है। चलो जी नटवरलाल !

नटवरलाल—यह अमानत में खयानत है, गद्दारी है। आपको डिफैन्स कानून में सज़ा हो सकती है। या तो आप पूरी रकम ६३५ रुपये रक्षा-फंड में जमा करिये, वरना हमें यह केस पुलिस में देना पड़ेगा। चलो जी चन्दामल ! (प्रस्थान)

लाला—बल्लो महाराज, तुम अपनौ हिसाब कर लै जाऔ, अब हमें तुम्हारी जरूरत नाय जोहैकाय।

बल्लो—का बात भई लाला, कैसें नाराज है गये ?

लाला—तुमकों जि बात बताइवे की क्या जरूरत ही, जोहै-काय कै रिक्शा खरीदौ गयौ है ?

बल्लो—लाला, तुम्हारे मुनीमजी उनकी बातन कौ जवाब नहीं दै सके, पन्ने पलटवे लगे, तब मैंने तड़ाक सें बात साध लई और सच्ची बात बताय दई। सच्च बोलवौ पाप है तो जा सैनबोट कों हटाइ कै 'झूठमेव जयते' लिखवाइ कैं टांग देउ।

लाला—आइहाइ, तुम्हें इन बातन सों का मतलब ? हम चाहें जो कछू करें, हमारी दुकान जोहैकाए। तुम अपनौ धन्धौ और कहूं देख लेउ, अब हमें जरूरत नाहें।

बल्लो—जरूरत नाहें तौ रहन देउ लाला ! पर यों ही नाहें निकसुंगो। पुरानौ नौकर हूं १० साल कौ। साल-भर में १५ दिना के हिसाब ते १० साल में पांच महीना की तनखा के रुपैया देने परिंगे और एक महीना को लोटस। और नहीं तौ पूरी छै महीना

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
की तनखा जाई देखत देउ तो कल्ल तें तुम्हारो म्होड़ो नहीं देखूं लाला !

मुनीम—अजी महाराज, तुम काम करो, इन बातों में क्या रक्खा है, ऐसा होता ही रहता है, अब थोड़ी-सी ज़िन्दगी के लिए लालाजी से बिगाड़खाता करोगे ?

बल्लो—थोड़ी-सी जिन्दगी कैसें मुनीमजी, अभी तो सैकड़न दुष्टन कों मारि कै मरुंगो !

मुनीम—हां-हां तो हम कब कह रहे हैं कि अभी मर जाओ। अच्छा हमको एक आने की लिसौड़े की माज़ूम ला दो गुरू, कुछ खांसी हो रही है। (पैसे देता है)

(मुनीम का पैसा देना, महाराज का प्रस्थान)

मुनीम—देखिये लालाजी, पुराने नौकर से इस तरह बिगड़ना उचित नहीं आज के समय में। इसे हम लोगों की सब भीतरी बातें मालूम हैं, कहीं कुछ शिकायत कर दी तो लेने के देने पड़ जायंगे। खैर छोड़िये इस बात को। मैं यह कह रहा था कि बाज़ार में कुछ ऐसी अफवाह है कि सोने पर कन्ट्रोल हो गया है।

लाला—आइहाइ, तुम सुनी करौ, सैकड़न तरह के अफुआ उड़ी करें बजार में। का करें हमारो तो रेड़िया खराब परो भयो है, नहीं तो बताइ देते तुमकूं। पर एक बातै मुनीमजी ! सोने पै कन्ट्रोल हैऊ जाय तौ अपने लिए तो जाऊ में फाइदा है।

मुनीम—कैसे ?

लाला—ऐसें, कै जा चीज पै कन्ट्रोल भयो, वो ही नापैद है गई और दाम दूने है गये। तब सोने कौ कन्ट्रोल का अपनो रंग दिखावैगो नहीं। तुम देखत जाओ, अपने पास तो खूब स्टौक है। मजा आइ जाइगो। हः हः हः (हंसता है) श्रीराम, जै श्रीराम।

(अखबार वाले लड़कों का प्रवेश)

भोला—बमभोला। सोने पर कन्ट्रोल हो गया, मुरारजी देसाई

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का भाषण। पढ़िए नया पर्चा बमभोला।

धन्नू—आ गया धकापेल, सर्राफों का बिगड़ गया खेल। सुनारों का निकल गया तेल। सोने पर निमंत्रण हो गया। पढ़िये नई-नई खबरें, धकापेल।

भोला—१४ कैरट के चक्कर में सुनारों का धन्धा चौपट। सोना सस्ता हो गया; सटोरियों का हाल खस्ता हो गया। देखिये आज का बमभोला।

मुनीम—लाना लड़के, एक अखबार।

(दोनों का अखबार देने को झपटना)

मुनीम—अरे भई, एक चहिए हमें तो।

भोला—पहले मैंने दिया है बमभोला।

धन्नू—पहले मैंने दिया है धकापेल।

भोला—देखबे धन्नू, तू बार-बार मुझसे मत भिड़ा कर, नहीं तो एक चांटे में घन्टाघर दिखा दूंगा।

धन्नू—अबे जा किसी और पर रौब मारना। लिए फिरता है तीन कौड़ी का अखबार, नाम रख दिया बमभोला। भंगड़ी सम्पादक क्या चला सकते हैं पेपर!

भोला—हमारा संम्पादक भंगड़ी है तो भंगड़ी सही, तेरे सम्पादक से तो अच्छा है। सटोरियों से रिश्वत खाता है। सालभर में एक दिन नहाता है।

धन्नू—बहुत बढ़-बढ़कर बातें मत बोल, सब मालूम है मुझे, पिछले चुनावों में विरोधी पार्टी से मिलकर हजारों रुपये डकार गया तेरा सम्पादक। दुनियां-भर के चन्ट-चालाक, नकल कर-करके दूसरे अखबारों के लेख छाप दिये, बन गये सम्पादक।

भोला—और तेरा सम्पादक बड़ी सच्ची खबरें छापता है! कहीं एक चुहिया मर गई, छाप दिया "तीन मरे, तेरह घायल"।

धन्नू—अबे तो जोरदार खबरें बनाना भी तो एक आर्ट है,

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तू क्या जाने इस भेद को ।

भोला—तेरा सम्पादक गधा है ।

धन्नू—तेरा सम्पादक पाजी है ।

भोला—तेरे सम्पादक का बाप पाजी है ।

धन्नू—तेरे सम्पादक के बाप का बाप पाजी है । (लड़ने को तैयार हो जाते हैं)

लाला—अाइहाइ, मुनीमजी, जि का आफत लगी । हटाओ इनको पइसा दैदाइकै ।

मुनीम—(पैसे देकर बीच-बचाव करता हुआ) आपसी झगड़े में सम्पादकों को क्यों कोस रहे हो भाई, जाओ अब खतम करो लड़ाई । (लड़कों का प्रस्थान; दृश्य परिवर्तन)

दूसरा दृश्य

[स्थान : रास्ता]

(एक ओर से महाराज हाथ में दवा लिए हुए प्रवेश करते हैं, दूसरी ओर से चन्दामल व नटवरलाल का प्रवेश)

बल्लो—जैरामजी की बाबूजी !

नटवरलाल—नमस्कार महाराज, कहिए कहां से आ रहे हैं ?

बल्लो—मुनीमजी के ताई लिसोड़े की माजूम लेबै गयो । लेउ पाओ थोड़ी-सी ।

नटवरलाल—(हंसकर) नहीं महाराज ! मुझे क्या खांसी थोड़े ही हुई है । सुना है आपने ? सोने पर नियंत्रण हो गया है ।

बल्लो—(आश्चर्य से) है गयो कन्ट्रोल ?

चन्दामल—आप जाने किस दुनिया में रहते हैं गुरू ! तमाम बाजार में शोर हो गया है, पुलिस चक्कर काट रही है । तुम्हारे लाला के पास तो काफी सोना होगा । एक्साइज इन्सपैक्टर को सब लिखवाना पड़ेगा ।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बल्लो—अजी बाबूजी, हमारे लाला नाहें लिखाइ सकैं। ५०० तोले सोनों तो हाल में ही दिल्ली सों मुनीमजी लाये हैं पर हमारे लाला काऊ सें कमती नांय, बड़े-बड़े सी० आई० डी० कन्नी काटें, लाला की माला के सामने काहू की दार नाहें गलै। सोने कों ऐसी जगह छिपा दियौ है कै भगवान तक कों बाकी हवा नाहें लग सकै।

नटबरलाल—देखौ महाराज, आप तो देशप्रेमी ब्राह्मण और मस्त जीव हैं। आपको इन पाप-पुण्यों से क्या मतलब, ठीक-ठीक बता दीजिये, सेठजी ने सोना कहां छिपाकर रक्खा है। विश्वास रखिये हम आपका नाम प्रगट नहीं होने देंगे।

बल्लो—अजी नाम लै देउ तौ क़ौन-सी फांसी है, मोकों तौ वैसे हू ऐसे गद्दार के यहां नौकरी नाहें करनी अब। मोइ काहू कौ डर नाहें। अपने राम तौ अक्खड़ तबियत के फक्कड़ जीव हैं।

चन्दामल—तो फिर बता दीजिये न कहां रक्खा है सोना ? दुकान में या घर में ?

बल्लो—न घर में न दुकान में, न छत पै, न छान में।

नटबरलाल—यह तुकमिल्ला छोड़ो महाराज, जल्दी से ठीक बात बता दो। एक्साइज इन्सपैक्टर ले जाकर हमें अभी पकड़वाना है मुद्दा।

बल्लो—अजी पकड़ लियौ मुद्दा, काहू के दादे कों पतौ नाहें लग सकै।

चन्दामल—(हाथ जोड़कर) गुरू, देश की रक्षा का प्रश्न है उसके लिए आप···

बल्लो—अच्छी बात है, तुम इसपट्टर कूं लै कै आओ तौ सही दुकान पै। जब तुम सब जने देख-देख के हार जाओ तब मेरौ एक इसारौ देख लीजों।

नटबरलाल—धन्यवाद गुरू ! नमस्कार। चलो भईचन्दामल!

(चन्दामल व नटवरलाल का प्रस्थान)

gamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बल्लो—अरे जब नौकरी ही छूट रही है तो रेड़ करिकें हटुंगो रेड़। यामें कछू पाप नाहं। हिन्दुस्तानी खाट में जो खटमल पैदा है गए हैं उनकूं तो कुचल दैवे में ही देस की भलाई है। बताओ तो सही, देस पै संकट छाइ रह्यो है और लाला कों मुनाफाखोरी में मजा आइ रह्यो है। मोकों हिन्दुस्तान को राजा बनाइ दियो जाय तो ऐसे मक्कारन कों गोली सों उड़बाय दऊं। अच्छा अब चलनो चहिएं, लिसौड़े की माजूम से मुनीम जी की खांसी और लाला के गरे सों सोने की फांसी दूर करनी है।

(प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

[स्थान : लाला की गद्दी]

लाला—(टेलीफोन उठाकर) हलाउ···हां जी···धूरीमल बोल रहे हैं का? सोनो तो दो सौ बिकगो धूरीमल···ऐं···हमारे पास सोनो कहां है···बस ५-४ तोले पड़ो भयो है सो वो बेचनो नांय, जानें का काम आइ पड़े···नाय···न···आइहाइ···भैयाजी, सोनो है ही नांय, दैं कहां सों दें···(टेलीफोन रखकर) श्रीराम, जै श्रीराम।

मुनीम—क्यों, क्या कह रहे हैं धूरीमल?

लाला—१४८ मांग रहे हैं पर हमकों नांय बेचनो साब!

मुनीम—देख लीजिये लालाजी! २४ घंटे में ही सोने ने क्या चमत्कार दिखाया है; फेल हो गई वित्त मंत्री की स्कीम।

लाला—अजी मुनीमजी, व्यौपारीन सों कोई नाहें जीत सकै। पुलिस वारे सराफे में आये और झक मार कें चले गये। रात की रात में सब तिजोरी खाली हैकें सोनो अन्तरध्यान है गयो और जो एक महीना की मुद्दत मिली कायं, जामें हजारन-लाखन तोले के जेवर बनबन कै बिक जांगे। कहूं ऐसे सोनो पकड़ो जायं? काऊ बनिया ते सलाह लई होती तो कछू सफलता हू मिलती। श्रीराम, जै श्रीराम।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

(महाराज का प्रवेश)

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बल्लो—लेउ मुनीमजी अपनी दवाई (लाला से) केवलराम सुनार ने यों पुछवाई है लाला, कछू जेवर असली सौने के बनवामनौ चाहौ तौ मैं एकान्त में बनाइ सकूं।

लाला—कहौ मुनीमजी, क्या राय है? सोने के पांसे रखनौ ठीक है कै जेवर बनवाइकै रक्खें?

मुनीम—लालाजी, मेरी राय से तो जेवरों के झगड़े में पड़ना ठीक नहीं है। जेवर बनते-बनते सुनार के यहां पकड़ लिये गये तौ मरे, और बाद में जेवर बिके नहीं तौ फिर गलवाकर १४ कैरट के बनवाने पड़ेंगे।

लाला—ठीक कह रहे हौ। देख लेउ महाराज, जा बात की तनखा पावें मुनीमजी, तुम्हारी तरह नांय कै अट्ट की पट्ट बक दई। जाकौ खइये नौन पानी ताकी करिये आबादानी। श्रीराम, जै श्रीराम।

बल्लो—ठीक है लाला, जामें जितनी अकल भगवान ने दई है वासों जादा कहां से आइजाइगी। जा समै भगवान के दरबार में अकल बट रही, तब वहां लम्बी लैनडोरी लग रही ही। आप और मुनीमजी अगारी हे, हम सब सों पीछे हे। हमारौ नम्बर आयौ तब तक अकल खतम है गई। अब जामें हमारौ का कसूर है लाला?

लाला—एक बात है मुनीमजी, सौने पै कन्ट्रौल भयौ है तब सें सराफे में तौ प्लेग-सी फैल गई है जोहैकाय।

बल्लो—और जा प्लेग में कैऊ सरापन कें गिल्टी निकसि आई है लाला···

लाला—(आश्चर्य से) गिल्टी?

बल्लो—हां, गिल्टी। (बाहर की ओर देखकर) है, जि पुलिस वारे कैसें आइ रहे हैं?

लाला—(घबराकर) पुलिस वारे?

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

(एक्साइज़ इन्सपैक्टर व पुलिस के साथ चन्दामल व नटवरलाल का प्रवेश। लालाजी मसनद पर बैठकर माला जाने लगते हैं)

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन्सपैक्टर—लाला डकारचन्द आपका ही नाम है ?

(मुनीम का बही उठाकर भागना)

नटवरलाल—(रोककर) ठहरिये मुनीमजी, कहां ले जा रहे हैं बहीखाता ? बैठिये उधर। (मुनीमजी का बही लेकर बैठ जाना)

लाला—श्रीराम, जै श्रीराम, मुनीमजी, इनकों रक्षा-फंड के लिए चन्दा दै देउ।

चन्दामल—क्षमा कीजिये सेठजी, हम इस समय चन्दा लेने नहीं आये। आपके यहां दिल्ली से जो बिस्कुट आये हैं, उनका उद्धार करने आये हैं।

लाला—बिस्कुट···वे तो बाल-बच्चेन कूं बांट दिये।

चन्दामल—खाने के नहीं सोने के बिस्कुट, यानी पांसे। आपने फार्म में सिर्फ पांच तोले सोना दिखलाया है, जबकि ५०० तोले सोना आपके यहां होना चाहिए।

लाला—५०० तोले ! राम-राम। भगवान की सौगन्ध बाबू जी ! देख लेउ दुकान परी है सबरी। हम भला ऐसौ खोटौ काम कर सकें ? हरे-हरे, श्रीराम, जै श्रीराम। (माला फेरने लगता है)

इन्सपैक्टर—ठीक है सेठजी, लेकिन तलाशी तो आपको देनी ही पड़ेगी। देखिये हमारे पास यह तलाशी का वारंट है।

मुनीम—(कांपते हुए) लाला, मेर पट में बड़े ज़ोर का दर्द उठ रहा है। मैं निबटकर अभी आता हूं। (उठने की कोशिश करता है)

इन्सपैक्टर—(डपटकर) ठहरिये, अभी कहीं नहीं जा सकते आप, सिट डाउन।

लाला—(कराहती हुई आवाज़ में) महाराज, दिखाइ देउ इनकों सब चीज, श्रीराम, जै श्रीराम।

(तलाशी लेते हुए सन्दूक, तिजोरी, पेटी आदि सब चीज़ें देखते

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

हैं, तभी बल्लो महाराज इन्सपक्टर को अलग बुलाकर मसनद की ओर इशारा करते हैं)

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन्सपैक्टर—(मसनद को, जिसपर लाला बैठे हुए हैं, दबाकर देखता है) जरा मसनद को छोड़िये न।

लाला—आइहाइ, जामें का टटोर रहे हौ ? जामें तौ रुई भर रही है रुई, इसपट्टरजी !

(इन्सपैक्टर ज़बरदस्ती मसनद खींचता है, लालाजी गिर पड़ते हैं)

लाला—(मसनद पकड़कर) आइहाइ, जाकों नाहें छोड़ुंगो। जि हमारे बाप-दादन कौ खान्दानी मसनद है। जाई सों बरक्कत है रही है जा गद्दी पै। जा सों छेड़ौगे तौ प्रान छोड़ दुंगों। श्रीराम, जै श्रीराम।

इन्सपैक्टर—(मसनद छीनकर) ओफ्फो बड़ा भारी है यह तो, इसमें रुई भरी हुई है या लोहा ! (सिपाही से) लायकसिंह, खोलो इसे।

(सिपाही मसनद को खोलता है तो उसमें से सोने के पांसे निकलते हैं)

इन्सपैक्टर—यह बात ! वाह रे कलियुगी सेठ, माला और राम नाम की आड़ में यह मक्कारी ! कितने टुकड़े हैं गिनिये महाराज!

(महाराज गिनता है, गिनते-गिनते एक टुकड़ा अपनी जेब में डाल लेता है)

बल्लो—१६ टुकड़ा हैं साब !

लाला—अरे २० रक्खे हैं जामें तौ !

बल्लो—तौ का मैं खाइ गयौ जामें ते !

इन्सपैक्टर—खैर रखिये इनको थैले में। लीजिये मिस्टर नटवरलाल ! इस कागज़ पर गवाही करिये। (गवाही करते हैं)

नटवरलाल—मुनीमजी !

मुनीम—आज्ञा बाबूजी !

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

नटवर—वह बही दीजिये, जिसमें आपने कर्मचारियों के वेतन से पैसे काट-काटकर रक्षा-कोष में ६२५ रुपये जमा किये हैं और ६२५ रुपये का रिक्शा मंगाकर उस खाते में नाम लिख दिया है।

Gandhi Memorial College Of Education Ramallah Jammu

(मुनीम इधर-उधर देखता है, तभी बल्लो महाराज झपटकर वह बही उठा लेते हैं)

बल्लो—लेउ जि रही बही।

(लाला की धुकधुकी चलना)

चन्दामल—चलिये इन्सपैक्टर साहेब! (रुककर) अरे यह क्या, लालाजी को क्या हो गया?

लाला—(रोकर) अरे मेरी आत्मा खेंच के लै चले रे।

बल्लो—लाला, आत्मा सो परमात्मा। कछू फिकर मत करौ, फिर देगौ भगवान।

नटवरलाल—घबराइये मत सेठजी, इस झूठी धन-माया के लिए आप क्यों परेशान हो रहे हैं, यह माया तो आनी-जानी है।

बल्लो—(बेसुरा गाता है) माया आनी-जानी रे मनुवा, माया आनी-जानी···!

इन्सपैक्टर—ऐ महाराज, छोड़ो ये माया के तराने, चलो हमारे साथ थाने। लायकसिंह, बांध लो सबको।

(सिपाही सबको गिरफ्तार करने लगते हैं)

बल्लो—(घबराकर) चौं बाबूजी, जि क्या बात है रही है अब, आपने हमकों कहा बचन दियौ हो?

नटवरलाल—घबराइए मत महाराज, एक बार तो आप सबको थाने चलना ही पड़ेगा, वहां पहुंचकर हम ऐसी चेष्टा करेंगे कि आपको छोड़ दिया जाय।

मुनीम—(रोनी सूरत बनाकर) इनको छोड़ दिया जायगा और हमने क्या बिगाड़ा है साब?

बल्लो—सोनौ तौ तुम्हीं खरीद कें लाये ननू, और जि बही-

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

खातो कौन के हाथ की है ?
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुनीम—तौ तुम कौन से कमती हो महाराज, २० में सों १९ ही टुकड़ा दिये हैं। एक खेंचकर रख लिया जेब में! (महाराज की जेब में से १ पांसा निकालता है) यह क्या है? ऐसे मौके पर भी नहीं चूके!

नटवरलाल—वाह महाराज, यह पांसा, खूब दिया झांसा! (इन्सपैक्टर को देता है)

बल्लो—बाबूजी, जि तौ हमारी भांग-ठंडाई की कमीसन है, याकों तौ हमकों दैदेउ।

इन्सपैक्टर—चलिये आपकी ठंडाई अब हवालात में ही छनेगी।

लाला—(रोते हुए) अरे भगवान, अब कैसी होयगी?

बल्लो—अजी लाला, लुगाइन की तरह रोइ रहे हो, फांसी नाहें भई जाय। बड़े-बड़े करोड़पती पकरे गए, हम-तुम कहा चीज हैं। छूटि आमिगे तब ऐसो झल्लूस निकसैगी कै छज्जेन पै बैठ-बैठ कै लुगाई फूल बरसामिगी।

मुनीम—जि तौ पीछे मालूम परैगो महाराज, लुगाई फूल बरसामिगी कै चप्पल!

बल्लो—चप्पल परिगी तुमपै; होस की बातें करो मुनीमजी!

मुनीम—क्या बकते हो, शर्म नहीं आती···!

बल्लो—(आंख निकालकर) अच्छा···

(मुनीम और महाराज में मार-पिटाई होने लगती है;
इसी शोरोगुल में लाला भाग जाते हैं)

बल्लो—"अरे लाला कहां गये, लाला कहां गये?" (यह कहते हुए महाराज और मुनीमजी भी फरार हो जाते हैं। भग-दड़ पड़ जाती है।)

पटाक्षेप

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मनसुखा की ब्रजयात्रा

प्रथम दृश्य

[स्थान : गोलोक; समय : प्रातःकाल]

(श्रीदामा सो रहा है, मनसुखा उसे जगाता है)

मनसुखा—अरे श्रीदामा, ओ श्रीदामा ! अरे उठि यार, ब्रज की यात्रा कों चलनौ है, फिर अबेर है जायगी।

श्रीदामा—(अलसाई आवाज में) अरे कौन है रे ?

मनसुखा—मैं हूं मनसुखा, भूलि गयौ कल्लि की बात ?

श्रीदामा—अरे हम नांय जात, (जम्हाई लेकर) नींद तो लगि रही है, आइगयौ सवेरै ही सबेरै प्रान चाटिवे।

मनसुखा—वा भैया श्रीदामा, कल्लि तो कहि रह्यौ हो कै गोलोक में रहत-रहत मन ऊब गयौ है, सकारे ब्रज की यात्रा कों चलिंगे और अब जर्र-वर्री दै रह्यौ है। उठि बेग, है जा तैयार, नहीं

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीदामा—(कराहकर तथा झुंझलाकर) उंह···उठि तौ रह्यौ हूं, हल्ला चौं मचाइ रह्यौ है, कान चौं खाइ रह्यौ है ?

मनसुखा—तौ छोड़ जल्दी खटिया, नहीं मारतूं लठिया।

श्रीदामा—(खाट से उठता हुआ) अरे तू नाहें मानैगौ। (पास आता हुआ) लै उठि गयौ, बोल कहां चलैगौ ?

मनसुखा—कछू दाम-दमड़े तौ अण्टी में लगाइलै, कै वैसेंई चलैगौ फाफानन्द ?

श्रीदामा—अरे भोंदूचन्द, तेरे मगज में तौ गोबर भर रह्यौ है गोबर ! भले आदमी, जि तौ सोच कै यहां की मुद्रा मर्त्यलोक में कहा काम आवैगी ?

मनसुखा—(गम्भीरता से) हां···ठीक कहि रह्यौ है, है तौ बावरौ-सौ, पर बात पते की कहै। अच्छा एक काम कर, मुद्रा कों तौ छोड़, सेर-डेढ़ सेर सौनों लै चल। जेई एक ऐसी चीज़ है, जासों सब सामग्री प्राप्त है जाय।

श्रीदामा—सौनों ? सौनों तौ भैया, हमारी बहू के पास है, वो नाहें देगी राजी सों।

मनसुखा—अरेयार ! तौ बहू कौ कहा मनाइवौ, द्वै-चार मीठी-चुपरी बात बनाइकें करलीजो राजी। देख मैं बताऊं, बहू ते यों कहियो, हम मथुरा-बिन्दावन जाइ रहे हैं, वां ते तेरे ताईं साड़ी लामिगे, बालकन कों गाड़ी लामिगे। थोरौ-सौ सौनों दैदै।

श्रीदामा—अरे लाला, वो नाहें आवैगी इन बातन में, बहू हमारी छोटी है, पर बड़ी खोटी है।

(श्रीदामा की बहू जमुना का प्रवेश)

जमुना—(फटकार लगाकर) कोऐ खोटी ? ऐं, कौन कों सबेरे ही सबेरे गारी दै रहे हौ ?

श्रीदामा—(स्वगत) आइ आफत। (प्रकट) अजी श्रीमतीजी,

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मैं तो यों कहि रही हूं के हमारी बहू है तो छोटी, पर बड़ी बढ़िया बनावै रोटी।

मनसुखा—हां भावी, २०-२५ रोटी अच्छी-सी बनाइकें जल्दी दैदै और सेर-डेढ़ सेर सौनों दैदै।

जमुना—सौनों ? कहां जाइ रहे हौ दोनों ?

मनसुखा—आज हम दोनों जने मथुरा-विन्दावन की सैर करिवे जाय रहे हैं। तुम्हारे ताईं साड़ी लामिगे, बालकन के ताईं गाड़ी लामिगे।

जमुना—हूं, धरी है मो पै सौनों ? मैं खूब जानूं तुम्हें, झूंठी-सच्ची बात बनाइके मोकों बहकाइ रहे हौ। साड़ी कौ लोभ दिखाइ रहे हौ।

मनसुखा—नाहें भावी, तेरी सौं, ज़रूर लामिगे। चौंरे श्रीदामा ! बोलै चौं नाहें, बुत्त सौ ठाड़ौ है। बोल लावैगौ साड़ी ?

(श्रीदामा स्वीकृतिसूचक सिर हिलाता है)

मनसुखा—तुम्हारे डर के मारें जाकी बोलती बन्द है गई है भावी, नेंक भर देउ जामें चाबी।

जमुना—(कान ऐंठकर) थूथरे में सों अवाज तौ निकरै नाहें, जि लामिगे मेरे ताई साड़ी !

श्रीदामा—अरे मरिगौ दैया, बचइयौ मनसुखा भैया !

जमुना—हां अब निकसी है म्हों में ते अवाज। देखौ मेरे ताईं नायलौन की साड़ी लइयों, मत कहूं खद्दर की उठाइ लाओ।

श्रीदामा—राई-नौन की साड़ी कैसी होवै ?

जमुना—राई-नौन नाहें, नायलौन, नायलौन।

श्रीदामा—अच्छा तौ लै आउंगो भागमान, चौं तोरै देऐ मेरौ कान। ला सौनों तौ दैदै।

जमुना—ले जाओ सौनों, चौका वारी कोठरी की टांड़ पै डिब्बा में रखौ है। और देखौ जल्दी अइयों। (प्रस्थान)

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मनसुखा—यार, तेरो वह बड़ो विकट है।

श्रीदामा—अरे भैया, मेरी तो नाक में दम आइगयो है जाके मारे। हां, तो सवारी को कहा प्रबन्ध कियो है?

मनसुखा—सवारी?···कौन-सी सवारी पै चलनो चहिऐं? हमारी समझ में तो जि बात आई है कै जो उपग्रह आकास में चक्कर काटि रहे हैं, उनमें सों काऊ कों पकरि लेउ और चढ़ि चलो।

श्रीदामा—नांय दादा, जा चक्कर में हमें नाहें पड़नो। जो कहूं उपग्रह बीच में फटि गयो तो सबरी काया को सत्यानास है जायगो।

मनसुखा—तो इन्द्र को घोड़ा मांगिलै? तड़ाक बैठारि कै फड़ाक पहुंचाय देगो।

श्रीदामा—अरे भैया, इन्द्र के घोड़ा बड़े विकट हैं, कबू-कबू ऐसी दुलत्ती झाड़ें कै सबरे दांत झरि परें। हम तो हाथ जोड़ें तेरे, हमें नाहें जानो।

मनसुखा—तो फिर गरुड़ पै चलैगो कै विमान में चलैगो, कछू कहि तो सही, हर बात में नाहें-नाहें-नाहें।

श्रीदामा—गरुड़ कों लै चलें तो कन्हैया किल्लावैगो, मेरी समझ में तो विमान ठीक रहेगो। बाई में ठाट ते चलो, सब झगड़े कों छोड़ो।

मनसुखा—ठीक है, आइ गई ध्यान में, सौनों लैकें चलो विमान में।

(सोना पोटली में बांधकर दोनों विमान में बैठते हैं, सर्राटे की आवाज़ के साथ विमान पृथ्वी पर उतरता है।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूसरा दृश्य

[स्थान : ब्रज-भूमि]

मनसुखा—(विमान से उतरकर) जै जमना मैया की, चलो जी आइ तौ राजी-खुसी गये। अब बोलौ कहां चलौगे पहलें ?

श्रीदामा—पहलें जि तौ पतौ लगाओ कै जि कौनसौ स्थान है।

मनसुखा—अरे श्रीदामा, भूलि गयौ मामा ? यहां तौ बरसन गैया चराई हैं भैया ! देख, वोऽऽऽ···देख···श्री मथुराजी दीस रही हैं। देखौ जि कोई ब्रजवासी आइ रह्यौ है, जा सौं बात और पक्की है जायगी। सकल-सूरत सौं तौ कोई पंडा मालुम परै।

पंडाजी—जै जमना मैया की, जै कृष्ण कन्हैया की।

पंडा-पुत्र—जै नन्दलाला की, जै गोपी ग्वाला की।

मनसुखा—जै जमना मैया की। कहां रहौ महाराज ?

पंडाजी—हम तौ मथुरा जी के पंडा हैं भैयाजी, आप कहां सौं पधारे हौ ?

मनसुखा—हम तौ बहुत दूर सौं आये हैं महाराज ! पहलें तौ हम ब्रज में रहौ करते, पर अब तौ परदेसी हैं। मथुरा जी कितनी दूर हैं यहां सौं ?

लड़का—वो दीख रही हैं। चलौ तुमकों दर्शन-स्नान कराइदें।

श्रीदामा—नाहें महाराज, आप काहे कों कष्ट करौ, हम तौ अपने-आप दर्शन करि लेंगे।

पंडा—देखौ जिजमान, काऊ बात की संका मत करौ, हम ऐसे पंडा नाहें, जो काऊ यात्री कों कष्ट दें या झगड़ौ करें। (हंसकर) तुम्हारी श्रद्धा होय सो दै दीजौ, यात्रा तुमकों खूब आनन्द सौं कराइ देंगे।

मनसुखा—अच्छी बात है तौ चलौ, पहलें मथुरा जी चलौ

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महाराज !

श्रीदामा—पंडाजी, जमना जी के ऊपर जि लाल-लाल पींजरा-सौ कहा दीस रह्यौ है।

पंडा—अरे जिजमान, जि तौ रेल कौ पुल है। जाके ऊपर हैकें रेल चलें है रेल।

श्रीदामा—(आश्चर्य से) रेऽऽऽल !

मनसुखा—(उससे भी ऊंची आवाज में) रेऽऽऽऽऽल ?

पंडाजी—अरे, तुम तौ भौत भोरे दीखौ भैया, रेल नाहें जानौ। जामें हजारन आदमी बैठिकें सैर-सपाटे करें।

श्रीदामा—हजारन आदमी बैठि जांय तौऊ रेल जमना जी में नांय गिरै ?

मनसुखा—और पुल पिचकै नाहें ? चौं पंडाजी, जा रेल में हमकों बैठारिकें सैर कराइ सकौ ?

पंडा—धीरज रक्खौ भैयाजी, सब तमासे दिखाइ दुंगौ। लाओ कछू दाम-दमड़े देओ तौ रेल की टिकस लै आऊं ? देखौ रेल की छत पै मत बैठ जइयों और नहीं तौ पुल सों टकराय के गिर परौगे और खतम है जाओगे।

मनसुखा—(सोने का एक टुकड़ा देकर) जि लेउ महाराज, दाम-दमड़े तौ हमारे पास हैं नाहें, या सोने के टूक कूं बेचिकें टिकस लै आओ।

पंडाजी—(सोना लेकर आश्चर्य से) अरे वाह जिजमान, इतने सोने में तौ तुम्हें ब्रज की यात्रा छोड़ तीनों तिल्लोक दिखाइ दुंगो।

श्रीदामा—नाहें पंडाजी, तीनों तिल्लोक हमें नांय देखने, हमें तौ ब्रज चौरासी कोस में ही घूमनौ है।

पंडाजी—अच्छा तौ तुम स्टेसन पै बैठियों, मैं बाजार ते जा सोने के रुपैया भुनाय लाऊं।

(पंडाजी का प्रस्थान)

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीदामा—मनसुखा सैन, सोने की टूक देखत ही पंडाजी की मुख-मुद्रा विचित्र हैगई और आंखें फटी की फटी रह गई, सो मोकों तौ ऐसौ दीसै कै वे अब लौटिंगे नांय ; लै गये टिकस।

मनसुखा—तौ मन कौ का समझाइवौ, तुम समझ लीजों कै दच्छिना दै दीनी और जामें कछू सन्देह नाहें कै पंडाजी तौ सोने कौ टूक लै गये और अन्तर्धान है गये।

श्रीदामा—जान देउ पीछौ छूटौ। चलौ कछू भोजन-पानी कौ डौल लगामें।

मनसुखा—आइहाइ, जा समय द्वै मिस्सी रोटी और मठा मिल जाय तौ आनन्द आइजाइ। (कुछ सोचकर) अरे श्रीदामा, एक बात याद आई यार !

श्रीदामा—कहा ?

मनसुखा—मथुरा में हमारी बहू की एक भाएली रह्यौ करती, स्यामा सखी। वा समय वाके बड़े ठाठ-बाट हे। चलौ वाकौ पतौ-ठिकानौ लगामें। कोई न कोई तौ वाके कुनबा में होयगी। वाई सों जान-पहचान निकासि लेंगे, फिर तौ माखन, मठा, दही, रोटी ऐसे बढ़िया मिलेंगे कै स्वर्गलोक के छत्तीसौ व्यंजन फीके लगेंगे।

श्रीदामा—अरे भैया···मेरे म्हौं में तौ पानी भरि आयौ और टपकन लागी लार, जल्दी चल मेरे यार !

मनसुखा—हां-हां, चलौ, चलौ।

(दोनों कुछ दूर चलते हैं, सहसा एक आलीशान मकान को देखकर ठहर जाते हैं)

मनसुखा—देख श्रीदामा, जि बड़ौ-सौ मकान जो दीख रह्यौ है, जाकी किवार स्याम रंग की हैं, मोकों तौ यही स्यामा सखी कौ मकान मालुम परै।

श्रीदामा—काऊ कौ सही, चलौ गुरू! होइगी सो देखी जायगी, भूख जोर मार रही है। पेट में मूसटा कबड्डी खेल रहे हैं।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मनसुखा—चल तो अगारी तू ही चल।

श्रीदामा—हां-हां लै, हम चलें पहलें। डर काहे बात को है, जैसी तेरी बहू की भाएली वैसी हमारी बहू की भाएली।

मनसुखा—अरे तो पहले थांग तो लगाइ लै, भाएली के बच्चा!

श्रीदामा—देखि रे मनसुखा, जो हमारो यहां अपमान करैगो तो तूही जानैगो, हां···

मनसुखा—अच्छा चलि, चलि, ऐंठै मत।

(दोनों किवाड़ खोलकर एक मकान में घुस जाते हैं)

मकान वाली—(कड़ककर) कौन हो जी तुम ? कहां रहते हो ? क्या बात है ?

मनसुखा—जै कन्हैयालाल की, जै बन्सी वारे की।

श्रीदामा—जै बलदाऊ भैया की, जै जसोदा मैया की।

मकान०—अजब बदतमीज मालुम होते हो जी ! बताते क्यों नहीं, व्हाट डू यू मीन ?

मनसुखा—'भड़ूडू' खेलवो तो हमनैं अब छोड़ि दियो है मैया ! मठा है का तुम्हारे यहां ?

मकान०—कैसा मठा ?

श्रीदामा—(हीः हीः हीः हीः की विचित्र हंसी हंसते हुए) अरे भठा नाहें जानें जि। (हंसता है) बड़ी भोरी है मैया, चौं मनसुखा भैया ?

मकान०—देखो खबरदार, यह मक्कारी किसी और को दिखाना। निकलो यहां से, नहीं अभी पुलिस को फून करती हूं।

मनसुखा—खून करती हूं ? कौन को ?

श्रीदामा—अरे बचइयो दादा मनसुखा ! खून···

मकान०—(टेलीफोन उठाकर) टू थ्री। हैलो पुलिस-स्टेशन··· हां देखिये, मैं मिस गुप्ता बोल रही हूं। मेरे मकान में दो बदमाश घुस आये हैं। घर पर मैं अकेली हूं। साहब दौरे पर गये हुए हैं, मेरी

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

मदद कीजिये Digitized by eGangotri CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
CC-0. Jangamwadi Math

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मनसुखा—चौ भइया, तुम कौन से राजा के दरोगा हो ?

दीवान—शटअप, बको मत। चलो थाने, वहीं सब मालुम होगा, कैसा है दरोगा।

(दोनों को पकड़कर ले जाते हैं)

तीसरा दृश्य

[स्थान : कोतवाली]

श्रीदामा—लेउ लाला मनसुखलाल ! छिन गई सब मात्रा, और कर लेउ ब्रज की यात्रा। अब पीओ बेटा कैदखाने को पानी, याद आजायगी नानी।

मनसुखा—(निराशाजनक आवाज में) अरे भैया श्रीदामा, मोकों कहा खबरी जा चक्कर की। हमतौ पहलें, चाहें जा गोपी के घर में घुस कें माखन खाइ आवते और थोरे-बहोत पिटपिटाय कें भाजि आवते। ऐसी का खबरी कै जि हमें पकरवाइ देगी। अब कैसी होइगी दैया !

श्रीदामा—(रोकर) अरी मेरी मैया !

मनसुखा—अरे तौ अब रोइवे-पीटवे सों का होवै। अब तौ जैसे बनै वैसे कन्हैया सों प्रार्थना करौ।

(मनसुखा और श्रीदामा मिलकर प्रार्थना करते हैं)

जै जै राधे कृष्णा, राधे कृष्णा राधे गोविन्द।
दाऊजी के भैयालाल, जसुदाजी के छैयालाल॥
मनसुख औ' श्रीदामा दोऊ भये जेल में बन्द।
जै जै राधे···
यहां स्वर्ण पै है कन्ट्रोल, अक्कल अपनी डांवांडोल।
छीनलियो सब, प्रान बचें अब कैसे हे ब्रजचन्द॥
जै जै राधे···

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bahadur Jammu

बाग बुलाओ हमकूं लाल, ब्रज की तुम्हें सुनावें हाल।
दही-छाछ पै छापो मारै सपरेटा निर्द्वन्द ॥
जै जै राधे···

पाग छोड़ि कें ग्वाला-गोप, बांधें टाई, धारें टोप।
अंगरेजी में गारी दै रही, स्याम सखी की नन्द ॥
जै जै राधे···

निकसे जांय हमारे प्रान, भेजो थाने-बीच विमान।
अब नाहें कबहूं आमिंगे, 'काका' की सौगन्ध ॥
जै जै राधे···

पटाक्षेप

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

झूला को झटका

पात्र :

कृष्ण—किशोर रूप कन्हैया

मनसुखा, श्रीदामा } —कृष्ण के सखा

राधा—कृष्ण की हृदयेश्वरी

ललिता, मालती, बिसाखा } —राधा की सखियां

(नन्दबाग में पनघट का दृश्य, रसिया गाते हुए कृष्ण-मनसुखा और श्रीदामा का प्रवेश)

मेरो बारो सो कन्हैया, काली दह पै खेलन आयो री ।। मेरो···

ग्वालबाल सब सखा संग लै, गेंद को खेल रचायो री ।। मेरो···

काहे की पट गेंद बनाई, काहे को डंडा लायो री ।। मेरो···

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रेसम की पट गेंद बनाई, चंदन को डंडा लायौ री ।। मेरौ···

मारो टोल गेंद गई दह में, गेंद के संग ही धायौ री ।। मेरौ···

श्रीदामा—कहौ लाला मनसुखलाल ! आज या समय पनघट पै कन्हैया कैसे दिखाई दै रह्यौ है ? आज कछू दार में कारौ है, कोई कौतुक हैवे वारौ है ।

मनसुखा—भैया श्रीदामा, हमको कहा मालुम है, अपन तो भोरे-भारे हैं । हमें तो वैसे ही पकर के खेंचि लायौ है । या मन-मोहन कौ भेद हम-तुम कहा, ब्रह्मा हू नाहें जान सकै सखे !

कृष्ण—अरे भैयाओ ! क्यों उतावले है रहे हौ । पहिले से ही सब रहस्य बताइ देतौ तौ तुम यहां आवते कैसें ?

मनसुखा—तौ अब बताइदै भैया, हमारे पेट में जिज्ञासा की कूदि रही हैं बिलैया ।

कृष्ण—(कुछ धीमे स्वर में) देख मनसुखा ! आज पूर्णिमा की चांदनी में, नन्दबाग में बरसाने की सखी पनघट पै आवेंगी और फिर झूला झूलेंगी ।

श्रीदामा—आइहाइ ! झूला !!

मनसुखा—क्यों बेटा, उठन लगे पेट में बबूला ?

कृष्ण—राधा भी आवेगी उनके संग ।

श्रीदामा—तब ही तो फड़क रहे हैं तेरे अंग । मैं सब जानूं तेरी माया !

कृष्ण—सब जाने है तो बताय वाके संग और कौन-कौन-सी गोपी आवेंगी ?

श्रीदामा—बताऊं ?

मनसुखा—(आगे उछलकर) मैं बताऊं ?

श्रीदामा—(मनसुखा को पीछे धकेलकर) पहले मैं—

मनसुखा—(श्रीदामा को हटाकर) पहले मैं—

कृष्ण—अरे यार ! लड़ क्यों रहे हो ! एक-एक जनों बताओ ।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बोल मनसुखा ! कौन कौन आई रही है ?

मनसुखा—ललिता आवेगी, बिसाखा आवेगी···

श्रीदामा—(मनसुखा के मुंह पर हाथ रखकर) चन्द्र सखी, सोहनियां, मोहनियां, छब्बो, छैलो, अंगूरी, गुलब्बो, बतासो···

कृष्ण—वाह ! पूरी घेंघरिया पल्टन आइ रही है। अच्छा एक बात बताओ मनसुखलाल ?

मनसुखा—हां-हां, अपने मतलब पै आइजाओ मोहनलाल !

कृष्ण—यार ! आज कोई युक्ति लड़ाओ और राधा के संग हमको झूला झुलवाओ तौ आनन्द आय जाय सखे !

मनसुखा—अच्छा तौ बोल, वा आनन्द में से हमको कछू हिस्सा मिलेगौ कै नाहिं ?

कृष्ण—हां-हां, तोकों माखन खवाइ देंगे भरपेट।

मनसुखा—(मुंह बनाकर) हिं, माखन खवाइ दिंगे, माखन तौ नित्य खावें हैं। माखन खात-खात तो हमारो पेट इतनौ चीकनौ है गयौ है, कि या में अन्तःकरण रपटन लग्यौ है लाला, और कछू चीज खवाओ नन्दलाला !

कृष्ण—अच्छा तौ पूआ खवाय देंगे।

मनसुखा—हां, पूआ हमकों अनुकूल परें हैं।

श्रीदामा—अरे जारे भौंदू ! माखन सों अधिक पूअन कों महत्त्व दै रह्यौ है ! रह्यौ गमार !

मनसुखा—अरे तू कहा समझै पूअन को महत्त्व। देख जो प्राणी पूआ सेवन करै, वामें इतनी शक्ति आइ जावै कि कंस को पछाड़ कें जमनाजी में फेंकि आवै।

रूखी-सूखी कोस-दुकोसी, पूरी लडुआ बारह,
जो कहुं मिल जायं मालपुआ तो धाऊं कोस अठारह।

कृष्ण—अरे भैयाओ ! फिर तुम तर्क में उरझि गये ?

मनसुखा—हां-हां लाला, तोकों तो झूलन की झुलास लग रही

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
है तोहि ये बातें काहे कों अच्छी लगेंगी।

कृष्ण—तो फिर बताइ कोई युक्ति राधा के संग भूलिबे की।

मनसुखा—हमारी आज्ञा माननी परैगी।

कृष्ण—मानुंगो।

मनसुखा—हम कहेंगे सो करनौ परेगौ।

कृष्ण—करुंगो।

मनसुखा—तो बोल कूआ पै सोवैगौ?

कृष्ण—(स्वीकारात्मक भाव दिखाकर) हां-हां।

मनसुखा—कारौ कम्बर ओढ़ैगौ।

कृष्ण—ओढ़ूंगो।

मनसुखा—लिरिया आवैगौ तौ डरपैगौ तौ नाहिं?

श्रीदामा—अरे भौंदू! वहां लिरिया काहे कू आवैगौ। वहां तो तिरिया आवेंगीं तिरिया!

मनसुखा—तू नाहें जानै श्रीदामा! बरसाने की तिरियां लिरिया की भी चाची लगें। जा समय झपट्टा मारें तौ बड़े-बड़े पट्ठा घबराय जावें।

कृष्ण—अरे भैया, फिर तुम दोनों भिड़ गये?

मनसुखा—हां तौ बताय। हमारी सब बातें स्वीकारें कन्हैया?

कृष्ण—हां-हां भैया!

मनसुखा—हाथ मार।

कृष्ण—(मनसुखा के हाथ पर हाथ मारते हैं।)

मनसुखा—देखौ, तुमकों लहंगा-फरिया पहरिकै स्यामा सखी कौ रूप धारण करनौ पड़ैगौ। बोलौ स्वीकार?

कृष्ण—स्वीकार।

मनसुखा—अहाहा! कैसी लौ लग रही है राधा के संग भूलिबे की। बात यह है कन्हैया कि वैसै तो तोकों कोई सखी अपने संग भूलन नहीं देगी, क्योंकि तू ठहरौ नटखट। याही सों हमने सोची

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है कि तोकूं स्यामा सखी बनाय दें। फिर खूब आनन्द सों राधा और बरसाने की सखिन के संग झूलियो।

कृष्ण—पर हमारे संग तोऊकूं सखी बननौ पड़ैगौ सखे! दो सखिन कौ प्रभाव अधिक पड़ैगौ।

मनसुखा—सखे, तेरौ मुखारबिन्द तौ सुंदर है, आकर्षक है; पर हमारौ थूथरौ तौ बिधाता ने ऐसौ विचित्र बनायौ है कि झट्ट पहचान लिंगी सखी।

श्रीदामा—फिर तौ इतने गुल्चा पड़िंगे बेटा कि सब गाल पिलपिले है जांगे।

मनसुखा—है जांदै पिलपिले यार! सखिन के हाथन सों पिटबे-मेंऊ मोकूं तौ स्वाद आवैगौ। देख, मैं तौ कूआ पै पानी खेंचत रहूंगौ और तू कपड़ा-लत्ता धोबतौ रहियौ। और सुन, आंखिन में काजर जरूर लगाय लीजो।

श्रीदामा—काजर! काजर लगायकै का हैजायगौ?

मनसुखा—अरे श्रीदामा, तू नांय जानै मामा! काजर की कोर पै न्यौछावर है जायें सखी।

श्रीदामा—हां-हां, है गई न्यौछावर। तूई लगाय लीजो काजर। काजर लगायबे ते दूनी पिटाई होयगी।

कृष्ण—छोड़ौ इन बातन कूं। सखिन के आयबे कौ समय है गयौ है। मोकूं वस्त्र बदलकै स्यामा सखी कौ भेस बनायबे में भी तौ समय लगैगौ।

(कृष्ण का प्रस्थान। मनसुखा और श्रीदामा दोनों काजर लगाकर पनघट पर कपड़े धोने बैठ जाते हैं। सखियों का प्रवेश होता है। चार-पांच गोपियां सिर पर और बगल में गगरी दाबे हुए ब्रज का एक प्रसिद्ध लोकगीत (ढोला) गाते हुए प्रवेश करती हैं)

गोपियां—अरे चंदा तेरी निर्मल कहिए चांदनी
ननद-भावज पानी नीकरीं।....

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अरे कुमटा तेरे ऊंचे-नीचे घाट रे
जा ऊपर धोमैं छोरा धोबती।
अरे छोरा, तू मारू बैंगन तोरिला
जौ लौं मैं धोऊं तेरी धोबती।

मन०-श्रीदामा—अरी छोरी, तेरे गोबर लिहस रए हाथ री
दाग लगैगौ मेरी धोबती।

गोपियां—अरे छोरा, मेरे मेहंदी लिहस रहे हाथ रे
रँग-रँग चूऐ तेरी धोबती।

मन०-श्रीदामा—अरी छोरी, तू अति की भौत मलूक री
इतनी बड़ी तौ क्वारी क्यों रही ?

गोपियां—अरे लाला, बर देखे देस-बिदेस रे
हमरी जोड़ी के बर ना मिले।
अरे छोरा, तू अति कौ भौत मलूक रे
इतनौ बड़ौ तौ क्वारौ क्यों रह्यौ।

मन०-श्रीदामा—अरी छोरी, मेरे मर गए मैया-बाप री,
भैया-भरोसे क्वारे हम रहे।
अरी छोरी, तू कहिदै मैया-बाप सों
हमरी जोड़ी के बर बाग में।

गोपियां—अरे छोरा, मैं कैसे कहि दऊं बाप सों
गढ़ि-गढ़ि जाऊं मारे लाज के।

सभी साथ-साथ—अरे चंदा, तेरी निर्मल कहिए चांदनी
ननद-भावज पानी नीकरीं।

(गीत की समाप्ति पर श्रीदामा-मनसुखा एक ओर हट
जाते हैं। सखियां झूले की रस्सी खोलती हैं,
जोकि एक पेड़ पर लटक रही है)

ललिता—देखौ राधे ! आज चंदा की चांदनी कैसी छिटक है। मलेई सूई में डोरा पोय लेओ। या चांदनी में आज माखन-

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चोर कन्हैया हू हमारे संग होतौ तौ कैसौ आनंद आवतौ बाके संग झूला झूलिबे में !

राधा—अरी सखी, ऐसे भाग कहां हमारे जो स्याम के संग झूला झूलें।

(दो सखियां झूले पर बैठती हैं। तभी स्यामा सखी के वेश में कृष्ण और स्यामा सखी के नकली पिता के रूप में काका का प्रवेश।)

काका—जै कृष्ण कन्हैया की। जै बंसीवारे की।

जै श्री राधे की! जै मोहन प्यारे की!

मालती—आप कौन हौ ? कहां सों पधारे हौ बाबा ?

काका—काका दाढ़ी असि करी, जसि अरिहू न कराहिं।
चंद्रबदन मृगलोचनी बाबा कहि-कहि जाहिं॥
प्रोहित हम नँदगाम के, गोकुल अपनौ धाम।
बाबा मोसों मत कहौ, 'काका' मेरौ नाम॥

ललिता—अच्छा तौ काका ही सही। कछू बताओ तौ कैसे आए हो ?

काका—पैरन सों आए हैं। झूला झुलायबे या छोरी कों लाए हैं।

बिसाखा—(सिसकारी भरते हुए आश्चर्य के स्वर में मालती से) हाय मालती ! जितौ सबरी बात कबिता में ही करै है।

मालती—क्यों महाराज ! ये आपकी लली है का ?

काका—मेरी ही लली है ये, प्यार सों पली है अली,
भोरी औ' भली है याहि संग में निबाहि लेउ।
मौन-सी ठड़ी है, पर जिद्दिन बड़ी है यह,
जिद् पै अड़ी है सो पूरन कराय देउ।
कृपा करौ देबी, बरसाने की जलेबी तुम,
तनिक सौ काम है, याकों तौ बनाय देउ।
तुमसों न चाहूं दान दच्छिना मैं कच्छु ना,
राधा के संग याकों झूला झुलाय देउ।

gamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by MoE-202

Gandhi Memorial College and Raghunath Dayal Sanatan Dharma Library Jammu

(राधा को सखियों के पास छोड़कर कृष्ण मंच से बाहर चले जाते हैं।)

राधा—(सखी के निकट आकर) हे चपल कटाक्षन बारी मृदुल-मंजुल मूर्ति ! तुम कौन हौ ? कहां सों आई हो ?

ललिता—और हमकूं देखिकें क्यों मंद-मंद मुसकाई हौं ?

श्रीदामा—तुमकूं देखिकें नाहें मुसकाय रहीं, श्री राधेजू कों देखिकें मुसकाय रही हैं।

ललिता—तुम क्यों बोले जी बीच में ? कहो तो ढकेल दऊं कीच में ?

श्रीदामा—क्यों न बोलें बीच में। ये हमारी बहिन है और हम हैं याके भैया।

बिसाखा—हाय दैया ! भैया गोरी और भैन कारी, बलिहारी ! दोउन की छवि न्यारी-न्यारी।

श्रीदामा—संदेह मत करै सखी ! ये मेरी सगी भैन नाहें, ताऊ की छोरी है। बहुत ही भोरी है।

'कजरारी अंखियान में बस्यौ रहै दिन-रात।
यह उपासिनी स्याम की यातें स्यामल गात॥

यह स्याम सुंदर की भक्ति करै है, याही सों याकौ अंग-अंग स्याम रंग में रंग गयौ है।

राधा—(श्वास खींचकर) ललिता जीजी ! यह स्यामा सखी मोकों अत्यंत प्रिय लग रही है। जानैं कैसौ जादू है याके नैनन में ! मैं याकों अपने संग अवश्य झुलाऊंगी।

ललिता—हे सुन्दरी सखी ! अपनौ नाम तौ बताओ, गाम तौ बताओ, धाम तौ बताओ।

कृष्ण—स्याम सखी मम नाम है, गोकुल मेरौ गाम।
राधा की छबि देखिकैं, बिक गई मैं बिनु दाम॥

राधा—अहाहा ! कितनौ प्रिय नाम है, स्यामा सखी।

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कृष्ण—अरी प्रिय सखियो ! मैं तो केवल सनेह को भूखी हूं। मोकों कोई मन की मीत मिल जाय तौ बासों भायेलौ जोरुंगी।

राधा—अहाहा ! भायेलौ जोरुंगी। रस टपकै है याके एक-एक शब्द सों।

श्रीदामा—रस टपकै है तौ कोई रसगुल्ला है हमारी भैन ?

मनसुखा—या जलेबी है हमारी जीजी ?

ललिता—जादा जीभ मत चलावै लाला ! नहीं तौ···।

मनसुखा—नहीं तौ कहा करैगी ?

मालती—मैं बताऊं ! (मनसुखा की बांह पकड़कर एक ओर ले जाती है और धीरे से कहती है।) कहौ मनसुखलाल ! खूब ढोंग बनायकै आए हौ। खोल दऊं पोल, बताय दऊं भेद ?

मनसुखा—(कुछ कड़ाई से) कैसौ भेद ? बाबरी है गई है का ? कौन से मनसुखलाल की बात कर रही है ?

मालती—तौ तू मनसुखा नाएं ?

मनसुखा—(चिढ़ाने वाली हंसी हंसता हुआ) हि हि हि हि ! भांग पी आई है का ? मैंनै तौ आज पहिलैई पहिल तेरे म्हों सैं मनसुखलाल कौ नाम सुनौ है। न मैं मनसुखा न मेरौ बाप मनसुखा।

ललिता—तौ तेरौ नाम कहा है ?

मनसुखा—मेरौ नाम तौ घनकुटा है।

ललिता—(मनसुखा को पहचानते हुए) (स्वगत) अच्छा मिटे, आज तोई पै घनकुटा बजामनौ है।

कृष्ण—अहो, श्री राधेजू ! मेरौ भायेलौ स्वीकार करौ तौ झूलूं आपके संग।

राधा—अहोभाग्य सखी ! बिराजौ झूला पै।

(राधा-कृष्ण झूला पर बैठते हैं। सब सखियां मल्हार गाती हैं।)

राखियों जी लाज मेरी सरन गहे की।

बाग हिंडोला, अम्मा मेरी परि रहे री कोई,

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हमहू तो जाएंगे झूलन बाग, मेरी सरन गहे की। राखियों
संग की सहेली, अम्मा मेरी सब गईं जी कोई,
मो दुखिया पै चल्यौ हू न जाय, मेरी सरन गहे की। राखियों
घर ही गढ़ाय दऊं बेटी मेरी हिंडोलना री कोई,
घर ही मंगाय दऊं रेसम-डोर, मेरी सरन गहे की। राखियों
पायल गढ़ि गई अम्मा मेरी कीच में जी कोई,
बिछुअन भरि गयौ दगरे कौ रेत, मेरी सरन गहे की। राखियों
पटका सों पोंछूं बेटी मेरी, पायलन कोई,
अंचरासों झारूं बिछुअन रेत, मेरी सरन गहे की। राखियों

(झूला से उतरते समय स्यामा सखी रूपी कृष्ण का लहंगा खिसक जाने पर पीताम्बर दिखाई देने लगता है)

ललिता—(आश्चर्य से) हाय सखी ! यह तौ मनमोहन छलिया हैं। कैसौ भेस बनायौ है। पीताम्बर के ऊपर लहंगा। और जि मिटौ मनसुखा यों कहि रयौ ओ मेरौ नाम घनकुटा है। अब कहै तो लगाऊं तोमें घनकुटा। हाय ! कैसौ रूप धरिकै आए हैं !

(फिर कृष्ण से कहती है)

धन्य है महाराज ! नारी कौ रूप तौ तुमनें रच्यौ पर निकसे अनारी। लुगाई बनिबे में तुमकूं लाज हू न आई।

कृष्ण—अरी गोपियौ ! भगवान विष्णु नै मोहिनी रूप धारण कियौ। भगवान शंकर अर्द्धनारीश्वर बने। मैं तौ अभी बालक हूं। राधा के संग झूलिबे की प्रबल इच्छा नै ही यह रूप धरिबे कों मोकों बाध्य कियौ।

राधा—चलौ महाराज ! आज हमारे ग्राम को ही पवित्र करि आओ।

कृष्ण—बाबा की आज्ञा बिना मैं बरसाने कैसे जाय सकूं सखी !

मालती—और यह सखी-रूप बनायवे की आज्ञा हू बाबा सों लैकै आये हो का ?

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Sangam Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीदामा—तू बीच में की बोल रही है बरसाने की बिल्लो !

मालती—चल मिटे !

"आयौ है नंदलाल कौ बनिकै संग दलाल।
मोल-तोल कैसे करें बिनु बंसी के लाल।"

श्रीदामा—दलाल बतायगी तौ लै जाउंगो अपनी भैन कूं लिबायकै।

ललिता—जारे भैन के भैया ! करिबे चल्यौ है ठट्टा, खुल गई पोल लैलै सिंगट्टा।

बिसाखा—आयौ है मिटौ घोंटुन ताईं काजर पोतिकै।

कृष्ण—देखौ सखी, हमारे सखान सों मत छेड़ौ।

मनसुखा—कहा करें कन्हैया ! झूला के झटका सों तेरौ लहंगा खिसक गयौ यार ! नहीं तौ आज काहे कूं खाने पड़ते ऐसे ताने।

(अंत में सबका सामूहिक गान)

सखियां—देखि लई तेरी चतुराई रे मनसुखा तेरी चतुराई।
लैकै आयौ स्याम सखी तोहि लाज नाहिं आई।।

कृष्ण व सखा—लाज खुटी पै टांग आज हम झूलन कों आए,
सखी हम झूलन कों आए।
नैन-सैन के बान चलाइकै तुमनै भरमाए।।

सखियां—जसोदा मैया पै जाएं, स्याम हम मैया पै जाएं।
हाथ-पांव बंधवाय सांवरे तुमकों पिटवाएं।।

कृष्ण व सखा—भले ही मैया पै जाओ, सखी चाहें बाबा पै जाओ।
देहिं तुम्हें फटकार मान-भंजन क्यों करवाओ।।

सखियां—भेद कौ फूटि गयौ मटका, सांवरे फूटि गयौ मटका।
स्याम सखी भए स्याम लग्यौ जब 'झूला कौ झटका'

पटाक्षेप

●●●

gamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-202

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डायमण्ड के चर्चित प्रकाशन

प्रेमचन्द साहित्य

निर्मला	10.00
वरदान	12.00
प्रतिज्ञा व मंगलसूत्र	12.00
सेवासदन	20.00
गोदान	25.00
प्रेमाश्रम	30.00
कर्मभूमि	25.00
रंगभूमि-1	20.00
रंगभूमि-2	20.00
कायाकल्प	20.00
मनोरमा	12.00
रूठी रानी व प्रेमा	12.00
गबन	20.00
मानसरोवर (भाग 1 से 8) प्रत्येक भाग	20.00
प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियां	15.00
पांच फूल	6.00
कफन	12.00
कर्बला (नाटक)	12.00
संग्राम (नाटक)	12.00

शरत साहित्य

शेष प्रश्न	15.00
देना पावना	10.00
श्रीकांत	20.00
चरित्रहीन	20.00
शेष परिचय	15.00
बिराज बहू	10.00
बैकुंठ का वसीयतनामा	10.00
देहाती समाज	10.00
शरत के नाटक	25.00
ब्राह्मण की बेटी	10.00
काशीनाथ	10.00
चन्द्रनाथ	10.00
परिणीता	10.00
गृहदाह	15.00
कमला	10.00
विप्रदास	15.00
शुभदा	12.00
पथ के दावेदार	15.00
देवदास	10.00
पंडित जी	10.00
मझली दीदी	10.00
दत्ता	10.00

जय शंकर प्रसाद साहित्य

कंकाल	15.00
तितली	15.00
इरावती	6.00
छाया	6.00
इन्द्रजाल	8.00
आकाशदीप	7.00
प्रतिध्वनि	5.00
आंधी	6.00
लहर	5.00
कामायनी	8.00
आंसू	5.00
झरना	5.00
महाराजा का महत्व	3.00
प्रेम पथिक	3.00

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्कंदगुप्त	10.00
अजात शत्रु	6.00
ध्रुवस्वामिनी	3.00
जनमेजय का नाग यज्ञ	6.00
राज्य श्री	5.00
विशाख	6.00
कामना	6.00
एक घूंट	5.00
चन्द्रगुप्त	12.00
काव्य कला तथा अन्य निबन्ध	15.00

बंकिमचन्द्र साहित्य

दुर्गेशनंदिनी	10.00
कपाल कुण्डला	10.00
मृणालिनी	10.00
देवी चौधरानी	10.00
सीताराम, राधारानी	10.00
विषवृक्ष	10.00
चन्द्रशेखर	10.00
रजनी	10.00
कृष्णकांत का वसीयतनामा	10.00
राजसिंह	10.00
आनंदमठ	10.00

देवकीनन्दन खत्री के उपन्यास

चन्द्रकांता	15.00
चन्द्रकांता सन्तति-1-6 प्रत्येक भाग	15.00

संस्कृत ग्रंथ हिन्दी में

मृच्छकटिकम्	10.00
कादम्बरी	10.00
नलदमयन्ती (नैषधचरितम्)	10.00
कालिदास के नाटक (विर्कमोवशीय माल्वनिकामित्रम्)	10.00
रघुवंश	10.00
किरातार्जुनीय	12.00
मुद्राराक्षस	12.00
हर्ष चरितम्	12.00
मेघदूत	10.00
अभिज्ञान शाकुन्तलम्	12.00

संस्कृत नाटकों के हिन्दी अनुवाद

किर्रातार्जुनीय	12.00
वेणी संहार	12.00
शिवराज विजय	12.00

ओशो साहित्य

हंसै खेलै न करै मन भंग	12.00
सहजै रहिबा	12.00
सबद भया उजियाला	12.00
जीवन संगीत	12.00
सतगुर मिलै ते ऊबरै	12.00
एक ओंकार सतनाम	50.00
आपुई गई हिराय	30.00
अनहद बाजे बांसुरी	12.00
भीतर का दिया	12.00
सदगुरु एक दर्पण	12.00
बोलै शेख फरीद	12.00
सत भाषै रैदास	12.00
क्या मेरा क्या तेरा	12.00
ऐसी भक्ति करै रैदासा	12.00
दिया अमृत पाया जहर	10.00
रजनीश ध्यान योग	15.00
कुंडलिनी और तंत्र	10.00
कुंडलिनी और सात शरीर	10.00
कुंडलिनी जागरण और शक्तिपात	10.00
शिव साधना	10.00
शिव दर्शन	10.00
निरगुन का बिसराम	10.00
[illegible]	10.00

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,New Delhi. Digitized by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education, Bantalab Jammu

दरिया झूठ सो झूठ है	10.00	चण्डीपाठ	12.00
जात हमारी ब्रह्म है	10.00	दुर्गासप्तशती	12.00
सुखिया सब संसार	10.00	आर्य पुष्पांजलि	12.00
दुखिया दास कबीर	10.00	ऋग्वेद	12.00
जित देखू तित तू	10.00	सामवेद	12.00
जोतहिं जोति समानी	10.00	यजुर्वेद	12.00
मन लागा यार फकीरी में	10.00	अथर्ववेद	12.00
कृष्ण गुरु भी सखा भी	10.00	उपनिषद-1	12.00
कृष्ण जिज्ञासा खोज उपलब्धि	10.00	उपनिषद-2	12.00
साक्षी कृष्ण और रासलीला	10.00	उपनिषद-3	12.00
कृष्ण : साधना रहित सिद्धि	10.00	चाणक्य नीति	12.00
कृष्ण और हसता हुआ धर्म	10.00	कौटिलीय अर्थशास्त्र	10.00
संभोग से समाधि की ओर		चाणक्य सूत्र	10.00
(1-4 प्रत्येक भाग)	12.00	मनुस्मृति	12.00
गुरु गोविन्द दोउ खड़े	10.00	विदुर नीति	12.00
हीरा पायो गांठ गठियायो	10.00	भर्तृहरी शतक	12.00
मेरे तो गिरधर गोपाल	10.00	अनेकता में एकता	10.00
राम नाम रस पीजै	10.00	रामलीला नाटक	25.00
राम नाम निज औषधि	10.00	वायु पुराण	10.00
दादू सहजै देखिए	10.00	भविष्य पुराण	10.00
नहीं जोग नहीं जाप	10.00	लिंग पुराण	10.00
तेरा साई तुज्झ में	10.00	पद्म पुराण	10.00
क्रान्तिसूत्र--साक्षी भाव	12.00	वराह पुराण	10.00
भारत एक अनूठी सम्पदा	12.00	कूर्म पुराण	10.00
उपनिषद—शून्य संवाद	12.00	ब्रह्म पुराण	10.00
एक साधै सब सधै	12.00	मार्कण्डय पुराण	10.00
एकमात्र उपाय—जागो	12.00	मत्स्य पुराण	10.00
नारद भक्ति सूत्र		गरुड़ पुराण	10.00
5 भाग प्रत्येक	12.00	ब्रह्मवैवर्त पुराण	10.00
गीता दर्शन 4 भाग प्रत्येक	12.00	ब्रह्माण्ड पुराण	10.00
		अग्नि पुराण	10.00
धार्मिक सीरीज		स्कन्द पुराण	10.00
		नारद पुराण	10.00
गणेश पुराण	12.00	श्री विष्णु पुराण	12.00
वेदान्त दर्शन	12.00	श्रीमद् भागवत पुराण	10.00
मीमांसा दर्शन	12.00	श्री देवी भागवत पुराण	10.00
कार्तिक माहात्म्य	12.00		

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-C

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्री शिव पुराण	10.00
कल्कि पुराण	10.00
हरिवंश पुराण	10.00
नवग्रह उपासना	10.00
हनुमान उपासना	10.00
लक्ष्मी उपासना	10.00
सरस्वती उपासना	10.00
काली उपासना	10.00
विष्णु उपासना	10.00
रुद्राक्ष उपासना	10.00
गायत्री उपासना	10.00
शिव उपासना	10.00
भैरव उपासना	10.00
गणेश उपासना	10.00
दुर्गा उपासना	10.00
शनि उपासना	12.00
सुख सागर	20.00
भारत के प्रमुख तीर्थ	10.00
प्रभु मिलन का मार्ग	10.00
जैकारा शेरांवाली का	10.00
व्रत पर्व और त्यौहार	6.00
रामायण	12-00
वाल्मीकि रामायण	10.00
महाभारत	12.00
सिखों के दस गुरु	20.00
श्रीमद् भागवत गीता	10.00
शिरडी के साईं बाबा	12.00
कथा सरित सागर	15.00
योग वाशिष्ठ	20-00
अष्टावक्र गीता	10.00
साधुनेश में एक पथिक	12.00
यार्थ दर्शन	12.00
चार संचय	12.00
ह भी समझो	12.00

रामायण के अमर पात्र

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम	12.00
पवनपुत्र हनुमान	12.00
कर्त्तव्यनिष्ठ लक्ष्मण	12.00
महाबली रावण	12.00
महासती सीता	12.00
त्यागमूर्ति भरत	12.00
शांत उर्मिला	12.00
महाराजा जनक	12.00
महाराजा दशरथ	12.00
लंकेश विभीषण	12.00
गुरु वशिष्ठ	12.00
माता कैकेयी	12.00
मांडवी	12.00

महाभारत के अमर पात्र

महासती गांधारी	12.00
वीरवर कर्ण	10.00
कर्त्तव्यनिष्ठ कुंती	10.00
धर्मराज युधिष्ठिर	10.00
गाण्डीवधारी अर्जुन	10.00
पितामह भीष्म	10.00
आस्थावती द्रौपदी	10.00
शकुनि	10.00
नीतिज्ञ विदुर	10.00
आस्थानिष्ठ एकलव्य	10.00
महाबली भीम	10.00
योगीराज कृष्ण	10.00
महाराजा धृतराष्ट्र	10.00
द्रुपद	10.00
दुर्योधन	10.00
आचार्य द्रोण	10.00

राधा कृष्ण श्रीमाली (ज्योतिष)

शरीर सर्वांग लक्षण	12.00
प्रश्न ज्योतिष	10.00
तमल विज्ञान	10.00

0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंक ज्योतिष	12.00
मंत्र रहस्य	6.00
भृगु संहिता	25.00
मंत्र शक्ति से रोग निवारण	12.00
मंत्र शक्ति	10.00
तंत्र शक्ति	6.00
तंत्र शक्ति साधना और सैक्स	10.00
स्वप्न ज्योतिष	10.00
रमल विज्ञान	10.00
ग्रहगोचर	10.00
वृहद हस्त रेखा	12.00
यंत्र शक्ति	10.00
भारतीय ज्योतिष	12.00
ज्योतिष और रत्न	12.00
ज्योतिष सीखिये	12.00
दशाफल दर्पण	10.00
स्तोत्र शक्ति	10.00
मंत्र शक्ति से कामना सिद्धि	10.00

कीरो

कीरो हस्त रेखाएं	15.00
कीरो अंक विज्ञान	12.00
कीरो नक्षत्र विज्ञान	12.00

उर्मिला शर्मा

ज्योतिष और पति पत्नी का चुनाव	12.00

योगाचार्य भगवान देव

सरल योग शिक्षा	12.00
योग स्त्रियों के लिये	12.00
योग पुरुषों के लिये	12.00
योगासन व स्वास्थ्य	12.00
प्राणायाम कुंडिलिनी हठयोग	12.00
योग से रोग निवारण	12.00
योग और सैक्स	12.00

महिलापयोगी पुस्तकें

घरेलू इलाज	12.00
प्राथमिक चिकित्सा	12.00
बेबी हैल्थ गाइड	10.00
गर्भवती व शिशुपालन	10.00
लेडीज हैल्थ गाइड	8.00
मोटापा घटाएं, कद लम्बा करें	10.00
डायमंड ब्यूटी गाइड	12.00
अचार, मुरब्बे चटनी	10.00
डायमंड कुकरी गाइड	12.00

जीवनोपयोगी

आजादी के तराने	10.00
1991 में आपका भविष्य	12.00
जातक कथाएं-1	10.00
जातक कथाएं-2	10.00
मोहिनी विद्या, साधना और सिद्धि	10.00
डायमंड इंगलिश स्पीकिंग कोर्स	32.00
डायमंड लैटर ड्राफ्टिंग कोर्स	25.00
डायमंड हिन्दी लर्निंग कोर्स	12.00
30 दिन में अंग्रेजी बोलिए	10.00
हिन्दी इंगलिश बोलचाल	10.00
हिन्दी इंगलिस टीचर	10.00
डायमंड नालिज गाइड	15.00
सार्थक और सुखी बुढ़ापे की ओर	10.00
घरेलू बागवानी	6.00
अमृत वाणी	12.00
फर्स्ट एड	6.00
पंचतंत्र	10.00
हितोपदेश	10.00
हिप्नोटिज्म	12.00
क्रोध और अहंकार से कैसे बचें	10.00
शराब, सिगरेट बीड़ी कैसे छोड़ें	6.00

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमपत्र	10.00
पहेलियां ही पहेलियां	10.00
सिंहासन बत्तीसी	10.00
घाघ और भड्डरी की कहावतें	10.00
सुमन संचय	10.00
नामकोश (बच्चों के नाम)	6.00

जीवनी माला

1857 का स्वतंत्रता संग्राम	12.00
भारत का स्वाधीनता संग्राम	12.00
स्वामी विवेकानन्द	12.00
स्वामी रामतीर्थ	12.00
तांत्या टोपे	12.00
डॉ० भीमराव अम्बेडकर	12.00
गोविन्द बल्लभ पंत	12.00
नेलसन मंडेला	12.00
महामात्य चाणक्य	12.00
डा० राजेन्द्र प्रसाद	12.00
नाना साहब पेशवा	12.00
अशफाक उल्लाखां	12.00
मदनलाल ढींगरा	12.00
लोकमान्य तिलक	12.00
सरदार पटेल	12.00
स्वामी दयानन्द और उनके अनुयायी	6.00
गोपाल कृष्ण गोखले	10.00
मदन मोहन मालवीय	12.00
महर्षि विश्वामित्र	12.00
गणेश शंकर विद्यार्थी	12.00
स्वामी श्रद्धानन्द	12.00
मा पुरुष नेहरू	10.00
महात्मा गांधी	10.00
झांसी की रानी लक्ष्मीबाई	10.00
खानशाह खान	10.00
भूमाता इन्दिरा गांधी	6.00
वीर सावरकर	10.00
राजीव गांधी	6.00
अमर शहीद भगत सिंह	10.00
चन्द्रशेखर आजाद	10.00
लाला लाजपत राय	10.00
राम प्रसाद बिस्मिल	10.00
छत्रपति शिवाजी	10.00
महाराणा प्रताप	10.00
सुभाष चन्द्र बोस	10.00
मदर टेरेसा	10.00
इन्दिरा गांधी ने कहा था	12.00
भारत के अमर क्रान्तिकारी	10.00

स्वेट मार्डेन

अपने आपको पहचानिये	12.00
अवसर बीता जाए	12.00
उन्नति की राहें	12.00
सफलता की कुंजी	12.00
विकास का पथ	12.00
सफलता के सोपान	12.00
चिंता छोड़ो सुख से जियो	10.00
हंसते-हंसते कैसे जियें	10.00
आप क्या नहीं कर सकते ?	10.00
सफलता का रहस्य	10.00
आगे बढ़ो	12.00

तकनीकी

कार ड्राइविंग	10.00
टेलीविजन सर्विसिंग गाइड	10.00
केलकुलेटर कम्प्यूटर गाइड	10.00
ट्रांजिस्टर सर्विसिंग	10.00
रिकार्ड प्लेयर सर्विसिंग	10.00
एयर कन्डीशन सर्विसिंग	10.00
कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग कोर्स	12.00
डायमण्ड कम्पलीट फोटोग्राफी	12.00
रेडियो रिपेयरिंग गाइड	10.00
टेपरिकार्डर सर्विसिंग	12.00

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वीडियो सर्विसिंग	10.00
रेडियो सर्विसिंग	10.00
स्कूटर ड्राइविंग कैसे सीखें	10.00
स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज	25.00
कम्प्यूटर सर्विसिंग	12.00

डा० सतीश गोयल (सैक्स)

सैक्स और पति पत्नी	10.00
यौन रोग कारण, निवारण	10.00
मेडिकल सैक्स गाइड	10.00
वृहद् वात्सायन काम सूत्र	12.00
सैक्स शक्ति कैसे बढ़ायें	12.00
सैक्स और स्त्री पुरुष	10.00
सैक्स समस्याएं और समाधान	12.00
सैक्स के 101 सवाल	12.00

स्वास्थ्य

स्वस्थ कैसे रहें	15.00
स्वास्थ्य संजीवनी	12.00
प्राकृतिक चिकित्सा	6.00
होम्योपैथिक गाइड	12.00
मधुमेह : कारण, इलाज	6.00
कैंसर : कारण, इलाज	6.00
ब्लड प्रैशर : कारण, इलाज	6.00
हार्ट अटैक : कारण, इलाज	6.00

खेलकूद सीरीज

खेल खिलाड़ी विश्वकोश	20.00
विभिन्न खेलों के नियम	10.00
कपिल देव	10.00
क्रिकेट कैसे खेलें	10.00
तैराकी कैसे सीखें	6.00
क्रिकेट वर्ल्ड कप	10.00
आधुनिक मल्लयुद्ध	10.00
शारीरिक प्रशिक्षण पी. टी. एवं ड्रिल गाइड	6.00

जूडो, कराटे, बाक्सिंग व कुंगफू	12.00
सुनील गावस्कर	10.00
क्रिकेट प्रश्नोतरी	15.00

उर्दू हिन्दी शायरी

दीवाने गालिब	10.00
उर्दू की बेहतरीन नज्में	5.00
उर्दू के उस्ताद शायरों की गजलें	10.00
उर्दू के बेहतरीन शेर	12.00
तुम्हें मेरी कसम	6.00
पंकज उदास की गजलें	12.00
अनूप जलोटा के भजन और गजलें	12.00
गुलाम अली की गजलें	10 00
जगजीत चित्रा की गजलें	6.00
मेहदी हसन की गजलें	12.00
उर्दू की आधुनिक गजलें	12.00
हिंदी की सर्वश्रेष्ठ गजलें	6.00
हिंदी रुबाइयां और मुक्तक	5.00
उर्दू की बेहतरीन रुबाइयां	5.00
सन्नाटे में गूंज	6.00

काका हाथरसी

काका की आत्मकथा	12.00
काका के प्रहसन	12.00
काका काकी के लव लैटर्स	12.00
काका तरंग	12.00
काका के चुटकले	12.00
काका की महफिल	12.00
हंसी के गुब्बारे	10.00
काका की फुलझड़ियां	6.00
काका की चौपाल	6.00
काका काकी की नोंक झोंक	6.00
मीठी-मीठी हंसाइयां	6.00
काका की विशिष्ट रचनायें	6.00

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-G

CC-0. Gurukul Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काका के कारनामे	5.00
काका का दरबार	6.00
हसंत बसंत	5.00
जय बोलो बेईमान की	6.00
यार सप्तक	12.00

जोक्स सीरीज

पार्टी जोक्स	8.00
काका के चुटकुले	12.00
शेख चिल्ली के लतीफे	12.00
पति पत्नी के जोक्स	8.00
हुल्लड़ के जोक्स	5.00
टॉप जोक्स	8.00
माडर्न जोक्स	8.00
फिल्मी जोक्स	8.00
मिडनाइट जोक्स	8.00
चुटकले ही चुटकले	8.00
प्रेमी प्रेमिकाओं के जोक्स	8.00
अकबर बीरबल विनोद	10.00
तेलालीराम की सूझबूझ	12.00

हास्य कविता सीरीज

1990 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	10.00
1988 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	6.00
1985 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	6.00
1984 की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	12.00

फक्कड़ मुरादाबादी

फक्कड़ की फुलझड़ियां	5.00

हुल्लड़ मुरादाबादी

हुल्लड़ के कहकहे	5.00
हुल्लड़ मुरादाबादी की श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य रचनाएं	5.00

प्रेम किशोर पटाखा

पटाखे ही पटाखे	6.00

अशोक चक्रधर

चुटपुटकले	12.00
तमाशा	12.00
भोले भाले	5.00

फिल्मी गीतमाला

हिट फिल्मी गीत 1-5 (प्रत्येक भाग)	15.00
मुकेश के दर्द भरे नग्मे	8.00
साहिर के हिट गीत	6.00
दर्द भरे फिल्मी गीत	6.00
किशोर के दर्द भरे फिल्मी नग्मे	8.00
किशोर के नग्मे	8.00
हिट फिल्मी गीत और उनकी स्वर लिपि	20.00
रफी के नग्मे	8.00
रफी के दर्द भरे नग्मे	8.00
मुकेश के नग्मे	8.00
लता के दर्द भरे फिल्मी नग्मे	8.00
लता के नग्मे	8.00
फिल्मी राष्ट्रीय गीत	6.00
फिल्मी भक्ति गीत	6.00
भूले बिसरे फिल्मी गीत	6.00
फिल्मी गजलें	6.00
हेमन्त मन्नाडे के हिट फिल्मी नग्मे	6.00
आशा भौंसले के हिट "	6.00
महेन्द्र कपूर के नग्मे	6.00
फिल्मी कव्वालियां	6.00

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri. Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

हास्य व्यंग्य पाकेट बुक्स (प्रा०) लि० 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डायमंड पाकेट बुक्स में

डायमंड शाश्वत कथामाला रामायण के अमर पात्र

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का जीवन-चरित्र हमें प्रेरणा देने वाला एक ऐसा पावन चरित्र है जिन्होंने हर प्रकार के कष्ट सहकर भी किसी भी कीमत पर मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया।उनके जीवन को उपन्यास की शैली में प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है , और हमें विश्वास है पाठक न केवल उनके चरित्र से प्रेरणा लेंगे बल्कि उनके आदर्शों का वरण करके अपना जीवन सफल बनायेंगे।

प्रस्तुति : डा. विनय व डा. अश्विनी पाराशर

रामायण के अन्य अमर पात्रों के जीवन-चरित्र

वन पुत्र हनुमान	12.00	महाबली रावण	12.00	गुरु वशिष्ठ	12.00	महाराजा दशरथ	12.00
र्तव्यनिष्ठ लक्ष्मण	12.00	त्यागमूर्ति भरत	12.00	माण्डवी	12.00	महाराजा जनक	12.00
हासती सीता	12.00	शांत उर्मिला	12.00	कैकयी	12.00	विभीषण	12.00

महाभारत के पात्र

योगीराज कृष्ण	10.00
गाण्डीवधारी अर्जुन	10.00
आस्थावती द्रौपदी	10.00
पितामह भीष्म	10.00
वीरवर कर्ण	10.00
धर्मराज युधिष्ठिर	10.00
नीतिज्ञ विदुर	10.00
महाराजा धृतराष्ट्र	10.00
वीर अभिमन्यु	12.00
महासती गांधारी	12.00
महावीर अश्वत्थामा	12.00
कर्तव्यनिष्ठ कुन्ती	10.00
शकुनि	10.00

आस्थानिष्ठ एकलव्य	12.00
महाबली भीम	10.00
द्रुपद	10.00
दुर्योधन	10.00
आचार्य द्रोण	10.00

संस्कृत के ग्रन्थ

वेणी संहार	12.00
शिवराज विजय	12.00
किरातार्जुनीय	12.00
मृच्छकटिकम्	10.00
कादम्बरी	10.00
नलदमयन्ती (नैषधचरितम्)	10.00
मुद्राराक्षस	12.00
हर्षचरित	12.00

देवकीनन्दन खत्री

चन्द्रकांता	15.00
चन्द्रकांता सन्तति I	15.00
चन्द्रकांता सन्तति II	15.00
चन्द्रकांता सन्तति III	15.00
चन्द्रकांता सन्तति IV	15.00
चन्द्रकांता सन्तति V	15.00
चन्द्रकांता सन्तति VI	15.00

जीवनी माला

स्वामी रामतीर्थ	12.00
स्वामी विवेकानन्द	15.00
सरदार वल्लभ भाई पटेल	12.00
गोविन्द वल्लभ पंत	12.00
नेलसन मंडेला	12.00
नाना साहब पेशवा	12.00
डा. राजेन्द्र प्रसाद	12.00
अशफाक उल्ला खां	12.00
मदनलाल ढींगरा	10.00
लोकमान्य तिलक	10.00

तात्याटोपे	12.00
भारत के अमर क्रांतिकारी	10.00
स्वामी दयानन्द और उनके अनुयायी	6.00
डा. भीमराव अम्बेडकर	12.00
गोपाल कृष्ण गोखले	12.00
मदन मोहन मालवीय	12.00
महर्षि विश्वमित्र	12.00
गणेश शंकर विद्यार्थी	12.00
स्वामी श्रद्धानन्द	12.00
युग पुरुष नेहरू	12.00
महात्मा गांधी	10.00
झांसी की रानी लक्ष्मी बाई	10.00
बादशाह खान	10.00
राष्ट्रमाता इंदिरा गांधी	6.00
वीर सावरकर	10.00
अमर शहीद भगत सिंह	10.00
चन्द्रशेखर आज़ाद	10.00
लाला लाजपत राय	10.00
राम प्रसाद बिस्मिल	10.00
छत्रपति शिवाजी	10.00
महाराणा प्रताप	10.00
सुभाष चन्द्र बोस	12.00
मंदर टेरेसा	10.00
1857 का स्वतंत्रता उद्यम	12.00

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

कोई सी चार पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर उपकार होगा।

आर्डर के साथ पूरा मूल्य एडवांस में आना आवश्यक है तभी डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी।

डायमंड पाकेट बुक्स प्रा.लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
A.H.W.
Sameer Series

काका के प्रहसन

डायमंड पाकेट बुक्स

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra